

प्रस्तावना.

प्रिय विज्ञ पाठक वृन्द :—

लिखते द्रुपे मुझे अत्यानन्द होता है की, श्री महावीर प्रथमालके यह अरु सजधरके साथ लुप्त प्राय विद्याओंका और ओषधियोंका बड़ीही खोजके और परिश्रमके साथ पुन प्रचार किया जा रहा है.

यद्यपि इस बीसमींशदीमें अधिकांश महानुभावोंका इतना विश्वास इन विद्याओंपर नहीं रहा है और वे इस विषयमें अनेक प्रकारकी शक्यें किया करते है लेकिन इस साम्प्रतिक कालमेंभी यह विद्याएँ पहिले जितनीही सिद्ध और कार्यकारिणी हो सकती है वशीर्तकी यथाविधी दृढ विश्वासपूर्वक इनकी साधना की जावे। क्योंकि " विश्वासो फलदायक " इस न्यायानुसार विश्वासहीसे फलकी सिद्धि होती है उपेक्षा करणु ठीक नहीं हो सकता। अत इस विषयमें अत्र जादा न लिखकर आपके समक्ष जो लिखनेका है वही लिखा जा रहा है।

सिद्धविसाकल्पः—यह कल्प वही है का, जो श्रीपद्मावती देवीने महामहोपाया श्रीमेघविजयजी गणिको स्वप्नमें बताया था

देव्यापद्मावत्या स्वप्नकथित यंत्रस्याप्राहुर्बाहुवत्याद्याः मुनयः नयंकोविदाः

उसीको हमने ४५० यत्र प्रति कृती ओर करीबन ३५०० श्लोक मूल भाषातके साथ पाठकोंके सामने उपस्थित किया है उसके अंदर 'अहं' शब्दसे विसा मिस तारह बनता है वह बड़ीही सरल युक्ति योंसे समजाया गया है इस प्रथको देखकर पाठकोंसी यह शका निनष्ट होती है की विसा यत्र नव कोठें भी बनता है इस प्रथमे तिखुणा चौखुणा पद्माकार पचासोंही प्रकारके विसा सिद्ध करके दिख्य दिया है औकीक कहावत है की, " जिसके घर विज्ञा। उसका क्या करेगा जगदीश ॥ यह प्रथ बहोत उपादेय वा सम्राहणीय है यह यत्र राजदरबारमें निजय दिलाता है, वसीकरणमें इसका सानि दुसरा नहीं रखता व्यापारमें लाभ दिखानेमें इसके दगका यह एकही है, आरोग्यादी प्राप्तमें अपने जोड़का दुसरा नहीं रखना बन्नेखानेसे छुटकारा दिखानेमें यह अद्वितीय है, और दुखियोंका दुखको यह वीसा क्षणभरमें कापुर कर देता है इत्यादि—

नोट—आजकठ दुनियामे यत्रोमी हरिफाई बहुतसी चलती हे परतु हमारे भाईयोंको उसीका कुठ भी लाभ नहीं मिल सकता है इस लिये उनसे हमारा निवेदन है की इस प्रथको सप्रह करे ताकी इस प्रथके आधारसे कोईभी यत्रकी हरिफाई करनेमें ठीक पड़ेगा यह प्रथ यत्रोमी हरिफाईमें रामबाण है (मेघनिजयजी के हस्तलिखित प्रयोमी यादी ओर उनके समयका वर्णन अहंद् गांताप्रथके लेने)

गाहाजुअल स्तुतिः

वाचरने किया है दुसरी

श्री श्रीपादचित्तसूरीश्वरजी दीकाकार पूणप्रसा
ई आश्राय बहुत सरल है ईसमें

आजनीक हेमसिद्धि आदि गुणविचार है जो थोडासा भ्रम करनेपर सिद्ध हो सकती है स १३८० में जिनप्रभसूरिने अपने हातोसे टीका रची है और लिखी है वहभी समयपर छपाया जायगा पुस्तकोंकी प्रेस कोंपी तयार हो रही है

घावन तोला पावरती—यह कल्प उठी महात्माका बनाया हुआ है जो जिनोने सवालाल अजेनकों जैन बनाया था उही महामात्रा यहवल्प पाठकोंके सामने रखा जाता है नही श्रीदादाजी जिनदत्तसूरिभरजा महाराज जो दुर्गायामे धर्मार्थ काम और मोक्षके आले-दरजेके डॉक्टर या वेद कहे जाते है

धर्मके लिये बड़े बड़े प्रय निर्माण करगये है उदाहरणार्थ [उपदेशरसायन, कलिकोश, चरचरी इत्यादि] दुर्गायामें ३५ महान विमारी या [देहरोग] ३६ मी दरिद्रावस्था और ३७ मी मीत [कर्मरोग] है इमरूपकेद्वारा ३५ महानविमारी [देहरोग] और ३६ मी दरिद्रावस्था नष्ट होती है और मीत (कर्मरोग) के लिये उपदेश रसायन आदि प्रय मौजुद है

पाठकत्व—इसरूपको परीक्षा करदेख सकते है उस महात्माका निर्माण मि सन्त १०११-मे अजमेरमें हुआ है इससे समयका निर्णय की कल्पना हो सकती है

उग्ररीर कल्प—यहएक महात्माका अनुभूत किया हुआ कल्प है इसके नियमों अधिक तारीफ करना व्यर्थ होगी जबकि इसकी महत्ता इसमें नामसेही प्रकट होती है । इसकी साधनासे अनेकों प्रकारकी बाधाएँ और दरिद्रता देखतेही देखते नष्ट हो जाती है साधना बहुतही सरल है । पट प्रयोगोमे चलता है

चद्रकल्प—श्रीमान् जगनशेठजीका सिद्ध किया हुआ । यह चद्रकल्प बड़ीही खोज और परिश्रमसे जगनशेठकी उनपुस्तकोंमे प्राप्त हुआ है जिनका कि वे हमेशा अध्ययन किया करतेथे । इसकी दृढ विश्वासपूर्वक यथाविधी साधना करनेसे ६ महिनेमें चद्रका साक्षात्कार होता है यह लिखना कोई गउतपहमी नही होगी कि जगनशेठने इसकी साधनासेही अनुल यश प्राप्त किया था ।

हम अपने उत्तर दायित्व पूर्ण इतकार्यमें कहातक सफा हुए है इसका निर्णय विज्ञ पाठकोंपर ही निर्भर है ।

प्रसन्ने भूतोंकी टपामे यन्त्रि कहीं शुद्धाशुद्धीका नियम भग हुआ हो तो विज्ञ उमे सुधारकर पढ़ें ।

यह सिद्ध बिसाकप आदि ६ कल्प समाजमें गई लहर पैदा करही देगी यदि पाठकोने इसे अपनाया तो फीरसे मैं दुसरा प्रय लेकर उपस्थित होउगा एसी आशा है ।

नियेदन,
एम् के कोटेचा.

॥ श्रीरावण पार्श्वनाथस्तवम् पाठः ॥

श्रीपार्श्वः प्रकटः प्रभाकर इव प्राज्यप्रभावैभवा-
 तेजोनन्ततया जगत्त्रयमपिप्रोद्भासयनंजसा ॥
 श्रीमद्रावणनामतीर्थविषये ख्यातस्तमोनाशक ।
 स्तुत्यादर्शन निर्मलश्रियमयं पुष्पातु मे नित्यशः ॥ १ ॥

अर्थः-विशाल प्रभावना वैभवधी अनन्त तेजवडे त्रणे उद्भासन करता (प्रकट करता) अथा, तथा श्रीमद्गणेश रूपी अंधकारनो नाश करनारा अथा प्रकट सूर्यसरखा जे (अदले श्रीरावण पार्श्वनाथ), ते हमेशा मारी सम्यक्पुष्ट करो [वृद्धि पमाडो] ॥१॥

श्रीमद्रावणमासवत् त्रिजगतीसन्तापत्रिच्छिद्यं ।
 'प्रोन्नीताम्बुदगर्भे (वत्सव) देहविमलज्योतिः ॥
 यो वै रावण मेघवत्सितरुचिश्चिन्तामणी वायस्य ।
 लोकालोक नमो ददान विधिना जागर्तिमृत्प्राविशुः ॥ २ ॥

अर्थः-आकाशमां चढेला मेघना गर्भ सरखा अंशुना शरीरणी विष्णु
 पामेली निर्मल कांति वडे [अर्थात् मेघ सरकी कृष्ण कान्ति रडे] श्रीमद् (मेघ
 जलनी लक्ष्मी वाला) रावण मास सरखा जे 'पार्श्वनाथ' प्रण. जगनना स्वपाने
 नाश करनारा छे, तथा जे प्रभु वैरावण-मेघसाधी-कृष्ण कान्तिकाला छे,
 अथवा जे प्रभु मुख्य चिन्तामणी
 आलोकनधी [ज्ञानधी]
 जागृत छे-प्रकट छे [संबंध

यस्यश्रावणगोचरेपि विचरन्नामापिनिर्मापित ।

त्रैलोक्याद्भुतवैभवान्भवभृतां प्रोद्गावयेद्गावत ॥

स श्रीरावणनामधेय भगवान् पार्श्वं सदा सम्पदे ।

भूयाद्मगलमालिकाकमलिनी प्रोद्धासभानूदयः ॥ ३ ॥

अर्थः—तथा जे प्रभुनु नाम पण श्रावणना विषयमा वर्ततुं निर्माण छे [अर्थात् रहित करता रावण पार्श्वनाथ नाम धयेलु छे], तथा त्रणे लोकना अद्भुत वैभवधी प्राणीओने भावधी जे प्रभु ज्ञानादि वडे प्रगट करनारा [अर्थात् जीवोनी ज्ञानादिलक्ष्मीनो वैभव प्रगट करनारा] छे, ते मंगलीकनी माळा [मगळना समुह] स्पी कमलिनीने विकश्वर [प्रगट] करवामा सूर्योदय सरखा श्रीरावण पार्श्वनाथ नामना प्रभु हमेशां सपदानेमाटे धाओ ॥ ३ ॥

स्पष्टश्चाष्टम एव यः प्रतिहरिर्नाम्नातिघाम्नाहरि ।

पूर्वरावण एष ते चलनयो भक्ति प्रसक्तोभवत् ॥

ते न त्वत् प्रतिमासमान महिमा कैलाशशैलाशयात् ।

निन्येऽर्चारचनैः स्तत्रादि वचनैः स्वीयं पुर पावितुम् ॥ ४ ॥

अर्थ—स्पष्ट (प्रगट धयेला) अवे जे आठमोज प्रतिवासुदेव के जे पोतान नाम वडे अने अत्यत तेज वडे हरि=इन्द्र सरखोधयो ते रावण प्रति वासुदेवज प्रथम तारा ये चरण कमळनी भक्तीमा अत्यत लीन थयो, अने ते रावणेज तारी समान महिमावाळी [उत्तम महिमावाळी] प्रतिमा कैलाशपर्वतन स्थान उपरधी (अष्टापद पर्वत उपरधी) पुजा रचवा पुर्वक अने स्तुति विगेरेन वचनो सहीत (अर्थात् पुजा स्तुती करीने) पोतानु नगर पवित्र करवाने लह गयो [अर्थात् रावण पोताना नगरमां श्रीपार्श्व प्रभुनी प्रतिमा लाव्यो] ॥४

जानेतजनकात्मजाव्यतिकर प्रोद्भुयमानानया-

न्मत्वा त्व ननुभङ्गमेवभगवन्नेतत्स्थले तस्थिवान् ॥

भुविरावणाख्यनगरं तत्तेन सवासितम् ।

। श्वे चेन्द्रपथ सुतेन विहित तेनेन्द्रजिच्छर्मेणा ॥ ५ ॥

अर्थः—जाणे ते सीताना वृत्तान्तथी प्रगट थयेला अन्यायथी हे भगवन्
नेश्वय आ नगरनो भंगज थशे ओम जाणीने तमो ते स्थळे न रह्या, तेथी तेणे
वाने माटे पृथ्वीमां रावण नामनुं नगर वसाव्युं, अने तेनी पासे इन्द्रजीत
गमना पुत्रे पोताना कर्म वडे (पोतानी इच्छा वडे) इन्द्रप्रस्थ नामनुं नगर
साव्युं ॥ ५ ॥

तत्तीर्थं प्रथितं पुराणकथितं त्वत्संज्ञयैव प्रभो ।

लोकाभ्यर्थनयार्थसार्थयुगपदानेन देवार्चितम् ॥

श्रीवामेयममेयमेवभवताहुद्धिर्भवेत्सेवने ।

यस्याश्चक्रिरसा रसेन परमा वक्ष्याभवेदाभवम् ॥ ६ ॥

अर्थः—तेथी लोकनी प्रार्थना वडे लोकना वांछितार्थना समूहने सम-
हाळे-शीघ्र पूर्ण करवाथी हे प्रभु ! देवोने पण पूजनीक अेवुं ते नगर तारा
नामवडेज तीर्थ रूपे प्रसिद्ध थयुं, अने पुराणमां-शास्त्रमां पण तेनुं वर्णन
अवायुं अेवा तीर्थमां रहेला ते श्री वामेय=पार्श्व प्रभु के जे अमेय=अपार
महिमा वाळा छे तेमने सेववाथी बुद्धि=ज्ञान लक्ष्मी प्रगट थाय छे, तेमज
जे सेवा थी चक्रवर्तिनी पण उत्कृष्ट लक्ष्मी हर्ष सहित संपूर्ण भवपर्यन्त
पोताने वशवर्ती थाय छे. ॥ ६ ॥

त्वज्जन्मन्यमृतं जगत्समभवद्दुःखोपशान्तेर्जने ।

साकल्याणमयी तदामृतरसैः वृष्टिःसुरैर्निमिता ॥

विस्तीर्णं जिनशासनं तवगिरा यत्रामृतस्थापना ।

लोकेनामृतमस्ति तेनसुलभं देवप्रमादोदयात् ॥ ७ ॥

अर्थः—जे वखते हे प्रभु ! तमारो जन्म थयो त्यारे लोकमां दुःखनी शान्ति
पवाथी आ जगत अमृत (मरणादि दुःख रहित) थयुं ते वखते देवोअे
पण कल्याणकारी अेवी ते अमृत रसनी वृष्टि करी, तेमज तारुं विस्तीर्ण अेवुं
जिनशासन के जेमां त्हारी वाणी वडे अमृतनी स्थापना थयेली छे (अर्थात्
जिनशासनमां तारी वाणी रूप, सदा विद्यमान छे), तेथी लोकमां
हे देव ! प्रमादना सुलभ नथी (कारण के
सगळुं श्री जीनेन्द्रनी व. [तो लोकमां वीजे क्या मळे

ઇન્દ્રાસ્ત્વેજ્જનને જિનેન્દુસહસા સર્વેસમીયુર્ભુવિ ।
 વૈરસ્યાપિ વિહાય સર્વમસુરા વૈરસ્યમભ્યેયરુઃ ॥
 ઇન્દ્રૈરમિકુમારકાસુરગણૌ સત્રાભવત્સૌહદમ્ ।
 નક્ષત્રસ્યતતોજનેઽજનિકથા દેવદ્વિદૈવાલ્યયા ॥ ૮ ॥

અર્થ—હે શ્રી જિનચંદ્ર ! તારા જન્મ ચત્વરે સર્વે ઇન્દ્રો આ
 સહસા-શીઘ્ર આન્યા, તેમજ પોતાની ઘેરી દેવોની સાથેના વૈરનો ત્યાગ કરી
 સર્વે અસુરા=અસુરેન્દ્રો પણ આન્યા (સુર અને અસુરનો વૈર લોક પ્રસિદ્ધ
 તેથી એમ કહ્યું) તેમજ [લોક પ્રસિદ્ધ વૈરવાઝા એવા] ઇન્દ્રોને અને આ
 કુમારાદિ અસુર દેવોને પણ એક યાજ્ઞ સાથે 'પરસ્પર' મિત્રાઈ થઈ, તે
 દેવાધિદેવના નામથી લોકમા નક્ષત્રની કથા પ્રસિદ્ધ થઈ [આ કથા મ
 ઘટ્શ્રુતથી જાણવી] ॥ ૮ ॥

દ્રાગ્વિદ્રાવણમેતિમોહચરટ સ્તેવીક્ષણાત્તક્ષણાત્ ।
 નામશ્રાવણભાર્ગ્વસૌર્યકરણં તિશ્વેશિતસ્તાવકમ્ ॥
 શ્રીમદ્રાવણપાર્શ્વમેઘવિજયાજ્ઞોતિર્ભવન્મૂર્તિજા ।
 નિત્યાનન્દપદ દદાતુ વિશદ શૈવ ચ દૈવ શુભમ્ ॥ ૯ ॥

અર્થ—હે પ્રભુ ! તારા 'દર્શનથી' તંત્ક્ષણ-શીઘ્ર 'મોહ' રૂપી ચરટ-ચોર તુ
 વિનાશ પામે છે, હે! વિશ્વના-ઈશ ! તારા નામ સામઝ્યુ (તારા નામનુ શ્રવ
 તે) પણ ભાવસુગ્મને (મોક્ષસુગ્મને) કરનાર છે હે શ્રીમદ્ રાવણપાર્શ્વ પ્રભુ
 મેઘના વિજયથી ઉત્પન્ન થયેલી તારી મૂર્તિની જ્યોતિ' [મેઘને જિતના
 તારા શરીરની કાન્તિ અર્થવા શ્રી મેઘવિજયજી ઉપાધ્યાય જે આ સ્તોત્ર
 કરતા તેમનાથી સ્તુતિ કરાયલી તારા શરીરની કાન્તિ] તે નિર્મલ, ઉપદ્રવ-રહિ
 અને શુભદૈવરૂપ એવું નિત્યાનન્દપદ એટલે મોક્ષપદ આપો ॥ ૯ ॥

૧-ઙ્ઞાતિ શ્રીરાવણપાર્શ્વનાથ સ્તોત્રમ્ ॥

श्रीअर्जुनपताकारव्ये, विजयापर नामनि ।

स्यादर्ध ५ भू १ मितेयंत्रम्, मध्ये पंचप्रतिष्टया ॥ १ ॥

अर्थः—जेतुं बीजुं नाम विजययन्त्रं छे, अेवा अर्जुनपताका नामना यन्त्र-
मां [अर्ध=५ अने भू=१, अकोनां वामतो गतिः अे प्रमाणे] १५ प्रमाणनो
अेदले पंदरीयो यन्त्र मध्यखानामां ५ नो अंक स्थापवाथी थाय छे ॥ १ ॥

एवं यत्र त्रिभागासि - र्यन्त्राणि पूर्वसूरिभिः ।

सर्वाणि तानि फलदा - न्युक्तानि नव वेदमसु ॥ २ ॥

अर्थः—अे प्रमाणे ज्यां पूर्वाचार्योअे त्रीजा भागनी प्राप्तिवाळां यन्त्रो
दर्शाव्या छे, ते सर्वे यंत्रो नव गृहमां-खानामां स्थापय छे, अने ते सर्वे
फलदाता कछ्या छे ॥ २ ॥

पूर्वनैऋतिकोदीची - वायु मध्याऽग्निदक्षिणः !

ऐशानी पश्चिमा तासु, क्रमादंकनिवेशनम् ॥ ३ ॥

अर्थः—प्रथम पूर्वदिशामां, त्यारवाद नैऋत्यकोणमां उत्तरदिशामां वाय-
व्यकोणमां मध्यमां अग्निकोणमां दक्षिणदिशामां ईशानकोणमां अने
पश्चिमदिशामां अेप्रमाणे क्रमपूर्वक कहेली दिशाओमां अनुक्रमे अंक-
स्थापन करवुं ॥ ३ ॥ आ ९ खानावाळा कोठामां पंदरीयो यन्त्र करवानो
छे, तेथी उपर कछ्या प्रमाणे पंदरनो त्रीजो भाग ५, तेने प्रथम मध्य
खानामा स्थापवो. त्यारवाद अे ५ जता वधेला दशमांथी अेक अंक
न्यून करीने त्यारवाद अेकेक न्यून न्यून अक त्रीजा श्लोकमां कहेला
अनुक्रम प्रमाणे स्थापता पूर्वखानामा ९, नैऋत्य खानामां ८, उत्तर

१ दो अेदोहिं न दीजइ दीजइ छेकेण तह चउकेण । सत्तमितइएवचा नव पंचिकेणआगमण॥
=५ जे मध्यमां स्थापेल छे तेनी साथे २-८ स्थापता ६-४ स्थापता ७-३
स्थापता, अने ९-१ स्थापता पंदरीयो यंत्र छे. उपरनो पंदरीयो यत्र अे प्रमाणेज
बन्यो छे ते अनुक्रमे इशान नैऋत्य अग्नि ६-४, उत्तर दक्षिण ७-३
पश्चिम ९-१ अे क्रमयी मध्यगत

ईशान	पूर्व	दक्षिण
२	०	४
७	मध्य	३
६	१	८
वायु	पश्चिम	दक्षिण

१५ यत्रमिदम्

र	खं	मं
वृ	वृ	शु
घ	घ	के

४	९	२
३	५	७
८	१	६

१५ मध्यमगति
विशयत्रयं

ग्यानामा ७, वायव्य खानामा ६ मध्य खानामा ५ (नो अक तो प्रथमपी स्थापेलोज छे), अग्नि ग्यानामा ४, दक्षिणखानामा ३, इशान खानामा २, अने पश्चिम खानामा १, पुनः दिशिना फेरद्वारपी [जे खानामा जे अक आ यत्रमा आवेल छे ते प्रमाणे नहि आवता बीजी बीजी रीते] पण पदरीया यत्र अनेक घने छे जेम के-उपरना यत्रमा पूर्वदिशिने उर्ध्व स्थापी छे, तेने बदले जमणी बाजूमा स्थापीजे तो बीजी रीते पण पदरीयो यन्त्र थाप ते आ प्रमाणे-

क	उ	द
६	७	२
१	५	९
८	३	४
३	६	७

जे रीते दिशिस्थापनना फेरफारपी जेम आ बीजो पदरीयो यत्र घने तेवी रीते मध्यखानु वर्जनि शेष ८ खानामा ९ ना अकने फेरुता आठ प्रकारना पदरीया यत्र घनी शके छे, परन्तु मध्यग्यानामा नवनो अक राग्नीने पदरीयो यत्र घनी शके नहि

कमाद्कोल्लघनेऽपाच्या - मेकेऽधिके धृते भवेत् ।

रस ६ भू १ यत्रनिष्पत्ति, एवमेकोनविंशति. ॥ ४ ॥

अर्थ:-पदरीयामा जे अनुक्रमे अंक स्थाप्या छे तेनु उल्लघन [ते कामनु उल्लघन] करिने जो दक्षिणादिशापी प्रारम्भिने तेज क्रमपी अकेक अक अक स्थापता जईजे तो (रस = ६ भू = १) रसभू अदले * १६ ना

यत्रनी उत्पात्ति धाय छे, अने अेज प्रमाणे १९ नो यत्र पण बने छे ॥४॥

वायावेकेधिकेतद्वत्, मुनिभू १७ यंत्र निर्मितिः ।

एवद्वयेधिके विश - त्यादि यंत्रं प्रसाध्यते ॥ ५ ॥

अर्थः-तेनी पेठे [१६ ना यत्रनी पेठे] वायुकोणमां [वायु-मध्य-अग्निमां] १ अधिक कर्याथी [मुनि ७ भू १ अट्टे] १७ ना अकनो यंत्र धाय छे, अने अे प्रमाणे वे अधिक [तथा अेक] कर्याथी २० विगरेनो यत्रो बने छे ॥ ५ ॥

दश१० द्व्य२ पृ८ चतु४ सप्त७ - नव९ पद्भू६ पव५ शिवाः११ ।

त्रयचेत्यंक राजीस्यात्, साकस्माद्विंशयंत्रके ॥ ६ ॥

अर्थः-१०-२-८-४-७-९-६*-५-११ अे अंकश्रेणि जे २० ना यत्रमां आवे छे ते शा माटे ? -इति प्रश्नः- ॥ ६ ॥

तत्रोत्तरं नवस्थान्यां, शकुनार्थगृहस्थितौ ।

भानुर्दशशतार्चिष्मान्, आदाबुधोदिगं १० शतं ॥ ७ ॥

* ६.

१
२

३	९	४
७	५	४
६	२	८

द.

३	९	५
७	६	४
७	२	८

प.

१६ यन्त्रम्

१७ यन्त्रम्

स्ता १७ नो यत्र अे प्रमाणे थयो, १९-२० नो यत्र आगळ कहेवाशे.

* ३ नो अक पण आवे छे.

१ २० नो यंत्र-

अहिं यंत्रमा ५-६ अक छे
आगळ कहेवाशे.

१०	२	८
२	सौ	म
४	७	९
५	५	५
५-६	११	३
५	म	३

५	५	१०
६	५	१०
११	७	६
३	९	३

અર્થ-ઉત્તર-એ પ્રક્ષનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે-ગ્રહસ્થાનોમાં રહેલા અર્ધાનુ
 નવ સ્થાનોમા રહેલા નવ ગ્રહો ઉપરથી શકુન (શુભાશુભફલ) દેખવાને
 અર્થ-જાણવાને અર્થ નવ સ્થાનોમા એ નવ અક સ્થપાય છે ત્યા પ્રથમ
 ૧૦ નો અક સ્થાપવાનુ કારણકે-સૂર્યગ્રહ ૪જાર કિરણવાડો છે, અને
 પહેલી રાશિમા [મેષ રાશિમા] દિગ્=૧૦ અશ જેટલો હોય ત્યાસુધી
 અતિ ઉચ ગણાય છે, માટે ૯ ગ્નાવાલા યત્રમા પ્રથમ ૧૦ નો અક
 સ્થપાય છે ॥ ૭ ॥

ઉત્તરાયણત પૂર્વો - ત્તરયોરતરેસ્થિત' ।

શ્રેષ્ઠોદિગર્ક યોગોસ્માત્, ઇકોને નવમોપિચ ॥ ૮ ॥

અર્થ-વહી તે સૂર્ય ઉત્તરાયણથી (ઉત્તરાયણમા ઘર્તતો હોય ત્યારે)
 પૂર્વ અને ઉત્તર દિશાના આતરામાં (દ્વિશાનકોણમા) રહેલો [ઉગતો]
 હોય છે તેથી (દિગ્=૧૦ અર્ક=સૂર્ય એટલે) સૂર્યનો ૧૦ અશવાલો યોગ
 શ્રેષ્ઠ કહ્યો છે, અને તેથી ૧૦ નો અંક દ્વિશાન કોણમા સ્થપાય છે અને
 તેમાથી ૧ ન્યૂન કરતા નવમો સૂર્યયોગ પણ શ્રેષ્ઠ ગણ્યો છે ॥ ૮ ॥

ચદ્ર પ્રાચ્યા વૃષેપ્યુદ્ધૌ, દ્વિકેવારો દ્વિતીયેક' ।

અશેડ્ત્યુદ્ધઃ કૃષ્ણપક્ષ - હાન્યા ચૈકોન ભાવતઃ ॥ ૯ ॥

અર્થ-ચદ્ર પૂર્વ દિશામા ઉદય પામે છે, અને ધીજી વૃષભરાશિમા તે
 અતિ ઉચ ગણાય છે, તે ઘ્રણ અશ સુધી અતિ ઉચ ગણાય છે, જેથી એ
 અશમા ઘર્તતો પણ ઉચ ગણાય, તેમજ ચદ્રનો વાર (સોમવાર) પણ
 સૂર્યવારથી [રવીવારથી] ધીજો છે, પુનઃ ઘ્રણ અશની ઉચતામાથી અર્હિ
 એ અશની ઉચતાગણી તે કૃષ્ણપક્ષમા હાનિ પામવાથી અર્હિ અશમા પણ
 એકની ન્યૂનતા ગણીને એ અશનો ઉચ ગણ્યો, જેથી દશના અક પછી
 ધીજો ૨ નો અક સ્થાપ્યો ॥ ૯ ॥

અગારકસ્તથાગ્નેય્યા, નવાર્ચિષ્માન્ સ ચકરુઃ ।

તદેકોનેસ્થિતોડષ્ટાકે, દશાતોડ્સ્યાષ્ટવાર્ષિકા ॥ ૧૦ ॥

ગ્રહ અગ્નિકોણમા રહે છે, અને નવ અર્ચિ ૮ નવ

जीव्हा] वाळो तथा मुक्त्ररोग-वाळो-गणाय छे, अथवा वक्त्री होय त्यारे रोग, फळने आपनारो छे, ते नवमांधी अंक-न्यून करता ८ अकमां रहेलो गणाय, अने ते कारणथी अ मंगळनी दशा पण ८ वर्षनी छे. ॥ १० ॥

पतिरंष्टमराशेश्च, सिद्धैकोनांक ९ पादवान् ।

आगामिराशिफलदो, भवेदष्ट दिनांतरे ॥ ११-॥

अर्थ:-वळी अ मंगळ ग्रह आठमी-राशिनो (वृश्चिक राशिनो) पति छे, तेथी (१-अंक-न्यून अंक अटले) ८ पादवाळो सिद्धिने अर्थ छे, तेमज ८ दिवसने आतरे (८-दिवस-वाद) आगामी राशिनुं (वृश्चिक राशि पत्नी आवती धनराशिनुं) फळ आपवा वाळो छे [माटे वीसना यत्रमां ये पछी-८ नो अंक स्थापय छे. ॥ ११ ॥

पंचार्चिष्मान् बुधोवक्र - भावादेकोनतः कृते ।

दशासप्तदशाद्वास्याऽ - कर्भागे शेषमाशुगाः ॥ १२-॥

अर्थ:-पाच अर्चिवाळो [पांच जीभवाळो] छे, अने ते वक्रभाव वाळो [वक्त्री] होवाथी ४ प्राप्त थया वळी अनी १७ वर्षनी दशा छे, तेने [अर्क-वडे =] चार वडे भागतां शेष [आशुग-वाण अटले] पांच रह्या ॥ १२ ॥

तत्राप्येकोनतायां स्यात्, द्विगुणश्चन्द्रतो बुधः ।

अष्टस्थानाक्षरास्याद्द्विः - पतिस्तस्या बृहस्पतिः ॥ १३ ॥

अर्थ:-ते पाचमांधी पण अंक न्यून करतां ४ रह्या, जेथी चंद्रथी बुध द्विगुण थयो. [कारणके पूर्वं चंद्रमाटे २ नो अंक छे अने अर्हि बुध माटे ४ नो अंक थयो तेथी द्विगुणथयो], माटे विशतियत्रमां ४ नो अंक स्थापय छे तथा गीः=वाणी-सरस्वती आठ स्थानना अक्षरवाळी (कंठ्य-म्यानादि आठ स्थानथी अक्षरोचार गण्या छे माटे आठ स्थान वाळी) कही छे, अने ते गी [=वाणी पति गिष्पति=बृहस्पति छे] ॥ १३ ॥

अष्टबुद्धेर्गुणस्तद्वान्, १५

वक्रत्वादेकहीनत्वे, १६

गुरुः ।

सप्तपात्-॥ १४ ॥

અર્થ-ચુદ્વિના ૮ ગુણ વાઙ્મો ગુરુ છે, પરતુ વક્રપણાથી [ગુરુગ્રમી હોવાથી] એક ન્યૂન કરતા ૭ રણા, તે માથ અંશમા વર્તતો ગુરુ મધ્યમ ગણાય છે, [અર્થાત્ ગુરુ કર્કરાશિનો ૫ અંશ ચુધી વર્તતો હોય ત્યારે અતિ રહ ગણાય છે, અને તે ઉપરાન્ત છ સાત આદિ અંશમા વર્તતો મધ્યમ ગણાય છે], તેમજ સિદ્ધ છાયાવહે પ્રાત્ત ધપેલા ૭ ના અકથી ગુરુસ્વામી વિંશતિયત્રમા કાઠો છે ॥ ૧૪ ॥

દશાસ્થૈકોનવિંશાદ્વાઽ - કં ૧૨ ભાગેશોપસત્તકાત્ ।

વાગિન્દ્રિયસત્તમત-ત્સ્વામી સત્તકાન્ ગુરુઃ ॥ ૧૫ ॥

અર્થ-વઙ્મો એ ગુરુની દશા ૧૧ વર્ષની છે, તેને અર્ક-સૂર્ય એટલે ઘાર વહે ભાગતા શોષ ૭ રહેવાથી, તેમજ વચનેન્દ્રિય [૧૦ કર્મેન્દ્રિય જ્ઞાનેન્દ્રિયમા] વચનેન્દ્રિય સાતમો છે, તેનો સ્વામી ગુરુ છે, માટે ગુરુ વિંશતિયત્રમા ૭ ના અકવાઙ્મો છે ॥ ૧૫ ॥

અશ્વિન્યાદશમપૈત્ર, તજ્ઞાતત્વાત્કવેદશ ।

નવવક્રૈરુહીનત્પે, નનાહ પશ્ચિમાસ્તત ॥ ૧૬ ॥

અર્થ-અશ્વિની નક્ષત્રથી દશમ પૈત્ર [મયા] નક્ષત્ર છે, તે દશમા પૈત્ર નક્ષત્રમા જન્મ થવાથી અને વક્રીહોવાથી એક અંક ન્યૂન કરતા શુક્રનો વિંશતિયત્રમા ૯ નો અક છે તેમજ પશ્ચિમ વિશામા નવ દિવસ વર્તતો હોવાથી નવ અક શુક્રના સ્થાપના કરેલા છે ॥ ૧૬ ॥

દશૈકવિંશત્યદ્વા - સ્યાદકોને નવશેપત ।

સિદ્ધસાર્થાષ્ટપાદેષુ, રાશિમધ્યફલાગમૂ ॥ ૧૭ ॥

અર્થ-તથા શુક્રની દશા એકવીસ વર્ષની છે, તેને સૂર્યના ઘાર અંકવહે યાદ કરતા (અથવા ભાગતા) ૯ શોષ રહેવાથી, તથા પોતાની રાશિમા પાદોમા વર્તતો શુક્ર મધ્યફળવાઙ્મો હોવાથી (સાઠા આઠ તે નવમાનો અક છે માટે) શુક્રનો ૯ નો અક વિંશતિયત્રમા સ્થપાય છે ॥ ૧૭ ॥

कविसार्धाष्टमासान्प्राग्, प्रतीच्यां नवमासभुक् ।

सप्तार्चिष्मान्शनिर्वक्र - भावात्पद्वैकहानितः ॥ १८ ॥

अर्थः—शुक्र पूर्व दिशामा साढा आठ मास अने पश्चिम दिशामां ९ मास भुक्त होय छे, (भोगी होय छे), ते कारणधी शुक्रनो ९ नो अंक विंशतिपत्रमां होय छे तथा शनि सात अर्चि [७ जिब्हा] वाळो छे, अने ते वक्री होवाधी अेक बाद करतां ६ ना अकवाळो गणाय छे ॥ १८ ॥

पन्मासानातिचरेत, फलदद्यात्ताथग्रिम ।

वक्रत्वेषचमास्यस्य, युगान्निभूदिनोऽशक्तितः ॥ १९ ॥

अर्थ—तथा शनि ६ मास अतिचार गतिवाळो छे, तथा ६ मासे अग्रिम [पछीनी राशिनं] फळ आपनारो होय छे, अने वक्र होवाधी ते वक्रे छमांयी १-१ बाद करतां पांचनो अक आवे छे, तेमज वक्रीपणाना १३४ दिवस कहेला होवाधी चार मास उपरान्त पाचमो मास पण १४ दिवस सुधी वक्री छे ते कारणधी शनिनो ५ नो अंक विंशतिपत्रमा स्यपाय छे ॥ १९ ॥

राहुकेतुर्वक्रगती, त्रिभीश्रुद्वैःस्तयोर्गतिः ।

स्थानद्वये वैपरीत्यात्, प्रतिष्ठाऽत्र द्वयोरिह ॥ २० ॥

अर्थः—तथा राहुनी अने केतुनी गति अनुक्रमे ३ मास तथा ११ मासनी छे भाटे विंशतिपत्रना स्थानमां विपरीतपणे ते वने अंकनी स्थापना करची, अर्थात् प्रथम केतु सर्वाधि ११ नो अंक स्थापने त्यारवाद राहु सर्वाधि ३ नो अक स्थापचो ॥ २० ॥

एवं शकुनखेटानां, स्थानाद्विगतियत्रकम् ।

निश्चित मेघविजय-त्रिया विभववृद्धिदम् ॥ २१ ॥

अर्थ—जे प्रमाणे शकुन निमित्तवाळा ग्रहोना स्थानोयी [नव स्थानांश्री-] श्री मेघविजयजी उपाध्याये वैभवनी वृद्धि-आपनारो- २० ना अंकनो यत्र [विंश] ने निश्चय करचो ॥ २१ ॥

દશાવતારાદાશાર્હે, ચત્રાર્કો દશિ જન્મના ।

અષ્ટમીદોશ્ચતુષ્ક, નગમૃત્ત્વ૭ચ, નદજ્ઞે ॥ ૨૨ ॥

અર્થ—દાશાર્હેના-શૂણના ૧૦. અવતાર ધયા, ચત્ર અને સૂર્ય ઘે છે [અથવા જન્મ્બૂદ્ધીપમા ૨ સૂર્ય ૨ ચંદ્ર છે], તેનો જન્મ-ઉદય ૮ દિશિમા થાય છે [આઠે દિશિમા ભિન્ન ભિન્ન ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ. ઉદય પ્રકાશ કરનાર. હોવાથી ૮ દિશિમા ઉદય ગણાય], અથવા દિશાઓ. ૮ હોવાથી કેવલ દિશાઓ તથા અષ્ટમી તિથિ, તથા [દોશ્ચતુષ્ક] ચાર મુજાઓ કૃષ્ણની છે તે, તથા નગમૃત્ત્વણુ એટલે [કૃષ્ણે પર્વતને ધારણ કર્યો છે માટે કૃષ્ણનુ ગિરિધર પણુ, અને નદ.નવ ધયા છે માટે નંદપણુ ॥ ૨૨ ॥

વિદુષ્ટ પચહૃષી - કેશત્વ ચ ત્રિવિક્રમે ।

एकादशीव्रतेष्टत्व, ध्येयं-विंशतियत्रत. ॥ २३ ॥

અર્થ—વિંદુ છ છે, તેથી વિંદુ પણુ, તથા હિન્દ્રિયો પાચ છે, તેથી હિન્દ્રિય-પણુ, [અથવા કૃષ્ણ હૃષીક=પાચ હિન્દ્રિયોનો હશ=પતિ હોવાથી કૃષ્ણ પોતેજ હૃષીકેશ કરેવાય છે માટે હૃષીકેશપણુ એટલે પાચ હિન્દ્રિયોનુ સ્વામીપણુ], અને ત્રિવિક્રમ [૩ પરાક્રમચાઝા] પણુ કૃષ્ણનૂજ નામ છે, તેથી ત્રિવિક્રમપણુ, અને એકાદશી વ્રતનુ ઇષ્ટપણુ એ સર્વ વિંશતિયત્રથી ધ્યેય-માવના યોગ્ય છે ॥ ૨૩ ॥

पार्श्वेदशभवाअष्ट - गणामणभृतस्तथा ।

युग्मजयस्यविजय - स्तुर्यावोधेऽनगाफल. ॥ २४ ॥

૧ વિંશતિ યત્રમા કૃષ્ણની માવના આ પ્રમાણે—

૧૦ ના અર્થી દશ અવતાર

૨ ના અર્થી ચત્ર સૂર્ય

૮ ના અર્થી આઠ દિશિ

અથવા અષ્ટમી તિથિ

૪ ના અર્થી ચાર મુજા

૭ ના અર્થી ગિરિધારણતા

૯ ના અર્થી નવનંદપણું

૬ ના અર્થી વિંદુપણુ

૫ ના અર્થી પાચ હિન્દ્રિય

સ્વામીપણું

૩ ના અર્થી ત્રિવિક્રમપણુ

૧૧ ના અર્થી એકાદશી વ્રતેષ્ટપણુ

अर्थः—(हवे श्री पार्श्वनाथ प्रभुनी भावना विगानि यंत्रधी थाय छे ते आ प्रमाणे—) श्री पार्श्वनाथना दशभव तथा छे माटे १० नो अंक भाववो, अर्थात् विशतियंत्रमां स्थापेला १० ना अंकधी श्रीपार्श्वप्रभुना १० अंक विचारवा ८ ना अंकधी श्रीपार्श्वनाथना आठ गणअने आठ गणज यथा छे ते विचारवा, जय अने विजय [कर्मोपर जय विजय प्रमाणे] यधी २ नो अंक विचारवो ४ ना अंकधी चार प्रकारना महत्त्व देवो उपदेश विचारवो, ७ ना अंकधी सात फणा विचारवी ॥ २४ ॥

नवहस्ततनूरत्न - त्रयमेकादशीव्रते ।

शतानिपंचसांगादनि, वैक्रियर्धिभृतः प्रभोः ॥ २५ ॥

अर्थः—९ ना अंकधी नव हाथनुं शरीर, ३ ना अंकधी [दर्शन ज्ञान चारित्र], ११ ना अंकधी एकादशी व्रतनुं, ५ ना अंकधी पाच भूत अने ते सहित एक शरीर मळीने ३ ना अंक विचारवो अे प्रमाणे वैक्रियकद्धि वाळा प्रभुना ९ प्रकारना अंक विंशतियंत्रधी विचारवा ॥ २५ ॥

आयुर्विशाब्धयः पूर्व, भांध्यन्ते भव्यजन्तुभिः ।

द्वेधारिविजयात् सर्व-सिध्यै विंशति यंत्रके ॥ २६ ॥

अर्थः—विंशति यंत्रमां-यंत्रधी भव्य जियोअे श्रीपार्श्वनाथना पूर्व भवनुं २० सागरोपमनु आयुष्य विचारवुं, तथा [राग द्वेष रूप शत्रुना] विजयधी निद्धि पण विंशति यंत्रके

॥ इति श्रीविजययंत्र प्रभावः ॥



हवे चार गनि-रीतिवडे २० नो यंत्र अने छे, तेना प्रमाणे—

आद्यालिङ्गा पक्षे २ हया ७ व्ययो ४ का ।

द्वितीयपक्तौ रस ६ दृक् २ समुद्रा ॥

अधोग ६ रामा ३ वसव ८ प्रसिद्ध ।

सिद्ध बुधा विंशति यत्रमाहु ॥ १ ॥

अर्थः-विंशति यत्रमा पहली पक्तिने विपे पक्ष=२ हय=७ अने अधि=४

ईशान पूर्व अग्नि

	४	७	२
उ	४	मध्य २	६
	८	३	६

वायु पश्चिम इन्द्र

[=अकगति प्रतिलोम होवापी अनुलोम-क्रमशः स्थापता ४-७-२] अे त्रण अरु छे, त्यारबाद

बीजी पंक्तिमा रस ६ दृक्=२ अने समुद्र=४,

जेथी क्रमशः स्थापता ४-२-६ अे त्रण अरु छे, तथा

त्रीजी पक्तिमा अग=वसव=३ अने वसु=८प्रसिद्ध

छे, जेथी क्रमशः स्थापता ८-३-६ अे त्रण अरु छे अे प्रमाणे बुध-

पडित जनोअे सिध्य थयेलो आ २० नो यत्र कह्यो छे ॥ १ ॥

निधानमानैरिहशिष्टकोष्टै ।

स्वेष्टमये यत्र सुसूत्रणेयं ॥

मध्यस्थिताकैः ७ ६ ३-४ द्विगुणै १४-१२ ६-८ स्वपाश्र्वो-

भयाक ४ २-२-६-६ ८ ८ ४ युक्तैर्गतय चतस्रः ॥ २ ॥

सानदू १४ तत्र ४-२ मेलने २० इत्येकागति. ६ छदू १२ तत्र २-६ मेलने

२० द्वितीया तीन दू ६ तत्र ६-८ मेलने २० तृतीया चार दू ८ तत्र ४ ८

मेलने २० चतुर्थी

अर्थ -ओमां निधान=नय संख्यावाला कहेला उत्तम कोठाओ-ग्वाना बडे

पोतानी ईष्टा-ईच्छाप्रमाणे आ यत्रनी उत्तम सूत्रणा-गुधणी-रचना

कहेली-करेली छे ते आ प्रमाणे-मध्यवती अर्कोने ७-६-३-४ ने द्विगुण

करता १४ १२ ६-८ धाय, ते दरेकने पोतानी पङ्गवे रहेला ये ये अकोनी

साधे [४-२ । २-३- । ६-८ । ८-४ नी साधे] युक्त करता चार गतिये

(चारे रीतिये) २० नो अक आवे छे ॥ २ ॥ ते आ प्रमाणे-सात दू १४

मां ४-२ मेळवतां २० थया ॥ इत्येका गतिः ॥ छ दू १२ मा २-६ मेळ-
वतां २० थया ॥ इति द्वितीया गतिः ॥ त्रण दू ६ मा ६-८ मेळवता २०
थया ॥ इति तृतीया गतिः ॥ चार दू आठमा ४-८ मेळवता २० थया
॥ इति चतुर्थी गतिः अे प्रमाणे चार रीते २० नो अंक प्राप्त थाय छे

हये ७ गुणे ३ चद्विगुणे १४-६ पिविशा ।

कृते ४ रसे ६ पि द्विगुण ८ १२ तथा सा २० ॥

कोणेप्यथांगे ६ जलधौ ४ द्विनिघ्ने १२-८ ।

गजे ८ भुजे २ चद्विगुणे १६ ४ तथान्या ॥ ३ ॥

अर्थः-हय=७ ने गुण=३ अे बेने द्विगुण करतां १४-६ थाय ते बेने मेळ-
वता पण २० थाय छे, ॥ इति पंचमी गतिः ॥ पुनः कृत=४ तथा रस=६
ने द्विगुण करतां ८-१२ थाय, ते बेने मेळवतां २० थाय ॥ इति षष्ठी गतिः ॥
(अे वे गति मध्योर्ध्वपंक्ति तथा मध्यतिर्यक्पंक्तिनी अेटले दिशिअंकनी
थई, अे प्रमाणे विदिशिपंक्तिनी पण वे गति आ प्रमाणे-] विदिशिमां
पण अग=६ तथा जलधि=४ अे बेने द्विगुण करता १२-८ थाय, ते बेने
मेळवता २० थाय ॥ इति सप्तमि गतिः ॥ पुनः गज=८ तथा भुज=२ ने
द्विगुण करतां १६-४ थाय, ते बेने मेळवतां बीजा २० थाय, ॥ अष्टमी
गति ॥ ३ ॥

१ उपर स्थापेला यत्रमा मध्यवर्ती अेटले पूर्व दिशानो ७ नो अक छे तेने प्रमणा कर-
वाथी १४ थया तेमा पडखे रहेला वे अक अेटले ईशाननो ४ अने अग्निनो २ मेळ-
वता २० थया. अे अेक रीति थई, पुनः दक्षिणनो ६ अक मध्यवर्ती छे, तेने
द्विगुण करवाथी १२ थया तेमा अंज छनी वे पडखेना वे अक अेटले अग्निनो २
अने नैऋत्यनो ६ अे वे अक मेळवता २० थया—अे त्रिजी रीति, पुनः पश्चिमनो
३ अक मध्यवर्ती छे तेने द्विगुण करता ६ थया, तेमा अे त्रणनी पडखेना ८ तथा
६ ने मेळवता २० थया—अे त्रीजी रीति पुनः उत्तरनो अंक ४ मध्यवर्ती छे,
तेने द्विगुण करता ८ थया, तेमा अे चारनी पडखेना वे अक ८-४ मेळवता २०
थया—अे चौथी रीति.

२ ७-२-३ अे त्रण अकवाळी मध्योर्ध्वपंक्ति अेटले पूर्व पश्चिम पंक्ति, जने ४-२
अे त्रण अकवाळी न
उत्तरदक्षिण पंक्ति.

દિગ્ગ ૭ ૬-૩ ૪ યોગે નવમીગતિ સ્યા
 દ્વિદિગ્ગતાકે ૪ ૨-૬-૮ દશમી સ્ફુટૈવ ॥
 આચાલિકોષ્ટદ્વિતયે ૪ ૭ પિચાયે ।
 યુક્તૃતૃતીયાલિમકોષ્ટયુગ્મે ૩ ૬ ॥ ૪ ॥

અર્થ-તથા યત્રમા દિશિને વિષે સ્થાપેલા ૭-૬-૩-૪ અકોને મેઢવના પળ ૨૦ ધાય તે નવમી ગતિ-રીતિ છે ॥ इति नवमी गति ॥ તેમજ વિદિશિમા રહેલા અકો ૪-૨-૬-૮ ને મેઢવતા પળ ૨૦ ધાય, એ દશમી ગતિ તો સ્પષ્ટજ છે ॥ इति दशमी गति ॥ તેમજ પહેલી પંક્તિના પહેલા વે કોઠામા-ગ્નાનામા રહેલા ૪-૭ એ વે એકમા ત્રીજી પંક્તિના છેહેલા વે કોઠામા રહેલા ૩-૬ એ વે અક મેઢવીએ તો પળ ૨૦ ધાય ॥ इति एकादशी गति ॥ ૪ ॥

एकादशीय गतिरित्थमुक्ता ।
 तथाथ पक्तावचले ७ भुजे २ च ॥
 युक्ते तृतीयालिमुखाष्ट ८ रामै ३ ।
 स्याद्वादशीयगतिरर्क १२ तुल्या ॥ ५ ॥

અર્થ-એ પ્રમાણે એ અગિઆરમી ગતિ કરી, તથા પહેલી પંક્તિમા છેહ્યા વે અક અચલ=૭ તથા ભુજ=૨ છે, તે વેને ત્રીજી પંક્તિના પહેલા અષ્ટ=૮ અને રામ=૩ એ વે અકમાં યુક્ત કરીયે તો તે ૨૦ ના અકની [અર્ક-તુલ્ય સૂર્ય એટલી એટલે] ચારમી ગતિ થઈ इति द्वादशी गतिः ॥ ૫ ॥

द्विकेन २ तकेण ६ कृतेन ४ सिध्या ८ ।
 त्रयोदशी साग ६ रसै ६ समुद्रः ४ ॥
 प्रमाण ४ युक्तेश्च चतुर्दशीसा ।
 जानागति विशातिसरययैव ॥ ६ ॥

અર્થ-તથા દ્વિ+ = ૨ તર્ક = ૬ કૃત = ૪ સિદ્ધિ = ૮ એ [અર્થાત્ અગ્નિ દક્ષિણના ૩ મા ઉત્તર ધાયન્યના ૪-૮] મેઢવતા જે ૨૦ ધાય તે તેરમી ગતિ

गति जाणवी ॥ इति त्रयोदशी गतिः ॥ तथा अंग=६ रस=६ समुद्र=४
अने प्रमाण=४ [अर्थात् दक्षिण नैऋत्यना ६-६ मा उत्तर ईशानना ४-४]
मेळवतां पण २० धाय ते विंशति सरुया संबंधि ज चौदमी गति थई
इति चतुर्दशी गति ॥ ६ ॥

अधःस्थिताष्ट ८ द्विगुणस्तु मध्य-

स्थितद्वयेनेत्यपि षोडशमी ।

मुख्यैश्चतुर्भिः सहिताहिविश-

संख्याततः पंचदशायामत्र ॥ ७ ॥

अर्थः-पुनः यंत्रमां नीचे रहेला ८ ने द्विगुण करी १६ धाय तेमां मध्य
कोठामां रहेला २ ने पण द्विगुण करतां थयेला मुख्य अंक ४ ने मेळवीअे
तो अे रीते पण [८×२=१६ २×२=४ १६+४=२०] वीसनी अंक प्राप्त
थाय, तेथी विंशतियंत्रमां अे पदरमी गति थई ॥ इति पंचमदशागतिः ॥ ७ ॥

कोणस्थपङ्कमध्यगतद्वयेन, द्विघाततोद्वादशतेऽष्टयुक्ता ।

स्यात्षोडशीयंगणनातथैव, सार्विंशते स्तोरणसज्ञयेह ॥ ८ ॥

अर्थः-तथा खूणामा रहेला ६ ने मध्यमां रहेला २ वडे द्विगुण करीअे,
तो १२ धाय, तेमा खूणामा रहेला ८ ने युक्त करीअे तो २० धाय, अे
सोलमी गणत्री (गति) छे, अे प्रमाणे करेली वीसनी गणत्री ते आ
यंत्रमां तोरण गति नामनी छे ॥ इति षोडशी तोरणगतिः ॥ ८ ॥

सिध्या ८ऽथमध्याऽविधि ४ भुजां २ ग ६ भाजा

त्पाष्टि १२ प्रमाण गणानापताका ॥

धृति १८ प्रमाष्ट ८ त्रि ३ भुजा २ चलां ७ कै. ।

पिपीलिका शकुगति प्रवृत्त्या ॥ ९ ॥

अर्थः-सिध्धि= ८ तथा ५
(८-४-२-६) वडे मत्तर प्रमा

विधि- ४ भुजा= २ अंग= ६
अदले सत्तरमी) ५

२० थाय छे, ते सत्तरमी पताकागति जाणवी ॥ इति सप्तदशी पंताका गति' ॥ तथा अष्ट=८ त्रि=३ सुजा=२ अने अचल [पर्वत]=७ छे (८-३-२-७) अरुवडे शकुगतिनी प्रवृत्ति गणत्रीधी २० ना पिपीलिका गति जाणवी अ धृतिप्रमा । =धृति=१८ प्रमाणनी अटले १८ मी गति छे ॥ इति अष्टादशी पिपीलिका शकुगतिः ॥ ९ ॥

मध्यस्य पद् ६ द्वि १२ कृत ४ सागरां ४ कैः ।

एकोनविंश प्रमितापि सख्या-

द्विधे १४ नगा ७ के पिचकोणपद् ६ भिः ।

युक्तेच सा विंशतिरेवगण्या ॥ १० ॥

अर्थ.-तथा मध्यवर्ती ६ ने द्वि=गुण करता १२ थया तेमा कृत=४ सागरा =४ मेळवता [$६ \times २ = १२ + ४ + ४ =$] २० थाय छे अे ओगणीसमी प्रमा णवाली सख्यागति (अटले ओगनीसमी गति थई) ॥ इति एकोनविंशति गति' ॥ तथा नग=७ ना अरुमा पण तेवी रीते अटले द्विगुण करीने तेमा विदिशिमा रहेलो ६ नो अक मेळवता ($७ \times २ = १४ + २ =$) २० थाय छे अे वीसवी गति गणवी ॥ १० ॥

अस्मिन् दशत्रिंशदथाभ्रवेदा ४० ।

पचाशता ५० पष्टिरपिप्रवोच्या ॥

सप्त ७ त्रि ३ योगेग ६ चतुष्क ४ सगे-

ऽष्ट ८ द्वि २ प्रयोगे प्रकटादशापि ॥ ११ ॥

अर्थ:-चळी अे विंशतियत्रमा दश=१० त्रिस=३० अभ्रवेद [अभ्र=०, वेद=४=] ४०, तेमज ५० अने ६० नी अकगणत्री पण थाय छे अेम जाणवु ते आ प्रमाणे—मात अने घणना योगे १०, अग=६अने ४ ना

१ जई ८-४-२-६ अे अक वायव्य-उत्तर-मध्य-अने दक्षिण स्थानीय होवार्थी



अे रीते पताका आकार थयो अने शकुगतिनो

अे आकार वयो, इत्यादि रीते वीम गति-



ओना वीम आकार दर्शावगे

योगे पण १०, तेनज आठ अने वेना योगे पण प्रकट रीते १० थाय छे
 [अे प्रमाणे $७+३=१०$, $६+४=१०$, $८+२=१०$ अे त्रण रीते १०
 थाय छे ॥ ११ ॥

तथाब्धयः ४ सप्रगुणा २८ द्वयाढ्या २ ।

त्रिंश ३० तथाऽष्टौ त्रिगुण २४ स षट्का ६ ॥

३० चतुर्गुणा अष्ट ३२ मुखेऽब्धयो ४ द्विः ८ ।

खवार्द्धि संख्येति ४० बुधै विबोध्या ॥ १२ ॥

अर्थः-तथा अब्धि=४ ने ७ गुणा करता २८ थाय तेमा २ उमेरता ३०
 थाय छे तथा आठने त्रण गुणाकरी छ उमेरतां पण ३० थाय छे अे
 प्रमाणे वे रीते ($४-७=२८+२=३०$ । $८\times ३=२४+६=३०$) त्रीसना अरु
 प्राप्त थाय छे तथा आठने चार गुणाकरी प्रथमना [ईशान गत] चार
 ने द्विगुण मध्यगत वे वडे तेमां उमेरतां [ग्व=०, वार्धि=४=] ४० नो
 अक [$८\times ४=३२$, $४\times २=८$ $३२+८=४०$] प्राप्त थाय छे, अे प्रमाणे बुधि-
 मानोओ जाणवुं ॥ १२ ॥

चतुर्गुणा अष्ट ३२ चतुर्गुणत्वे ।

कृते ४ कृते १६ मध्यगतद्वि २ योगे ॥

पंचाशदेव फलितास्तिपष्टिः ।

पड्वर्ग ३६ मध्ये त्रिगुणाष्ट २४ युक्ते ॥ १३ ॥

अर्थः-आठने चार गुणाकरी तेमां चारने चारगुणाकरी मेळवी तेमां
 मध्यगत वेने मेळवतां ५० जवाव ($८-४-२$ अे त्रण अंकथी) प्राप्त थयो
 तथा अे प्रमाणे पहेला [दक्षिणगत] छनो नीचेना छ साथे वर्ग=गुणा-
 कार करी तेमा त्रण अने आठनो गुणाकार उमेरवो अेथी ६० नो जवाव
 ($६-६-३-८$ अे चार अंकथी) प्राप्त थाय छे ($८\times ४=३२$, $४\times ४=१६$
 $३२+१६+२=५०$ तथा $६\times ६=३६$ $३\times ८=२४$ $३६+२४=६०$) ॥ १३ ॥

कोणस्थपण्णां ६ त्रिगुणेतरस्य द्वयेनयुक्त्रिंशतिकाप्युपैति ॥

कोणद्वयेसप्तगुणेचमध्य । पदसगतौ सा नवित्रक्षणीया ॥ १४ ॥

अर्थः—खूणामां रहेला छ ने अण गुणा करी मध्यगत ये ने उमेरता [६-२ ना अर्कधीज ६×३-१८+२=] २० पण थाय छे तथा खूणामां रहेला ये वडे सातने गुणता चौद थाय तेमां मध्यगत ६ [दक्षिणना ६] उमेरता पण २० थाय परन्तु अे ये गतिनी अहिं विवक्षा करी नंधी।१४।

प्राच्यासुरेन्द्र सहसोमराजो-पाच्यायमस्तीव्ररुचातिचारुः ॥

पार्शीप्रतीच्यासहशेपनागो । ब्रह्मान्वित श्रीदइहास्त्युदीच्याम् ॥१५॥

अर्थः—पूर्व दिशामां सुरेन्द्र सोमराज [मोम लोकपाल] सहित जाणवो दक्षिण दिशिमा कान्तिवडे अति मनोहर यम लोकपाल छे, पश्चिम दिशामा शेपनाग सहित वग्ण नामनो लोकपाल देव छे, अने उत्तर दिशामा ब्रह्मा सहित कुवेर नामे लोकपाल छे ॥ १५ ॥

श्रीयत्रमेतद्विहरजिनाना । नाम्नाधियास्तापरित परीतम् ॥

सर्वार्थसिध्यादिगुणै प्रतीत । चिंतामणीव त्रिदशाग्रणीनाम् ॥१६॥

अर्थ—वीस विहरमान जिननो आ विंशतियत्र नाम वटे तथा बुद्धिवडे सर्वत्र व्याप्त छे सर्व अर्थनी सिधि आदि गुणोपटे प्रसिद्ध छे, अने देवता ईन्द्रोने पण चिंतामणि रत्न सरग्यो छे ॥ १६ ॥

॥ इति विंशति यत्राम्नाय ॥





८	१	६
३	५	७
४	९	२
१५		१५

९	१	७
३	५	८
४	१०	२
१६		

९	१	७
३	५	८
५	१०	२
१८		१७

९	२	७
४	६	८
५	१०	३
१८		

१०	३	७
४	६	९
५	११	३
१८		१९

१०	३	८
४	७	९
६	११	३
२१		२०

१०	३	८
५	७	९
६	११	४
२१		

९	३	८
४	७	८
६	१०	३
१९		

४	७	२
	२	

१ सी

		२
	२	६
		६

२ जी

	२	
८	३	६

३ जी

४		
४	२	
८		

४ घी

	७	
	३	

५ मी

४		६

६

४		
		६

७

		२
८		

८

	७	
४		६
	३	

९

४		२
८		६

१०

४	७	
	३	६

११

	७	२
८	३	

१२

		२
४		६
८		

१३

४		
४		६
		६

१४

	२	
८		

१५

	२	
८		६

१६

४	२	६
८		

	७	
	२	
८	३	

१८ धंङ

४		
४	२	६

१९

	७	
	२	६

२० मी

स्याद्भावनातिशयतः शकुनेऽशुभेषु ।
 सम्यक् फलं तदितरं तु शुभे विहगे ॥
 स्वप्नेषु पश्रुतिषु धर्म विधौ तथात्र ।
 मत्रेपि चित्त फलदा किल भाव नैव ॥ ३ ॥

अर्थ—भावनाना अतिशयथी अशुभ शकुनमा पण सम्यक् शुभ फलनी प्राप्ति धाय छे, अने शुभ [विहगमा =] शकुनमा अशुभ फलनी प्राप्ति धाय छे, अे प्रमाणे स्वप्ना उपश्रुतिओमा अने धर्मविधिओमा पण जेम 'शुभाशुभ फलनी प्राप्ति भावना विशेषथी छे, तेथी रीते अहिं मत्रमां (यत्रमा) पण निश्चय भावनाज अचित्त फळ आपनारी छे. ॥ ३ ॥

ते तैवसा यवन विंशति यत्र मध्ये—
 ऽर्क १२ द्वयस्य श्वत पङ्क गणने कलाके १६ ॥
 प्राज्ञैः फलाय कथिता हृदि भावनैव ।
 नैवान्यथी भवति विंशति यत्र सिद्धि ॥ ४ ॥

अर्थ—ते कारणथीज यवनना विंशति यत्रमा अर्क=१२ ना अंकमा २ नी गणथी अने कला=१६ ना अंकमा ६ नी गणथी धाय छे बुद्धिमानोअे हृदयनी भावनाज फळ आपनारी करी छे, नहितर विंशति यत्रनी सिद्धी पती नथी ॥ ४ ॥ [यवननो विंशतियंत्र आगळ दर्शावशे]

तत्रायं केपा चिदभिनिवेशः क्लेशः कृमपाप्ताकं लोपे पुनस्तत्कार्यं
 नपार्यं प्रसक्ता दर्शन लोपः तस्मिन् जाते यदि तेन कार्यस्या चरिं कानि
 सतीत्यादौ पकारः स्यात् धातोरकार लोपेपि तत्कार्यं प्रसगात् मृतो
 ज्जीवन प्रायत्यादशुद्धमिदं यत्र लोपस्य ध्वस रूपस्य नित्यत्वात्
 नच भावनैव सवत्र फलदा ' गुडोय ' मिति मुग्ध भावनया खाद्यमानेन
 त्रिपेन मरणात् अशुद्धे नाणकादौ शुद्ध धिया गृह्यमाणेपि न तत्फल
 तस्मात्तैकोकं कार्यद्वये गम्य इति अत्रोच्यते नायमेकान्तःकान्तः अचकथ
 रित्यादौ लुप्ताकारस्य वृक्षभाव प्रयोजकत्वात् अकविद्यायामपि
 वलस्य विदोरनकृत्येपि अक संनिधानेकत्वाच्च नचेदकगणना नपातै

वदशमांकः कनमः अंकं शब्देन नव संख्यानात् अतएव अंक संकलने
 विदुः प्रसक्तोपि तल्लघने सकलना अंक गणने एकः दश इत्यादौ तद
 पेक्षा च हृष्यते अंकप्रधान ज्योतिशास्त्रेपि उभयीगतिः उदया पेक्षया
 तिथिलोपेपि प्राच्यतिथौ घटिकापेक्षया तिथिच्छेदादि दोष प्रयोजकत्वात्
 अतएव प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणं न याति ? स्थानिवदादेशो ऽनलविधा
 विति परिभाषाद्वयं युक्तं अलकारशास्त्रेपि एकस्मात् शब्दात् यथायोगं
 नानार्थलाभः यथा अनुदराकन्या अलोमाएडका इत्यादौ विशिष्टार्थे
 शक्तेश्च वैद्याअपि लघनस्यायोग लघु भोजने तदेव व्यवहरति उत्सर्गोप
 चादयोरेकार्यविषयात् नचैवं पङ्कस्थाने पंचकभावेनेइति प्रसंगः साव-
 र्णस्य नियोजकत्वात् तथाहि प्रथमेकद्विक्रयो सावर्ण्यं संख्यादिरा धर्म्यात्
 द्विकस्यसख्यादित्वं लहसंखिज्जंदुचियइति सिद्धान्तात् तत्रापि एकस्य
 वस्तु रूपत्वाभिप्रायात् आद्यद्वितीययोरघोपत्वमपि एव मेव नवक-
 दशकयोः सावर्ण्यं सख्यांत साधर्म्यादेव विषम समभावेपि एकद्विक्रयोः
 संबधः यथा पूर्वं दिन तदनुगारात्रिरित्यनयोः संबधः अतएव द्वाभ्यां
 केवलाणुभ्यां द्व्यणुकं न तथा तार्किकं मते अणुकतम्य पडणूमानात् यद्यपि
 सिद्धांतमध्ये त्रिभिरणुकैस्त्र्यणुकं तथापिनद्विकत्रिकयोः सार्धका नर्द्धक
 विरोधात् यद्यपि एकोऽनर्धकोऽणुस्तथापि न त्रिकेण सावर्ण्यंभाक्
 द्विकेनव्यवधानात् एकस्मिन्ननर्धकत्वेपि अव्यवधानात्सावर्ण्यं एकं हि वस्तु
 सदपिनसत् द्वयोभावेतु आस्तिक्यं संयोगादेव सिद्धेः संयोगादिव्यं ।
 ततएव सम्यग्ज्ञान क्रियाभ्यामोक्षः इतिसूत्रं शाद्विक मते सर्वादिपाठोपि
 एकाद्वि शब्दयोर्न त्रिशब्दस्य अतएव एक समुखोद्विकः शाब्दिका अपि
 प्रथमा द्वितीयपो 'सावर्ण्यं माहु' मुने रित्यादौ पष्ठी पंचम्योश्च एकत्व
 रूपस्य एकस्य वाचकत्व एककेयथा द्विकेपि तथा द्विरूप एकार्थं वाचकत्वं
 न पुनः त्रिके बहुत्वस्य त्रित्वसंख्या पर्यवसानात् । एवात्रिक चतुष्कयोरपि
 सावर्ण्यं स्थान विशेषे ऽभिधानात् यद्यपि क्वचित् द्विमार्गादौ द्विकाभिधान
 मपि तथापि तियचउकचचर चउम्मुहे त्यादि सूत्रेत्रिक चतुष्कयोः एव-
 साहचर्यं न द्विकस्य शब्दशास्त्रेपि त्रिचतुरोरेव सूत्रणात् ज्योतिर्मतेपि
 चतुर्थ्या भद्रा कृष्णपक्षेतृतीमाया पर्यवसन्ना वेदेवपि त्रित्वं चतुष्टमपि
 'त्रयीवनीनांगुणेन विस्तरं' अर्थः 'चउण्हं वेयाण सारण' इति
 वणंपु त्रित्वं चतुष्टमपि त्रियः इतित्रिपुरास्तवे

प्रसिद्धं 'त्रिवर्गो धर्मकामार्थश्चतुर्वर्गः समोक्षकः इति कोपयनात्
एव पचक पडकयोः सावर्ण्यमुदाहरणीय रसाना क्वचित् पंचत्वे लघण
रमस्यभेद विप्रक्षया पोढा भणनात् एवमिन्द्रियाणा तद्विषयाणाच
पचधापोढा इति उभयी सरया 'पंचेन्द्रियाणि त्रिविधप्रलच, इति पण्डित्त्रियाणि
पञ्चविषया, इति केनचनः ततएव हिंदुरुमते पचकः यचन मनं पडकः
उभयोस्तुल्याकृतिः चक्रा. पचम पष्टके इत्यपि सप्ताष्टकयोः सावर्ण्यं सत्तद्व-
पयाइ अणुगच्छइ तथा सत्तद्वभवज्जहणाइ तथा सत्तपुढवीओ पण्णत्ता-
ओइपि अट्टपुढवीओ इत्यादि सूत्राणि गमकानि ज्योतिर्मतेऽष्टमी
भद्रा कृष्णपक्षे सप्तम्यां तथा अतिवक्रा नगा ७ ष्टमे ८ ॥ नवकदशकयो
सावर्ण्यं 'नवमे दशमे भाना जायते सरलागतिः, ॥ एव पचक पडकयोः
सावर्ण्यमस्तु परमुमयार्थत्व कथमितिचेत् एकोपिलकार. अनिलइतिवायु
नामिमहजरीत्या उचार्यते अनलइति अग्निनाग्नि प्रयत्नान्तरेण यथवा य-
कार' योगी योत्र. इत्यादौ स्पष्टोच्चारणेन नियोगी नियम इत्यादौ अस्पष्ट
तथा ध्येय. एव चकारेपि मतव्य सञ्चतोप्यकारः प्रक्रियानियोगा द्विष्ट-
प्रतिज्ञापते उच्चारणार्थोपि प्रत्याहारार्थं सानुनाशिकश्च ततोर्थयशाद्विभक्ति
परिणामवत् अकस्यापि गणना नियोगात् सैक निरेकत्वे यथाहं परिणाम-
कार्यः वारादिवत् यथात्रा प्रिवलातः कारकाणि तथात्रापि पडके पचक
विचला कार्या स्वरसज्ञापनुस्वारे सिद्धात कौमुदीमता व्यजनत्व हैममते
कस्यादे व्यजना श्रयात् यथाहि 'भुण्णानि नियमियात् । त्रीणि सप्त
चतुर्दश ॥ चतस्र कीर्तयेद्वाष्टौ । दशयारुकुम्भः क्वचित् ॥ १ ॥ तथा चतुरा
समवायुवीम् इति सराम्बयः ३ पच ५ सप्त ७ चतुर्दश १४ नय ९ क्वचित्
एव यथा स भवपारया सर्व पडितममता मार्त्रिकी तथात्रापि सैक निरेक
करणात् सावर्ण्येन सर्वव्यत्र निर्वाह. यथा रा छदाशाले लघुरपि पादाते
गुरुर्भावनीय. अर्हादिगणे सयोग परत्वेन गुरुरपि लघुर्भाव नोऽनिष्टाऽर्था
शास्त्रप्रवृत्तिरिति न्यायात् तथात्रापि अकाना तत्तत्सवर्णभावनयैव
निर्व्यूह्य सतो गति श्रितनीया इतिन्यायात् नचभावना नकार्य सिद्धि
रित्येकात 'पानीय मप्यमृत मित्यन्युचित्यधान किनामनो विपविकार
मपाकरोति, इति प्राचीन उचनात् विपादनात् विपादना शुद्धना णकादौ
तुमौल्य दोषात्सहकारि वैरूप्यान्त भावनामात्रत तत्तत्काय किंच यत्राणा
रित्यनेन मनोऽप्य यथाकमलाकृति प्रशतियत्रे चतस्रोगत-

यस्त्रिस्थानिका दिग् १ विदिग् २ परिधिसव्य ३ तदितर ४ गतया श्रुतुस्थाने
काद्वादशकयंत्रे काचिद्गति स्त्रिभिर्गृहैः काचिद्वाभ्या मेवगृहाभ्या मित्यादि
विस्तरौ गंगाप्रवाह ग्रंथाद्वेद्यः एव दश समानानामिव दशांकानामपि
सावर्ण्यं। ज्ञेयं तत एव चूडामाणि शास्त्रे अक्षरेषु अंकन्यासः लिपिभेदे अकै
रेव वर्णभावणात् वस्तु तस्तु यत्राणां गति वैचित्र्य भेवमत्त्वा सतोष्टव्य
न शास्त्र विरोधे योवैर्भाव्यं अनन्यगतिकत्वात् ॥

इति नवग्रह यंत्र विशतेवर्तमाना-

ऽभयद जयद सेवा सक्तदेवानुपक्तम् ॥

विजयविधिनिधानं तर्जनं दुर्जनानाम् ।

भवतु विभवहेतुः केतु रेवार्जुनस्य ॥ १ ॥

प्राचीनानूचानै-स्त्रिभागदाना दिहैक शेषेपि ॥

कृत ४ गुण ३ यंत्र रचितं । ख वाणह यंत्रं द्वयेशेपे ॥ २ ॥

तन्मार्गानुगतधियो-पाध्यायपदस्थ मेघविजयेन ॥

विहरज्जिनयंत्रमिह । स्फुटीकृत विजयकरं ॥ ३ ॥

अर्थः-अहिं [५ नो लोप करी ६ स्थापवामां] केटलारुनो अेवो आग्रहरूप
रुलेश छे के-अनुक्रमे प्राप्त थयेला अंकनो लोप कर्याथी पुनः कार्यसाद्धि
धाय अेम न जाणवुं, केमके-प्रसन्तादर्शनं लोपः=प्राप्त थयेलानु
अदर्शन-अदृश्यपणु ते लोप, अने ते लोप धये छते पण जो ते लोप
थयेला वडे अर्थ थतु होय [अेटले लोप थयेलो अक्षर पण जो पोतानु
कार्य करी शकना होय] तो कानि सन्ति इत्यादि वाक्योर्मां * य्

* सन्ति मा अस् धातु छे परन्तु अस् धातुने जन्ति प्रत्यय लागता अस्ना अकार नो
लोप थयाथी कानि सन्ति वाक्य थयु, जो अस्ना अ नो लोप न थात तो कानि-
असन्ति अे वेनी साधे यात, अने सधि यती वसते नि मा रहेला इकारनो अत्रे आवेला
जकार थी) य्कार धातु, जेथी - - - - - नान्ति अेवु वाक्य यात. परन्तु
अस्ना अ नो लोप थयाथी इ नो - - - - - नदि, -इति तात्पर्यः-

કાર્યવો જોઈયે, કારણકે ઘાતુના [અસ્ ઘાતુના] અકારનો લોપ થવા છતાં પણ તેના કાર્યનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થવાથી, માટે મરણ પામેલાને પુનઃ જીવતો કરવા સરખો [૫ નો લોપ કર્યા છતાં પણ પુનઃ ૫ ની ગણત્રી કરવાથી] આ વિંશતિ યત્ર અશુદ્ધ ગણાય, કારણકે વિનષ્ટ સ્વરૂપ વાઙ્મો લોપ નિત્યભાવી છે, (જેથી કદાચિત્ દ્વય યાય અને કદાચિત્ દ્વય ન ધાય એવો નથી, માટે લોપ કૃત ૫ નો અંક કોઈ વચ્ચે ગણત્રીમા લેવો ને કોઈ વચ્ચે ગણત્રીમા ન લેવો એમ ન થાય, જો ૫ નો લોપ કર્યો છે તો તે લોપ નિત્યભાવી હોવાથી કદી પણ ગણત્રીમા લઈ શકાય નહિ) વઢી કહો છો કે ભાવનાજ સર્વત્ર ફલ આપનારી છે, તેમ પણ નથી કારણકે આ મોઢ છે એથી મુઘ્ધ માયનાથી રંગવાતુ વિપ મરણ માટેજ ધાય છે, તથા સોટા નાણાને (સોટા રૂપિયાને) સરાની બુદ્ધિ એ ગ્રહણ કરતાં પણ તેને કંઈ ફલ ધતુ નથી, માટે એક એક વે કાર્યમા (ગણત્રીમા અને અગણત્રીમા એમ વે રીતે) ઉપયોગી થઈ શકે નહિ [અથવા લોપમા અને અલોપમા એ વચ્ચેમા ઉપયોગી ૫ નો એક ધાય નહિ] ॥ ઇતિ પ્રશ્નઃ ॥

અર્થઃ—ત્વે અહિં એનો ઉત્તર દર્શાવાય છે કે—એ ઘાત એકાન્ત ઇષ્ટ નથી, (અર્થાત્ લુપ્ત અક્ષર કંઈ પણ કાર્ય ન જ કરે એમ એકાન્ત નથી), કારણકે—કાન્ત અચક્રાયત્ ઇત્યાદિ પદોમા લુપ્ત અકાર પણ વૃદ્ધિના અભાવમા પ્રયોજનવાઙ્મો ધયો છે તેમજ અકવિશ્વામા [અકગણિતમા] પણ કેવલ વિદુને અકરહિતપણુ છે [અર્થાત્ વિદુને અકમાં ગણ્યો નથી] તો પણ અકની પાસે રહેલુ જોય ત્યારે અંક તરીકેજ ગણાય છે, અને જો તેમ ન જોય તો અકની ગણત્રી ૯ સુધીજ ધાય, પરતુ ૧૦ મો અંક કયાથી પ્રાપ્ત યાય? કારણકે અક એ શબ્દ વડે નવનીજ સરખા ગણાય છે તે કારણથીજ અક સકલનામા વિન્દુ પ્રાપ્ત હોવા છતાં પણ તે વિન્દુનુ ઉલ્લચન કરીનેજ અક સકલના ધાય છે, અને તેથીજ અકગણત્રીનો ક્રમ (૦ થી નહિ પણ) ૧ થી પ્રારંભીને ૧૦ ઇત્યાદિ સુધી ગણાય છે, અને એજ અપેક્ષા અહિં (લુપ્ત થયેલા ૫ ના અકમા) પણ જાણવી

અર્થ —તથા અકગણિતની મુરચતાવાઙ્મો ડ્યોતિપશાસ્ત્રમા પણ ઉભયગતિ
 ' કોઈ વચ્ચે ઉપયોગ અને અનુપયોગ] દર્શાવેલા છે તે આ
 ઉદયની અપેક્ષાએ તિથિનો લોપ થવા છતાં પણ તે લુપ્ત તિથિ

पूर्व तिथिमां घटिकाओनी (घडीओनी) अपेक्षाय तिथिच्छेदादि दोषना प्रयोजनवाली छे [अर्थात् क्षय तिथि जे तिथिमा आर्वी छे ते तिथिमा पण क्षयतिथिनो दोष उपजावनारी छे, अने तेथी यात्रादिने अगे ने उदयतिथि पण क्षयतिथि तरीके मानीने ते ते कार्य थतु नथी] ते कारणथीज प्रत्ययनो लोप थवा छतां पण प्रत्ययतुं लक्षण सर्वथा जतु नथी तेथी अंकस्थानमाज घटा देशोऽनलविधौ अे प्रमाणे वे परिभाषा युक्त छे. तथा अलकारशास्त्रमां पण अंकज शब्दथीज अनेक प्रकारना अर्थनो लाभ कह्यो छे, जेमके - अनुदरा कन्या [कन्या उदर रहित छे], अलोमा एढका (घटां लोम रहित छे), इत्यादि वचनोमां विशिष्ट अर्थवाली शक्ति होवाथी ते वचनो नो जूदो जूदो अर्थ थाय छे

तथा वैदकशास्त्रीओ पण लंघन प्रसंगे लघु भोजनमां (अल्प अने हलका आहारमां) लंघन शब्दनोज व्यवहार करे छे, कारणके उत्सर्ग अने अपवाद अे वत्ते अंकज प्रयोजनवाला छे. अने अे प्रमाणे होवाथी ६ ना अंकस्थानमा ५ नो अंक स्थापवो ते अतिप्रसंग दोषवालो नथी, कारण सदृशपर्णानो नियोगक—प्रयोजक होवाथी. ते आ प्रमाणेः—प्रथम एक अने वे संख्यानु मरखाणुं छे, ते सदृश पणुं संख्याना आदिपणाथी जाणवुं [त्या १ नो अक तो संख्यानी आदि स्तूप स्पष्ट छेज, अने] २ नो अंक संख्यानी आदिस्तूप केवी रीते

१ कन्या उदरवाली स्पष्ट देखावा छता पण "उदर रहित" वचन केहवाय छे ते विशिष्ट शक्तिवाळ उदर अटले गर्भधारण शक्तिवाळ उदर नथी अे विशिष्ट शक्तिरूप अर्थथीज.

२ घटा सर्व वाळ युक्त [लोम युक्त होवा छता विशिष्ट लोम अटले वत्त बनवा योग्य उनवाळा वाढना अभावे "घटा लोम रहित केहवाय छे. अे रीते अे वे वाक्योना दारकेना वे वे अर्थ थाया.

३ जे साध्यसिद्धिने अर्थे उत्सर्ग छे, तेम अपवाद पण तेज साध्यासिद्धिने अर्थे होय छे, अने जो तेम न होय तो तेजो-अपवाद वास्तविक रीते अपवाद न गणाय.

४ ६ नो अक अे कार्यसाधक (अर्थतनो) छे, तेम ५ नो अंक कार्य साधक होवाथी ६ सदृश गण्या छे.

છે ? તે દર્શાવાય છે—લઘુસંગિજ્ઞં લુચિય [અર્થાત્ ૨ એજ લઘુસંરચાને છે], એ પ્રમાણે સિદ્ધાન્તમા કહેલું છે. એમા પળ એક [૧ ની સંગ્યા] તો વસ્તુસ્વપ પળાના અભિપ્રાયથી સંગ્યા રુપ છે, અને એમા તો આ પહેલુ અને આ ધીજુ એ રીતે પહેલા ધીજ પળાની ગણત્રીથી ઘોપપતું [સંયોગે સ્પષ્ટ થોલવા પળુ] પળ છે આ માટે સદ્ગ્રા પળુ છે એ પ્રમાણે નવ અને દશમા પળ સદ્ગ્રાતપળાના સાધર્મ્યથી સરાગ્યાપળુ છે, [અર્થાત્ ૯ જેમ સદ્ગ્રાત કહેવાય છે, તેમ ૧૦ પળ સરગ્યાનજ છે માટે સરાગ છે] ઘટ્ટી વિપમ સમ ભાવમા પળ ૧ ને અને ૨ ને સયથ છે, જેમ પ્રથમ દિવસ અને ત્યારનાદ (ઘીજી) રાત્રી, એ પ્રમાણે એ ઘેનો (૧-૨ નો અથવા પહેલા ઘીજાનો) સયથ (વિપમભાગ સયથ) છે, અને એથીજ કેવઝ કે પરમાણુનો સ્કથ તે દ્વયણુક, ઘટ્ટી એ રીતે તાર્કિક મતમાં અણુ [એક ભાવી અણુ] માન્યો નથી, કારણ કે તેના મતે [એક અણુ પળ છે અણુના માનવાટો હોવાથી ઘટ્ટી જો કે સિદ્ધાન્તોમા ઘ્રણે અણુ ઘટે ધ્યણુક કર્યો છે, તોપણ દ્વિક ત્રિકમાં સાધેક અનર્થકનો (દ્વયણુકાદિ સ્કથો અર્થ યુક્ત હોવાથી સાધેક અને કેવઝ અણુ યો પ્રદેશ તે નિર્વિભાજ્ય હોવાથી અનર્થક એ રીતે ભાજ્યાભાજ્યો) વિરાધ નહી ગણી ગણીનેજ કર્યો છે ઘટ્ટી જોકે એક અને અનર્થ [નિર્વિભાજ્ય] હોય તેજ અણુ કહે વાય, તો પળ તે ત્રિકની સાધે મહશતા ઘાલો નથી, કારણકે દ્વિકના અવધાનવાલો આંતરાઘાલો છે અને એરુમા અનર્થકતા હોયા છતા પળ અવ્યવધાન હોવાથી સદ્ગ્રા પળુ છે એક વસ્તુ સત્ છે તોપણ અસત્ સરખી છે, પરન્તુ કે વસ્તુના સદ્ભાવે આસ્તિત્વ-સત્ પળુ સાર્થક છે કારણ મયોગોદેવ સિદ્ધિ [સંયોગથીજ સિદ્ધિ] કહી છે, અને સંયોગ કે વસ્તુના સદ્ભાવેજ હોય છે અને તે કારણથીજ સ્મ્યગ્જ્ઞાન ક્રિયાભ્યાં મોક્ષઃ [સ્મ્યગ્જ્ઞાન અને ક્રિયાં એ ઘેથીજ મોક્ષ કર્યો છે] એવું ઘચન છે

ઘટ્ટી શબ્દિકમતમા [વૈયાકરણમાં] પળ સર્વાદિ પાઠ પળ એક દ્વિ શબ્દ ને વિષે છે, પરતુ ઘ્રણ શબ્દને નથી, અને એથીજ એક સન્મુઘ દ્વિક [૧ ની તુલ્ય ૨] કહેવાય છે ઘટ્ટી શાબ્દિકો (વૈયાકરણીઓ) પ્રથમા અને દ્વિતીયા વિમત્તિં એ ઘેને' પળ સદ્ગ્રા રહે છે, મુને' इत्यादि

→ ફળાનિ [પ્રથમા], ફલં ફેલે ફળાનિ, દ્વિતીયા, વહુવચને કરિણ

शब्दोमा छद्दी अने पांचमी विभक्तितुं अेक स्वरूप छे माटे अे वने विभक्तिओ पण अेकन्व वाचक छे, [अर्थात् ये विभक्तिओ अेक स्वरूप-वाळी होवाथी अेक छे], अे प्रमाणे अेरुमां जेम अेक पणानो व्यपदेश छे, तेम द्विक्रमां-ये मां पण द्वि=वे रूप अेक पणानो व्यपदेश छे (अर्थात् द्विक कहैवाथी अेक जोड समजाय छे), परन्तु तेवी रीते त्रिक्रमां (त्रणने योगमां) तेवो अेकपणानो व्यपदेश नथी कारणके बहुपणाने त्रणने संख्या छे, अने ते बहुपणु पर्यवसानवाळुं [अन्ते रहंतु वा थोलांतु होवाथी पर्यन्तस्थानीय] छे, वळी अे प्रमाणे (जेम अेक बेने सहशता छे तेम) त्रण अने चारने पण सहशता छे अने ते सहशता स्थान विशेषमां कहेली छे [=नगर विगरेमां मार्गने अंगे सिद्धान्तोमां कहेली छे], जो के कोई स्थाने नगरमां ये मार्गादिक होय छे, अने तेथी द्विमार्गादिकनो पाठ कहैवो जोरिये छतां पण तियचउक्कचवरचउम्मुह इत्यादि सूत्रपाठमां त्रिक अने चतुष्टुंज सहचारी पणुं देखाय छे, परन्तु येतुं सहचारिपणुं देखातुं नथी शब्दशास्त्रमां पण त्रिचतुरोः अेज सूत्र कहैछे होवाथी, तेमज ज्योतिष शास्त्रमा पण चतुर्थनी [चोथ तिथिथी] भद्रा कृष्णपक्षनी त्रीजमा अन्त पामती कही छे, वेदोमा पण त्रणपणु तथा चारपणु (सहचारी) कछुं छे, त्यां 'त्रयीव नतिंग गुणेन विस्तर इति श्री हर्षः, चउणह्वेयाणं सारण-इतिसूत्र तथा वर्णोमां पण त्रणपणु

- १ विभक्ति विगरेमा त्रण वस्तु माटे बहु वचनना प्रत्ययो लागे छे.
- २ त्रण मार्ग ते त्रिक, चार मार्गवाळुं स्थान चतुष्क, चत्वर जागणु विगरे अने चतुर्मुख पण चार मार्गनुं स्थान विशेष छे.
- ३ अगना गुणवडे पामेला गुणविस्तारने जाणे त्रिरूपतानेज पामी होय अेवी, अर्थात् गुणत्रण छे सत्वगुण-रजोगुण-तमोगुण. जेथी शरीर पण अे त्रणे गुणने पामेछु छे. अेवी कोई स्त्री अंगे अे वाक्पय संभवे छे. अथवा चालु विषयने अनुसारे " वेदत्रयाने पामेली शरीरवाळी " अे अर्थे त्रण संभवे.
- ४ चार वेदोनो स्मारक-संभाराने रक्षण करनार.

५ अे प्राकृतद्वय जैन सिद्धान्तोमा उत्तम विप्रना वर्णन प्रथमे आवे छे.

અને ચારપણુ સરચારી છે, ત્રિવ્રણવર્ણસ્ત્રય. — ઇતિ ત્રિપુરાસ્તવમા (ત્રિપુરા વેદીના સ્તોત્રમાં) કહ્યું છે અને ચાર વર્ણ [ક્ષત્રિયાદિ] તો પ્રસિદ્ધજ છે તથા [પુરુષાર્થમા પળ ઘ્રણ તથા ચારનુ સરચારીપણુ છે તેમાં] ધર્મ અર્થ કામ એ ત્રિવર્ગ રૂપ ઘ્રણ પુરુષાર્થ, અને મોક્ષસહિત ચાર પુરુષાર્થ ઇતિ કોશ વચનાત્

એ પ્રમાણે ૫ તથા ૬ ના અક્ષર એકપણું પળ દ્રષ્ટાન્ત સહિત જાણવું, તે આ પ્રમાણે—કઈકસ્થાને રસ પાચ કરેલાય છે, તેમા લવણરસભેદની વિવક્ષાયે છ રસ પળ કરેલા છે, એ પ્રમાણે ઇન્દ્રિયો પાચ છે, પળ તે સામે તેના વિષયોનો ? ભેદ ગણતા છ ઇન્દ્રિયો પળ ગણાય છે, એ પ્રમાણે એ સરલા છ કહ્યું છે કે—પચેન્દ્રિયાણિ ત્રિવિધ ચલચં [પાચ ઇન્દ્રિયો અને મન વચન કાય ચલ એ ઘ્રણ ચલ], પઢિન્દ્રિયાણિ પઢવિષયા—[છ ઇન્દ્રિયો તે છ પ્રકારના વિષય, અર્થાત્ પાચ ઇન્દ્રિય અને છટ્ટો વિષય], ઇતિ કેશવ. અને એ કારણથીજ હિન્દુમતમા [હિન્દી લિપીમા] પાચના અક્ષરો અને છ ના અક્ષરો બનેલી આકૃતિ લગભગ એક સરલા છે વઢી પક્ષા પચમ પઢેકે [=પાચમા અને છટ્ટા અક્ષરો વચ્ચે આકૃતિ છે] એમ કહ્યું પળ છે માટે ૫ અને ૬ એ એ અક્ષરો સહસ્રપણુ છે— ઇતિ તાત્પર્યઃ]

ત્યે ૭ અને ૮ એ એ અક્ષરો એકત્વ—સાહસ્ય દર્શાવાય છે—સત્તટ્ટ પયાહ અણુગચ્છેઈ તથા સત્તટ્ટ ભવગ્ગર્ણોઈ તથા સત્તપુઢચીઓ પલાત્તોઓ

- ૧ જે પાઠમા ત્રિવિધ ચલચ એટલો પાઠ ગાથાના સવધ માપથી કહ્યો છે, એથી અહીં એ ઘ્રણ ચલની ગણતરી કરવી નહીં.
- ૨ હિન્દી લીપીમા ૬ છગડાની આકૃતિ ૬ એવી છે, અને યવનલીપીમા ૫ અથવા ૬ એવી છે
- ૩ [ગુરુત્વા હોય તે વચ્ચે શિષ્ય] ૭-૮ પગલા ગુરુની પાછલ જાય
- ૪ (પચેન્દ્રિય સહિ વિવેચ તથા સહિ મનુષ્ય વારવાર પોતાના મવમાં ઉત્પન્ન થાય તો ઉદ્દરથી) સાત અથવા આઠ મવ મુથી ઉત્પન્ન થાય, ત્યારબાદ અવશ્ય અન્ય મવમાજ ન્ત્યન્ન થાય.

વિગેરે સાત પૃથ્વીઓ (અનુક્રમે નીચે નીચે) કહેલી છે.

अने कोईस्थाने अष्ट पुढवीओ इत्यादि गमक सूत्रो [सूत्रना आलापक]
रुहा छे तथा ज्योतिषमते अष्टमीनी भद्रा कृष्णपक्षनी सप्तमीमां अन्त
पामे छे तथा अतिवक्रा नगाष्टमे अे प्रमाणे ७-८ अंकनुं अेकत्व छे,
अेम जाणवुं

ह्वे ९ तथा १० अंकनुं अेकत्व दर्शावाय छे ते आ प्रमाणे—नवमे
दशमे भानौ, जायते सरला गतिः [सूर्य नवमे अने दशमे (लग्न-
कुंडलीमां) होय तो तेनी (जन्मेला मनुष्यनी) सरलगति थाय छे].

प्रश्नः—अे प्रमाणे ५ अने ६ ना अंकनी सहजता भले होय, परन्तु
उभयार्थ पणु [५ मां पांचनो अने छनो अर्थ तथा ६ मां पांचनो अने
छनो अर्थ अेम वझे अर्थ] केवी रीते होय ?

उत्तरः—जो तमो अेम पूछता हो के उभयार्थ केवी रीते होय ? तो
दर्शावाय छे के अेक लकार पण जेम “अनिल” शब्दमां वायुना नामथी
सहज रीते उच्चराय छे तेम तेज अेक लकार “अनल” शब्दमा अग्निना
नामथी अन्य प्रयत्न बडे पण उच्चाराय छे. अथवा योगी योद्ध इत्यादि
शब्दोमां जेम स्पष्ट उच्चारबडे य कार उच्चराय छे तेम नियोगी
नियम इत्यादि शब्दोमा अस्पष्टपणे उच्चाराय छे अेम जाणवुं, तथा
अे प्रमाणे व कारमां पण जाणवु तथा सदृत्त अेवो पण अंकार प्रक्रिया-
नियोगथी [प्रक्रिया वशथी] विवृत्त गणाय छे, अने प्रत्याहारने अर्थ
उच्चारण अर्थवांछो होवा छनां पण सानुनासिक गणाय छे, तेथी अर्थना
वशथी विभक्ति परिणामेनी पेठे अंकनी पण गणत्री नियोगथी [अर्थ-
वशथी] अेकत्व वाळी अथवा अेरुत्व रहित (=अे अंकनी सहजता अथवा
असहजता) विचारवी, जेम वार आदिकनी पेठे अथवा कारको
[छ कारक] जेम विवक्षाथी [सदृश असदृश अर्थ दर्शावनारा] होय

१ प्रत्याहारमा ग्रहण करता अक्षेरानो वाचक होवा छता पण

२ सदृशस्वरूपवाळी होवा छतां पण तेज पहली विभक्ति अने बीजी विभक्ति ना अर्थमा
अथवा पंचमी तथा पटीना पण अथमा जूदी जूदो जणाय छे.

३ अदि विप मक्षणा दि बाध करता वैरुप्यनी अतर्भावनाथी तो
कार्य थाय छेज अेवो

છે, તેમ અર્હિં પળ ૬ ના અંકમાં ૫ ની વિવક્ષા કરવી થઈ અનુસ્વારમા સિદ્ધાન્તકૌમુદિયે સ્વરસજ્ઞા માની છે, અને હેમવ્યાકરણના મતે “ક” આદિ વ્યંજનના અશ્રયથી વ્યંજનપણુ માનેલુ છે જેમકે—

ભુવણાનિ નિવધ્નીયાત્, ત્રીણિ સત્ત ચતુર્દશ ।

ચતસ્રઃ કીર્તયેદ્વાષ્ટો, દશવા કકુભઃ ક્વચિત્ ॥ ૧ ॥

અર્થ!—ભુવનો કોઈ સ્થાને ઘ્રણ (=ઘ્રણ ભુવન) કહ્યા છે, કોઈ સ્થાને સાત ભુવન કહ્યા છે અને કોઈ સ્થાને (કોઈ શાસ્ત્રમા) ચૌદ ભુવન પણ કહ્યા છે તેમજ દિશાઓના સંબંધમા પણ કોઈ ગ્રંથમાં ચાર, દિશાઓ ગણી છે, કોઈ ગ્રંથમા ૬ દિશાઓ ગણી છે, અને કોઈ ગ્રંથમાં, દશાદિશાઓ પણ ગણી છે ॥ ૧ ॥

તથા સમુદ્ર સજ્ઞાથી સમુદ્રોને કોઈ ગ્રંથમા ચાર ગણ્યા છે, અને કોઈ ગ્રંથમા સાત સમુદ્ર પણ ગણ્યા છે તેમજ સ્વરોના સવધમા પણ કોઈ સ્થાને ઘ્રણ અથવા પાંચ અથવા સાત અથવા ચૌદ અથવા નવ પણ સ્વરો પણ ગણ્યા છે, એ પ્રમાણે સર્વસ્થાને સર્વ ગ્રંથોમા જે સ્થાને જેવી વ્યાખ્યા ઘટે તે સ્થાને તેવી વ્યાખ્યા સર્વ પડિતોને સમ્મત હોય છે, તેમ અર્હિં પણ સદશ અસદશના કરણથી (૫ તથા ૬ ના અંકમા એકત્વ અનેકત્વની ભાવનાથી) સદશ પળા વડે [પાચનો અક પણ ૬ સદશ છે, અથવા ૬ નો અંક પણ ૫ સદશ છે અથવા લુપ્ત થયેલો ૫ નો અક પણ કોઈ વપતે સ્વકાર્ય કર્તા છે એમ વિચારીને] આ વિંશતિ આદિ સર્વે યંત્રો વિસંવાદ રહિત જાણવા

અથવા જેમ છદઃ શાસ્ત્રમા લઘુ અક્ષર પણ પાદને—ચરણને (શ્લોકના પહેલા ચરણને) પર્યન્તે હોય તો ગુરુ ગણાય છે, અને અહીંદિ ગણમાં સયોગપર વડે [અગ્રે ઓવેલા સયુક્તાક્ષર—જોડાક્ષર વડે ગુરુ અક્ષર પણ લઘુ ગણાય છે, કારણ કે શાસ્ત્ર પ્રવૃત્તિ અનિષ્ટ અર્થવાહી હોતી નથી એ ન્યાય છે, માટે તેવી રીતે અર્હિં યત્રમા પણ તે તે ઓકોની સદશતા વિચારીનેજ નિર્વાહ કરવો [=અવિસવાદ પણુ, જાણવુ, કારણ કે [જે સત્ છે તેનીજ ગતિ વિચારવી] એ ન્યાય છે.

छे ऐम मानीनेज सतोप करवो, परंतु शास्त्र विरोधना विवादो बडे अकोनी भावना न करची कारणके यत्रोमा अकन्यासनी धीजी कोई गतीज नथी

ऐ प्रमाणे विंशतिनो [२० अकनो] नव गृह , नव राना] वाळो यन्त्र वर्तमानकाळमा पण जेनी सेवा अभयने आपनारी अने जयने आपनारी छे, तेनी सेवामा आसक्त रक्त थपेला अेवा देर बडे अनुपयत (देवाधिष्ठित) छे, तथा विजय विधिनु निधान छे, दुर्जनोने तर्जना स्प छे, अेवो आ अर्जुन पताका नामनो विंशति यत्र वैभवनो हेतु धाओ ॥ १ ॥

प्राचीन पडितोअे आ यत्रोमा (नव रानावाळा यत्रोमां) धीजो भाग करवाची शेष अेक रथे छते पण [कून=४ गुण=३ अटले] चौत्रीसनो यत्र करेलो छे, अने ते शेष रहेता पण (१२=० धाण=५ अटले) पचासनो यत्र करेलो छे, मोटे ते पडितोना मार्गने अनुसरनारी बुद्धिवाळा अने उपाध्याय पद प्रतिष्ठित अेवा श्रीभेच विजयजी उपाध्याये आ विहरमान जिननो विजयकारी अथवा विजय नाम नो विंशति यंत्र स्पष्ट कर्यो छे-प्रगट कर्यो छे ॥

॥ इति श्री विजययन्त्रे विंशति यन्त्रन्यासः ॥

११	३	८
५	७	१०
६	१२	४

११ ॥२२॥

११	३	९
५	८	१०
७	१२	४

१४ ॥२३॥

११	८	९
६	८	१०
७	१२	५

॥२४॥

१२	४	९
६	८	११
७	१३	५

१४ ॥२५॥

१२	४	१०
६	९	११
८	१३	५

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

॥२७॥

१३	५	१०
७	९	१२
८	१४	५

२७ ॥२८॥

१३	५	११
७	१०	१२
९	१४	६

२० ॥२९॥

१३	६	११
८	१०	१२
९	१४	७

॥३०॥

१४	६	११
८	१०	१३
९	१५	७

३० ॥३१॥

१४	६	१२
८	११	१३
१०	१५	७

३३ ॥३२॥

१४	७	१२
९	११	१३
१०	१५	८

॥३३॥

१५	७	१२
९	११	१४
१०	१६	८

३३ ॥३४॥

१५	७	१३
९	१२	१४
११	१६	८

३६ ॥३५॥

२०	१२	१८
१४	१७	१९
१६	२१	१३

५१ ॥५०॥

७	ॐ	५
२	४	६
३	८	१

॥१२॥

कमलकृति

२	४	१
३	१०	७
९	६	८

॥२०॥

दशगतिका

३॥	१०	११
२॥	५	७॥
८॥	नाम	६॥

॥१५॥

३	८	१
२	४	६
७	नाम	५

॥१२॥

३॥	१०	११॥
३	५	७
८॥	नाम	६॥

॥१५॥

४॥	१२	११॥
३	६	९
१०॥	नाम	७॥

॥१८॥

४	१२	२
४	६	८
१०	नाम	८

॥१८॥

४॥	१४	२॥
५	७	९
११॥	नाम	९॥

॥२१॥

५॥	१४	११॥
३॥	७	१०॥
१२॥	नाम	८॥

॥२१॥

२ अर्हि अे ३४ तथा ५० नो यत्र प्रधान छे चोरीसना यत्रमा त्रिभागे ११ थया तेमाथी चार न्यून करता हमा स्थाप्या छे तथा पचीशिनो श्रीजे भागे १६ प्राप्त थया न्यून करता १२ बीजी गृहमा

१ पुष्पाकृति

१	१२	७
९	६	५
१०	२	८

२०

२	१६	९
१२	८	४
१०	नाम	१४

॥२४॥

५	१६	२
६	८	१०
१२	नाम	११

॥२४॥

८	३	५
२	४	७
३	९	१

१२ ॥१३॥

पद्मद्विगुणा

८	३	६
२	५	७
४	९	१

१५ ॥१४॥

७	१०	१५
२	५	१२
३	९	६

१२

पद्मद्विगुणा

७	१०	१५
२	५	१२
३	९	६

१२

प्रथम करण

३॥	१०	११
२॥	५	७॥
८॥	नाम	६॥

१५

द्वितीय करण

३॥	१०	११॥
२	५	७
८॥	नाम	६॥

१५ यत्रभिद

शुद्ध उत्तम

१	९	१२
२	१०	८
१५	४	९

२०

माद्यमे उत्तम

१७	२	१
४	१०	९
९	८	१२

२०

१ पुष्पाकृतिमा ५ ना द्विगुण १० मा १० मेळव्ये [५-२-१० थी] २० थया. पुन' ६×२=वार मा ८ मेळव्ये २० थया. अे षे गति, अने उर्ध्व ३ गति तथा आयत दीर्घ त्रण गति (१०-९-१ | २-६-१२ | ८-५-७ | ९-६-५ | १०-२-८) अे ६ गति प्राप्ति छे पुन ६×२ वारमा ७-१ मेळवता २०। अथवा १२-८ मेळवता २०। अथवा ८-५-६-१ मेळवता २०। अथवा १०-२-७-१ मेळवता २०। अे प्रमाणे १२ गति थाय छे.



अथ इष्ट यन्त्रे अकन्यास रीति ॥ ८ गृहात्मिका ॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभाग-

स्त त्र्यशकस्यापि तुरीयभागः ।

गुणा ३ विधि ४ भू १ मध्य ५ नवां ९ ग ६ सप्त ७ ।

भुजे २ पुधार्यः कृत ४ भागवध्या ॥ १ ॥

अर्थः-इष्ट राशिनो (जेटला अंकनो यंत्र बनाववो होय ते अंकनो) त्रीजो भाग करवो. [अने मध्यमा स्थापवो]. ते त्रीजा अंशनो पुनः चौथो भाग गुण=३, आवधि=४, भू=१, मध्य ५, नव=९, अंग=६, सप्त=७, अने भुज=२ अे नंबरवाळा आठ गृहोमां क्रमणः (बारना) चौथा भागनी वृद्धि सहित [मध्याकना चौथा भागनी वृद्धि सहित] अंकस्थापना करवी (अे आठ गृहवाळा यत्रमां अंकस्थापना दर्शावी छे) ॥१॥इति प्रथमा रीतिः॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभागः ।

समध्यगस्त द्विगुणे द्वितीये ।

त्र्यंशाद्द्विहान्या जलघौ ४ द्विवध्या ।

षष्ठे तदर्धं पुनराद्य कोष्टे ॥ २ ॥

१ धारो के इष्ट राशि ३६ नो यंत्र आठ कोठामा बनाववानो होय त्यारे स्थापना आ प्रमाणे अहिं ३६ नो त्रीजो भाग १२ मध्यमा अेटले पाचमा

१	२	३
९	२४	३
६	१२	१८
२१	नाम	१५
७	८	९

गृहमां, ते बारनो चौथो भाग ३ त्रीजा गृहमा, तेमा पुनः बारनो चौथो भाग त्रण अधिक करवाथी ६ चौथा गृहमां, तेमा पुनः बारनो चौथो भाग त्रण उमेरतां ९ पहिला गृहमा, तेमा पुनः बारना चौथा भाग त्रण उमेरतां १२ मध्यमा स्थापेलाज छे. पुनः तेमा बारनो चौथो भाग त्रण उमेरता

१५ नवमा गृहमां, पुनः तेमा बारनो चौथो भाग त्रण उमेरता १८ छट्टा गृहमा, पुनः तेमा बारनो चौथो भाग त्रण उमेरता २४ बीजा गृहमा, पुनः तेमा बारनो चौथो भाग त्रण उमेरता ३६ नो यंत्र स्थापनो.

તુરીય કોષ્ઠાર્થ મધો તૃતીયે । શેષેચ શેષં પ્રવિચાર્ય ધાર્યમ્ ॥
સમૈક સામ્ય વિપમેર્ધપાદ પાદોનરીત્યાષ્ટ સુકોષ્ઠકેપુ ॥ ૩ ॥

અર્થ:-૬૪ રાશિનો ત્રીજો ભાગ કરવો, તે મધ્યગૃહમાં સ્થાપવો, અને તેથી [મધ્યગૃહના અંકથી] દ્વિગુણ અક ધીજા ગૃહમાં સ્થાપવો તે ત્રીજા ભાગથી દ્વિતાનિ (દ્વિગુણહીન એટલે અર્ધ) અક [જલધિ=૪ એટલે] ચોથા ગૃહમાં સ્થાપવો અને દ્વિવૃદ્ધિ (ચોથા ગૃહના અંકથી દ્વિગુણ અધિક અર્થાત્ ચતુર્થ ગૃહાકને દ્વિગુણ કરી તેજ ગૃહાકમાં અધિક ઉમેરો તેટલો અક છટ્ટા ગૃહમાં સ્થાપવો, અને એજ છટ્ટા ગૃહના અંકથી અર્ધ અક પરેલા ગૃહમાં સ્થાપવો, તથા ચોથા ગૃહના અંકથી અર્ધ અંક ત્રીજા ગૃહમાં સ્થાપવો, અને શેષ ગૃહોમાં [શેષ થે ગૃહમાં] ધાત્રીના અક ગણત્રી વિચારીને [૬૪ રાશિ પ્રાત્ ધાય તેત્રી રીતે તેટલા અક] સ્થાપવા તેમાં જો સમ અક આવે તો ગૃહોમાં સમ અક સ્થાપવો, અને જો વિપમ અંક હોય તો તેમાં અર્ધ ચોથો ભાગ અથવા પોણો ભાગ સ્થાપવો, એ રીતે આઠે ગૃહોમાં અક સ્થાપવા ॥ ૨ ॥ ૩ ॥ इति द्वितीया रीतिः ॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभागः ।

समध्यगस्त द्विगुणो द्वितीये ॥

त्र्यशार्धं मध्वौस रसे ६ च सार्धो ।

रसा ६ र्धं माद्ये च १ गुणे ३ कृता ४ र्ध ॥ ४ ॥

યથા ત્ર્યશે ૬૪સ્ય પદ્ ત્રિંશદ્રાશે ૩૬ દ્વાદશ ૧૨ તદર્ધ પદ્ ચતુર્થ કોષ્ઠે સ પ્ચત્વશ ૧૨ સાર્ધ ગુણ ૧૮ પષ્ટ કોષ્ઠેદેય', પષ્ટકોષ્ઠાર્થ પ્રથમેદેય, તુર્યકોષ્ઠાર્થ તૃતીયકોષ્ઠે ધાર્યમિત્યાદિ ગગાપવારે ॥

અર્થ:-૬૪ રાશિનો ત્રીજો ભાગ કરવો, અને તે મધ્યગૃહમાં સ્થાપવો, ધીજા ગૃહમાં તેથી [મધ્ય ગૃહથી] દ્વિગુણ અક સ્થાપવો, [અબ્ધિ=૪

૧ ઓ વિજી રીતિ પણ આ સ્થાપેલા ૩૬ ના યત્ર ઉપરથી વિચારત્રી સુગમ છે.

૨ પ્રથમ સ્થપાઈ ગયેલા થે પ્રકારના પદરીયા અને એક અદારના યત્રમાં જે રીતે પા પોણા ભાગ યથાયોગ્ય સ્થાપ્યા છે તદ્વત્

પુનરપ્યપ્તેઽકારે । માત્રાકૈકસ્ય મેલને ।
જાતઃ સનવકોસાગ્રે । રેફેઽપ્ટૌનપ્ટ ચક્રત ॥ ૮ ॥

વ્યજનેત્વાત્તદૈકોન- ભાવેમધ્યગ સતક* ।
હકારેઽગ્રે કૃતઃ મિતા-પ્રશ્નેશ્વર ધૃતધ્રુવાત ॥ ૯ ॥

શેષગ્રાગ્વદિહાપિસ્યાત્ । તૃતીયાલિસ્થિતૌપુન* ।
* સમાત્રાકા વકારે ઢૌ । જજ્ઞેતેન ત્રિકોગ્રિમ ॥ ૧૦ ॥

અર્થ:-ચઢી ઘીંઝી રીતે પળ ત્રિચારીએ તો અકારમા ૮ નો ધ્રવાંક છે, તેમા “અ” કાર માત્રાવાઢો છે માટે માત્રાનો એક અક મેઢવતાં ૧ ધયા તે નીચે સ્થાપવા, તે “અ” ની આગઢ પુન* ૧ રેફ છે, તે રેફનો ધ્રુવાક નપ્ટચક્રમા ૮ નો કણો છે, પરન્તુ રેફ પોતે વ્યજન હોવાથી એક ઘાદ કરતાં ૭ નો અક પ્રાપ્ત થયો તેને [વિંશતિ યત્રના] મધ્યગૃહમા સ્થાપવો તે રેફની પઢી હ કાર આવ્યો તેનો ૪ ધ્રુવાક પ્રશ્નેશ્વર ગ્રથમા કણો છે માટે તે ચારને ૭ ની પઢી [પશ્ચાત્] સ્થાપવ શેષ ગૃહો યાકી રહ્યા તેને વીસનો મેઢ મલે એવા અકોથી પૂરવા એમ પૂર્વે કણું છે તેમ અહિ પળ જાણવુ, ચઢી ત્રીઝી પક્તિમા રહેલા માત્રા સહિત અકવાઢો ઘે અકાર છે માટે તેને પઢીનો-નીચેનો અક [૧ અધિ+કરવાથી] ૩ નો પ્રાપ્ત થાય છે ॥ ૮-૯-૧૦ ॥

૧ અર્ધિ અર્ધમ્ પદથી વિંશતિ યત્ર કરવાનો છે, ત્યા અર્ધમ્ પદમા અ ૧ હ અ એ અર્ધિ પક્તિ

૧	૨	૩
૧૦	૨	અ ૮
૬૪	૮	અ ૯
૮૬૫	અ ૧૧	અ ૩

અકસ્થાપન ગતિનો ક્રમ પ્રથમ ___ । એ આકારે ઘર્ષે ને પુન-
એ આકાર થયો એ ચન્ને ક્રમ જમણી ઘાજુથી પ્રારભર્ષિને ઢારી ઘાજૂ પૂર્ણ થાય છે, એમા ત્રીઝી પક્તિનો ઝળ ગૃહ જૂદા જૂદા અ કારવાઢાં છે, અને શેષ ગૃહમાં ૨ કાર વિગેરે ઢર્શાવ્યા છે, તે પ્રમાણે શ્લોકાર્થને અનુસારે ૨૦ નો મેઢ વિચારવો.

૨ અર્થાત્ પહેલો ઉપરનો અ માત્રા સહિત હોવા છતા માત્રાનો અક ગણ્યો નથી અને પોતેના અ પળ માત્રા સહિત છે તેનો માત્રાનો અક ગણાયેઢો છે, ઝેથી ૧ માત્રા અને મઢીને ૩ નો અક સર્વથી નીચે આવ્યો.

अंडत्यस्यर होऽत्यागा देकादशततो त्रिमा ।

रेफेद्रौहे कृत ४ मिता-स्तद्वोगे पट् निवेशिताः ॥ ११ ॥

रेफस्य व्यजनत्वे नै-कोनत्वे पंचत्रा स्थिताः ।

अहं पदाद्विशयंत्रं । मेघादि विजयोदितं ॥ १२ ॥

तथा अं [अहं मानो अ] २=७ तथा ह=४ ने नहि छोडीनो रद्या ठे
माटे ते [७+४=,] ११ नो अक अत्रे [अटले ३ नी] पश्चात् स्थापवो
तथा रेफनो २ अने ह नो ४ घृवांक छे, ते वे मळीने ६ वाय माटे ६ ने,
अंरु अगिआरनी पश्चात् स्थापवो बळी रेफ अे व्यजन छे, माटे अेक
न्यून करवाथी ५ नो अक आवे छे, माटे ते पण ६ नी साथे स्थापवो अे
प्रमाणे श्रीमेघविजयजी उपाध्याये कहेलो २० नो यत्र अंरु पदथी सिद्ध
कयो. ॥ इति अंरु पदेन विशति यत्रम् ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ इत्यहं पदेन विशयंत्र व्यवस्था ॥

५	२४	३
६	१२	१८
२१	धारक नाम	१५
३६		

एकादयःस्यु नव यावदंकाः ।

यंत्रे यतः पच दश प्रासिद्धे ॥

द्वाद्या दशांता धृति यंत्रकेऽका ।

व्यक्तोऽधिके स्माद्भागितेर्थ भेदः ॥१३॥

॥ अथ विंशतियत्रे ३ तः ११ अकहेतुः ॥

अर्थः-जे कारणथी १५ ना अरुथी प्रसिद्ध अवा यंत्रनां (पदरिया
यंत्रमां) १ थी प्रारंभीने ९ सुधीना अंक होय छे, अने धृति=१८ ना
यत्रमां वेथी दश सुधीना होवाथी अे गणितनो अ
होय छे ते पंदरियाथी अधिक-अज
छे ॥ १३ ॥

ક્રમાગતાકે ન વિલોપનંચે ।

ત્કથ તદેકા દશ ચાંકતઃસ્યુ ॥

દ્વયાધિક ત્વા જ્ઞપસુસ્થલેપુ ।

અકેતદેકત્ર કૃતોર્થ ભેદ ॥ ૧૪ ॥

એ ૧૫- તથા ૧૮ યંત્રમા (આવેલા ૧-૧ અંકો) અનુક્રમે આવેલા હોવાથી ક્રમ પ્રાપ્ત થયેલા કોઈ પણ અંકનો લોપ થયો નથી, પરંતુ ૨૦ ના યંત્રમા ક્રમે આવતા અક્રોમાથી એક અંકના લોપ કરવો પડે છે, અને જો તે ક્રમે આવતા અક્રોમાથી એક અક્રોનો લોપ ન કરીએ તો આદિ અક્ર ૨ નો હોવાથી અથવા એ અક્ર હોવાથી । એટલે પંદરીપાનો પર્યન્ત અક્ર ૧ ન્યારે વિંશતિનો પર્યન્તક્ર ૧૧ (એટલે ૨ થી ૧૧ સુધીના ૧૦ અક્ર) હોવાથી તે ૧૦ અક્રો નવ ગૃહોમા કેરી રીતે સ્થપાય ? તે કારણથી એક અંકમા અર્થ ભેદ કરવો પડે છે, [અર્થાન્ નવ સ્થાનામા દશ અંકો ન ગોઠવાઈ શકવાના કારણથી એક અક્રનો એક લોપ કરવો પડે છે] ॥૧૬॥

યંત્રેતદેકાધિક વિશવિદ્ધે ।

एकादशाता त्रिमुखाहितैकाः ।

एकोनतायामपि विंशयत्रे ।

विनार्थभेदं गतिरस्तिनान्या ॥ ૧૫ ॥

અર્થ -અને તે કારણથીજ એક અધિક વીસ [૨૧] ના યંત્રમાં ઘ્રણથી પ્રારંભીને અગિઆર સુધીના નવ અક્ર છે, જેથી તેમા અક્ર લોપ કરવો પડ્યો નથી, અને વીસનો યંત્ર એકવીસની અપેક્ષાએ એક ન્યૂન હોવા છતા પણ અકલોપ થાય છે, માટે વિંશતિ યંત્રમા અર્થ ભેદ વિના [અક્ર લોપ વિના] ધીજી કોઈ ગતિ નથી ॥ ૧૫ ॥

जघन्यभाषेनजिनादशस्यु । जिनद्वयवर्णभिदाऽष्टतेपि ॥

जिनाजलेशाष्टपुनरत्रसिद्धान् २४ गत्वात् उच्चैर्नग ७रज्जुदेशम् ॥ १६ ॥

अर्थः- (हवे विंशति घंत्रमां दश आदि अंको तथा तेनो क्रम स्थापवामां २४ तीर्थकरनी गणत्री दशावाय छे ते आः प्रमाणे—) जघन्यथी १० तीर्थकरोनो समकाले जन्म थाय छे, माटे प्रथम दशानी स्थापना, त्यार बाद थे आठ तीर्थ करो [=सोल तीर्थ करो] घर्ण भेदथी छे [सुवर्ण वर्णना छे] माटे २ तथा ८ नो अंक स्थापवो. त्यार बाद जलेशाः = ४ तीर्थकर गणतां सिद्ध=ते चोवीसे तीर्थ करो उच्चलोकमां नग ७= रज्जु उंचे जईने सिद्ध थया माटे ७ नो अंक स्थापवो. ॥ १६ ॥

ध्येया इतोऽमी नवभेद मुक्त्वा ।

मूर्ध्नित्रिलोक्याः शिव ११ शर्मभाजः ॥

पद् ६ पंचवा ५ केवल बोध दृष्ट्या ।

द्रव्याणि नित्यं परिभाषयंतः ॥ १७ ॥

अर्थः-त्यारबाद अे चोवीसे सिद्धनुं स्वरूप मोक्षना नव भेद वडे (सत्प-दादि नव अनुयोगद्वारवडे) ध्येय-भाववा योग्य छे, माटे ९ नो अंक स्थापवो, तथा त्रण लोकने मस्तके शिवशर्म=शिवसुखने भजनारा थया, माटे (शिव=) ११ नो अंक स्थापवो, (परन्तु मोक्षे जवा पहेलां) ते तीर्थकरो केवल ज्ञान अने केवल दर्शन वडे नित्य छ अथवा पाच द्रव्यनी परिभावनावाळा (ध्यान वा उपदेशवाळा) हता तेथी [अग्नि-आरना अंक पहेलो] ६ अने ५ नो अंक स्थापवो (जेथी प्रथम ६ नो मुख्य अंक स्थापने गौणपणे लुप्त करेलो ५ नो अंक पण स्थापवो. त्यार बाद ११ नो अंक स्थापवो ॥ १७ ॥

अप्रदेशतयाऽस्कंध-भावाद्द्रव्याविवक्षया ॥

कालः स्याद्द्रव्यपर्यायो । द्रव्यपंचकमेवतत् ॥ १८ ॥

अर्थः- [छ तथा पांच द्रव्यनुं कारण आ प्रमाणे—] — काळ द्रव्य प्रदेश रहित होवाथी स्कंध रहित छे (अर्थात् काळ द्रव्यनो स्कंध नथी तेम प्रदेश पण नथी) न द्रव्यनी विवक्षा न करवाथी, द्रव्य पर्याय रहित [द्रव्य रहित] छे. जेथी द्रव्य

गणाय छे [त्वारत्राद ३ ना अंकनी स्थापनानु कारण स्पष्ट कर्तुं नयी ते यथा संभव सतः विचारयु] ॥ १८ ॥

चत्वारो ४ दश १० च द्वो २ ता-वष्टे ८ ति स्फुटिकांचले ॥

तीथे जिना स्थिता त्रिंशे-स्तदंके विंशत्यत्रकम् ॥ १९ ॥

अर्थः-अथवा बीजी रीते विचारता (स्फुटिकांचले तीर्थे =) अष्टापद तीर्थे उपर ४-१०-२-८ तीर्थकरानी प्रतिमाओ रहेली छे, माटे ते चोवीस प्रतिमाओना अरु सहित जा विंशतित्रय थाय छे ॥ १९ ॥

प्राच्यां जैनं द्वय तत्र । दक्षिणस्यो चतुष्टयम् ॥

उदगोत्तरे ईशान-देशे दश जिना स्थिता ॥ २० ॥

अर्थः-त्यां अष्टापद पर्वत उपर पूर्वदिशामा २ तीर्थकर, दक्षिणमां ४ अने उत्तर दिशा पासे ईशान दिशामा १० जिनेश्वरो रक्षा छे ॥ २० ॥

प्रतिच्यामष्ट चाग्नेय्या-मिहतेपि प्रसगतः ॥

पूर्व देश जनुर्मुक्त्यो-र्थदिवाऽभ्युदयश्रियाः ॥ २१ ॥

अर्थः-तथा पश्चिममा ८ जिनेश्वरो कक्षा छे, ते अहिं प्रसंगने अनुसरे अग्निफोणमा गणवा कारणके " पूर्वदेशमा जन्म अने मोक्ष यवा वडे " छे अर्थथीज अभ्युदित लक्ष्मीवाळा [अे ८ जिनेश्वरोने पूर्व तरफला अग्निफोणमा गण्या छे] ॥ २१ ॥

पद् ६ संसा ७ दिगतो वाष्ट ८ ।

त्रि ३ वाध्या ४ दिगतौतत ॥

अष्टाप्राचीप्रतीच्योस्ते-

प्यंतराले प्रतिष्ठिता ॥ २२ ॥

४ नो अरु उत्तरमा आवेछे,

अर्थ:-तथा छठी सातमी आदि गतिमांथी ८ जो अंक छे, तथा त्रीजी चोथी विगेरे गतिमां पण आठनो अंक छे तेथी अे आठनो अंक वा जिनेश्वरो दक्षिण अने पश्चिम दिशिने वच्चे पण रहेला गणवा ॥ २२ ॥

उत्तमा क्षत्रिय गतिः । पद् सप्तम्या ततःस्मृता ॥

पद्माकृतौ विंशयत्रे । तथैवाष्ट निवेशिताः ॥ २३ ॥

अर्थ:-क्षत्रिय गति उत्तम छे, तेथी छ अथवा सातथी प्रारंभिने (पूर्वमां ६ अथवा ७ नो अंक स्थापीने) विंशति यंत्र होय छे, अने ते कारणथीज पद्माकृतिवाळा विंशति यंत्रमां पण ८ नो अंक तेथी रीतेज [अटले ६-७ नी वच्चेज] रहेलो छे-स्थापेलो छे ॥ २३ ॥

यद्यप्यंक परावृत्तिः । गतिभेदेन दृश्यते ॥

नास्तिदिग् निश्चयःप्रोक्त । स्तथाप्येषा व्यवस्थितिः ॥ २४ ॥

अर्थ:-जो के गतिभेदोथी अरुपरावृत्ति देखाय छे तेथी [अटले भिन्नभिन्न गति बडे स्थपाना विंशति यंत्रोनां अनुक अंक अमुक गृहमांज रही शके अेवो] दिशिनो निश्चय कछो नथी, तो पण विशेषतः आ आगळ करेवाथी व्यवस्था निश्चित करे छे ॥ २४ ॥

पक्षा २ हि ९ सिधु ४ शैला ७ दि-रुत्तमा ब्राह्मणगतिः ॥

अनुरोधदियंतस्या । प्रतिष्ठाकेपुनिश्चिता ॥ २५ ॥

अर्थ:-पक्ष=२ अहि=९ सिंधु=४ शैल=७ इत्यादि क्रमवाळी ब्राह्मणगतिज उत्तम छे, माटे ते अनुरोधथी [ते ब्राह्मणगतिने अनुसरिने] अंकाने विषे अेज प्रतिष्ठा-स्थापनक्रम (पूर्वमां २ दक्षिणमा ९ उत्तरमां ४ मध्यमा ७ इत्यादि घणीवार वर्णवायेलो-क्रम)-निश्चित ययो छे, ॥ २५ ॥ इति विजययत्रे विंशति यंत्रांकप्रतिष्ठा ॥ इति अंक हेतुः ॥

१ प्रथम वीस प्रकारनी गतिओ छे तेमानी गति अथवा (इशानमा ६ वा ७, यी प्रारभावी क्षत्रियगति, तैस्य गति, इत्यादि.

इति विजययंत्रे विंशति यंत्रांक प्रतिष्ठा

१०	२	८
२	४	६
४	७	९
६	९	१०
९	११	३
११	३	८

६	४	१०
५	४	१०
११	७	२
२	९	८

६	११	३
४	७	९
१०	२	८



उ ह २०

वै म २०

ईशानेशदिगी १० श्वर स्थितिरपि स्वागेपिपंचानन-
द्वैगुण्याद्वय द्वयमर्ध तोद्वितनया रोधे न हंसद्वयात् ॥
अष्टौसिद्धय एव मूर्तयइवांभोराशिनिर्मथन ।

सप्रावा नवनेत्र पट्ट भुजधरस्यास्मात् ज्वरस्योद्भव. ॥ १ ॥

अर्थ—ईशान दिशामा १० नो अंक ते ईश्वरनी-महादेवनी शरीरसंबंधि
दशस्थिनीने सूचव नारो छे, कारण के महादेवनु पंचानन नाम होवाथी
पच मुख छे, अने अर्धांगमा पार्वती होवाथी से शरीर महादेवना धयां
तेथी पाचने घमणाकरतां १० स्थिति धई तथा अर्धांगे पार्वती होवाथी
महादेव द्विरूप धवाथी दश पछी २ नो अक आवे छे तथा आठ सिद्धि
अज जेनी आठ मूर्ति जेवी छे, तेथी ८ नो अक आवे छे, तथा अभोराशि
=समुद्रनु मथन क्युं तेथी समुद्र साधनी सरयाअे गणाता होवाथी ७ नो
अक आवे छे, तथा अेनाथी नवनेत्र अने छ भुजा बाळा ज्वर (
नी उत्पात्ति होवाथी (त्रिमूर्ति होवाथी) नव नेत्र अने छ भुजान.
अपेक्षाअे ९ तथा ६ नो अक आवे छे, ॥ १ ॥

सरयेकादशहक्रयी विजयकृहानंजयस्यार्जुनेऽ-
व्यैश्वर्यार्थिषु विंशयत्र करणे ध्येयानि वस्तून्यत ॥

याजदूर गता रमापिपरमार्धांगीभवती स्थिरा ।

गहेतद्रहुघा भवेच्चयसुधाधीशोपिवश्यः स्वयं ॥ २ ॥

अर्थ:-महादेव अगिआर होवाची ११ नो अंक, विजयकारी अर्वां त्रपा त्रवाळा होवाची ३ नो अंक आवे छे ओ प्रमाणे अर्जुनने पण अश्वर्या/दिकमा जय आपनार आ यत्र छे, माटे विशतियत्र करणमां अे अे वस्तुओ ध्येय-ध्यान करवा योग्य छे, तथा गमे तेदली दूर गयेली उकूट लक्ष्मी स्त्री तुल्य अर्धांगना थाय छे, अने घरमां स्थिर थई रहे छे वळी अे यंत्रधी बहुधा (विशेषे करीनें) वसुधाधीश-राजा पण पोताने वश थाय छे ॥ २ ॥ इति विंशति यंत्रे महादेवावतरणम् ॥

वीरेवतारो दशमधलोकात् । व्रतं दशम्यां वरकेवलासिः ।

द्वैमातुरे धर्मयुग तथाष्ट-वर्षे महावीर पद प्रातिष्ठा ॥ ३ ॥

अर्थ:-श्री वीरप्रभुनुं अवतरण [च्यवन । दशमा देवलोकधी थयुं छे, वळी दशमीने दिवसे व्रतप्राप्ति तथा केवळ ज्ञाननी प्राप्ति थई छे, ते ध्येयधी १० नो अंक विचारवो श्री वीरप्रभुनी [देवानंदा अने त्रिशला अे] बे माता छे, अने [साधु धर्म तथा आवकधर्म अे] बे धर्म उप-देश्य छे ते ध्येयधी २ नो अंक विचारवो आठ वर्षनी घय धये [चाल-क्रीडा प्रसंगे वळणी परीक्षा करनारा देवे] “महावीर” अेवुं नाम स्थाप्यु ते ध्येयधी ८ नो अंक विचारवो ॥ ३ ॥

चतुर्मुखांगत्वमृषिप्रमाण-करांगता साधुगणाः नवापि ॥

पाण्मासिकी पंचदिनोनतसि-त्रैते शरापट् त्रितय चरित्रे ॥ ४ ॥

अर्थ:-देशना समये समवसरणमां चार मुख थाय छे, [ऋषिप्रमाण =] ७ हाथनु शरीर प्रमाण छे, सागुना नवगण छे, पाच दिवस न्यून छ मासनो तप कर्यो छे, पांच अथवा छ महाव्रतवाळा छे अने दर्शनज्ञान चरित्ररूप त्रण रत्नवाळा छे, अे कारणधी यत्रमां ४-७-९-६ वा ५-३ अे अंको ते ते स्वरूपे ध्येय छे. ॥ ४ ॥

पष्टे भवे पोष्टिलता पि

विश

स्तथैकादशतद्गणेश्वराः ।

यंत्रो दि सावन

अर्थ.-पाचमे अथवा छठे भये पोदिलना अंटेले पोदिलमुनि रता, जेवी
 अं रीते पण ५-६ नो अंक विचारवो तथा श्रीवीरप्रभुना अगियात
 गणधर हता, अने पूर्वभवमा वीस सागरोपमनु आयुष्यहतु तेथी अं रीते
 २१ ना अक सज्जित आ २० नो यत्र विचारवो, अं रीते उपर कहेला
 भावोनो निश्चय आ विंशति यंत्रथी विचारवो ॥ ५ ॥ इति विंशतिपत्रे
 श्रीमहावीरावतरणम् ॥

दशासुराद्या सुसदोद्धिधासेऽ-

ष्टौव्यतराः ज्योतिषिकाश्चतुर्धा ॥

ते नारका सप्त नरात्र तिर्यग्-

जाल्याश्च पंचेन्द्रिय देहभाज ॥ ६ ॥

अर्थ:-१० ना अरुथी असुरकुमारादि दश भयनपतिदेवो, २ ना अंकथी
 ते भयनपति [उत्तर निकाय अने दक्षिण निकायना अेम] ये प्रकारना
 ८ ना अरुथी आठ प्रकारना व्यन्तरदेवो ४ ना अकथी चार प्रकारना
 ज्योतिषी, ७ ना अकथी सात प्रकारना नारक, ९ ना अरुथी नव प्रकारना
 तिर्यंच [त्रण वेद वाळा जलचरादि त्रण गणता नव तिर्यंच], ५ ना
 अकथी ते तिर्यंचो विगेरे पचेन्द्रियजाति, ना जीवो छे अेम विचारवु ॥६॥

स्यु स्थानरा पंचवका, पृथक्त्वात् । प्रत्येक वृक्षेपिकलत्रयंच ॥

नरास्तयैका दशधेतिविंश-यत्रे प्रसिद्धि समयेपिसिद्धा ॥ ७ ॥

अर्थ:-अथवा प्रत्येक वनस्पतीने जूदी गणवाधी स्थावरो पांच [साधारण
 वनस्पति सहित] छे, तथा ३ ना अरुथी त्रण प्रकारना विकलेन्द्रिय,
 ११ ना अकथी अगिआर प्रकारना मनुष्य [अहिं आगळ कटेवाशो ते
 प्रमाणे] विचारवा अे प्रमाणे आ विंशति यत्रमा जे अक प्रसिद्ध छे, ते
 अंकनो भाव समयमा-सिद्धान्तमा सिद्ध-प्रसिद्ध छे ॥ ७ ॥

जलचर १ स्थलचर २ खेचरा ३ त्रिवेदा ९ नरा सप्ते क्षेत्रजाः

४ एव ११ ज्योतिष्काश्चनक्षत्रंतराणामभेदात् ॥८॥

अर्थः-उपरना श्लोकमां (६ द्वामां) तिर्यचना नवभेद कक्षा ते जलचर
 सलचर अने खेचर अे चणे चण चण वेढवाळा होवायी जाणवा. अने
 मनुष्यना अंगिआर भेद ते भरतादि ७ क्षेत्रना अने ४ अंगद्वारा
 जाणवा, तथा ज्योतिषीजो चार कक्षा ते नक्षत्र अने ताराणा अे भेद
 [अे घेने अेक गणीने कक्षा छे] ॥ ८ ॥

इतिकतिपययुक्ति व्यक्तिभिः विंशयंत्रं ।

दृढतरमपिभावात् सूत्रितं सद्गुणैः ॥

हठमतिशठाचित्ते नैतितत्त्वा-कथंचित्

सहृदयसुहृदांतु—स्तादतः शाश्वतश्रीः ॥ ९ ॥

अर्थः-अे प्रमाणे आ विंशति यंत्रने सद्गुणना समुहवाळ्ये केवळीक
 युक्तिओवडे भावयी अतिदृढपणे सूत्रित कयी [कर्णयो] हृ-
 कदाग्रहनी बुद्धिवाळा अेवा पठ पुरूपना चित्तमां तत्त्वयो कडराने म-
 थंतु नधी [अर्थात् शठना चित्तनां कड तत्त्व प्राप्त धतु नधे]. इत्यन्तु
 सहृदय-विचारशील अेवा बुद्धिमानोना हृदयमा तो तत्त्व मत्त वाच्ये ह-
 जेथी शाश्वतलक्ष्मी सिद्धी थाय छे ॥ ९ ॥

॥ पद्मावती स्तोत्रान्तर्गत विंशतियंत्रं ॥



भू१विश्व३क्षण६चन्द्र१चंद्र१पृथिवी१युग्मैक१२सरयाक्रमात् ।
 चद्रा१भोनिधि४वाण५पण्डनव९वसून् ८टिक्१०खे५चराइयादिपु॥
 ऐश्वर्यात्१रिपुमारी विश्वभयंद्दत् क्षोभातरायात् विपात् ।
 लक्ष्मी १ रक्षण २ भारती ३ गुरुमुखात् मत्रान् इमान् देवते ॥ १ ॥

इति पद्मावती स्तोत्रे

अर्थः-भू=१, विश्व=३, क्षण=६, चन्द्र=१, चंद्र=१, पृथ्वी १, युग्मैक=१२,
 अं संख्याना अनुक्रमधी चंद्र=१, अम्भोनिधि=४, वाण=५, पण्ड=६, नव=९
 वसु=८, अने दिग्=१० अने तिथी त्वे उर्ध्व आकाशमा [अटले १० नी
 उपर राशि=१२ विगेरे अंको स्थापचामा जे यंत्र घने छे] ते औश्वर्यवाढा
 यत्र लक्ष्मी प्राप्त धाय छे, तथा शत्रु अने मरकी विगेरे तथा सर्व भयोपी
 रक्षण धाय छे, तथा हृदयक्षोभधी अन्तरायधी अने विपधी पण रक्षण
 धाय छे तथा गुम्मुग्धी [वृहस्पतिना मुग्धी] वाणी धाय छे, अे प्रमाण
 लक्ष्मी रक्षण भारती प्राप्त धाय छे, तेधी हे पद्मावती देवि ! माता ! अे
 अे मंत्रोने-रहस्योने गुरुमुपधी निश्चय करीने ध्यान करे ॥ १ ॥

तत्रैद्री १ राक्षसो २ दीची ३-त्रायु४मध्या५मि६दक्षिणा७॥
 पेशानी ८ पश्चिमे तासु ९ । क्रमादक निवेशनम् ॥ २ ॥

अर्थः-त्या अनुक्रमे पूर्व दिशिमा-राक्षसी (नैऋत्य) दिशिमा, उत्तर
 दिशिमा वायव्य-मध्य-अग्निकोण-दक्षिण-ईशान-अने पश्चिम अे नव
 स्थानोमा [कोठाओमा] अनुक्रमे अकस्थापना करवी ॥ २ ॥

राशेरिष्टस्यांशकोयस्तृतीयो-
 दिग्भि ४ हीन सद्द्वितीय निवेश्य ॥
 रूपा १ धिक्याद्दि ९ वेदा ४ द्वि १ वाण ५
 रामा ३ ग ६ क्षमा १ सिद्धि ८ कोष्टेषुदध्यात् ॥३॥

८ आ शक्या लखेला अकोनी विशेष स्पष्टता आ शक्यानी अहिं चाळ दीक्रवा, अत्र
 समी शक्ये के अे अकोधी २० केवी रीते घने छे.

अर्थः-इष्ट राशिनो जे त्रिजो भाग, तेमांथी चार घाद करतां जे अंक प्राप्त थाय तेने बीजा कोठामां स्थापवो, अने तेनाथी अकेक अधिक अंक ने अनुक्रमे ९ मा चोथा सातमा पांचमा त्रिजो छटा पहेला अने आठमा [९-४-७-५-३-६-१-८ अे नंबरवाळा आठ] कोठाओमां स्थापवो. ॥ ३ ॥

विंशतेर्न त्रयोभागा-स्तेनाष्टादशयंत्रवत् ॥

द्वितीयगेहे द्वितीयं । दत्त्वाभारं समाश्रयेत् ॥ ४ ॥

अर्थः-परन्तु अहिं बीशना यंत्रमां घण भाग पूर्ण घता नथी, ते कारणथी बदरना यत्रनी पेटे बीजा गृहमां २ ना अक स्थापीने त्पारवाद प्रागळनो मार्ग लेवो [अटले ३-४-५-६-७-८-इत्यादि अंकोनी स्थापना १-४-७-५-३ इत्यादि गृहोमा करवी.] ॥ ४ ॥

सर्वस्थानेषु चैकांकः । परमेश्वरवाचकः ॥

मंत्रपाठे प्रणववत् । धार्यं कार्यस्य सिद्धिदः ॥ ५ ॥

अर्थः-पुनः मंत्र पाठमां जेम प्रणव (ॐ) नी स्थापना अवश्य थाय छे, जेम आ विंशतियत्रना अंकोमां पण परमेश्वरनो वाचक अने सर्व कार्यनी सिद्धि करनारो अेवो १ नो अंक सर्व गृहोमां स्थापवो ॥ ५ ॥

१ अेप्रमाणे स्थापवाथी आ अंक स्थापना थई

१०	२	८
४	७	११
६	११	३

२ सर्व गृहोमा १ नो अंक स्थापवाथी

१०	१२	१८
१४	१७	११
१६	११	१३

आ स्थापना थाय, परंतु

४-३-८ इत्यादि गतिअे यवनपद्धति प्रमाणें स्थापता

१	१६	३
१२	१०	८
७	४	९

अे

प्रमाणे अंक स्थापना थई. जेमा २ ।
१ नो अंक आवे तेवा यत्रो हजी

ज्ञ आव्यो छे, परन्तु सर्व गृहोमा
दर्शावाये.

यथायवनयत्रस्याऽ-विंशतित्रिंशत्सिध्याऽदिकागतिः ॥

श्रीमद्विजययत्रोकाऽ-ष्टमीशुद्धेषु सोत्तमा ॥ ६ ॥

अर्थः-जेम यवनोना विंशतियत्रमां ४-३-८ इत्यादि गतिअे गृहोने अनुक्रम कह्यो छे, तेम विजय यंत्रमां कहेली आठमी गति शुद्धोमा [शुद्धो माटे] उत्तम छे ॥ ६ ॥

स्थाने द्वयेऽत्र यवनै-रेक दान विनिर्मितम् ।

तेनद्विके द्वादशासिः । पङ्के षोडश सभनः ॥ ७ ॥

अर्थः-यवन विंशति यंत्रमां यवनोअे ये स्थानोमां [ये कोठामां] १ नो अक [अधित] स्थापन कर्यो छे, ते कारण ३ ना कोठामा १२ अने ६ ना कोठामा १६ नो अक स्थापय छे ॥ ७ ॥

मध्ये तत्र दश स्थान । यथा प्रातस्तथा दश ।

कमलाकृति यत्रेपि । तत्कृमादग्निगाः शिवा ११ ॥ ८ ॥

अर्थः-त्या मध्य कोठामा १० नुं अकस्थान जे आ विंशति यंत्रमां छे, तेम कमलाकृति यत्रमा पण मध्य कोठामां १० नो अक छे, त्याबाद अनुक्रमे आगळ चालता [शिव=] ११ नो अक स्थापय छे ॥ ८ ॥

क्रमात् पचकात्पंचा-धिकृ त्वेदश १० मध्यगा ।

तदेका दशतः पचा-धिकृत्वेऽधस्त षोडश ॥ ९ ॥

३ आठमी गतिअे क्तेलो यत्र आ प्रमाणे

१	८	११
२	१०	८
१०	४	९

आ यत्रोमा २०-नी

केवी शीते करवी ते चाल टीकाना भावार्थमाज कहैवाशे

अर्थः—स्वारवाद जेम पांचमां कोठामां प्राप्त थयेला कोठा संबंधि ५ ना अक्रमां ५ मेळवतां १० नो अंक मध्यगत पांचमां कोठामां आव्यो छे, तेम ११ मा ५-मेळवतां, १६ नो अंक ११ ना अंकनी नीचे छटा कोठामां आवे छे. ॥ ९ ॥

अथ काव्यार्थः—भूः १ विश्वानि ३ क्षणाः ६ क्षणैः पद्भिस्तृणामिका इति वचनात् चंद्र १ पृथिवी २ पुनः पुनश्चंद्र कथनादेकरुः सर्वत्र देयः इत्यामि प्रायः एवं १३-१६-१२ इति स्थान त्रय सिद्धिः अनुलोम विलोमे नाक सूत्रणमुभयांकेभ्योपि योजना ज्ञापकात् चंद्रांभोनिधि इति पद्मावत्या व्याख्येयं समुद्र शब्दे न चत्वारः सप्तवा इति गणनात् ततः १७-१४ इति स्थान द्वय सिद्धिः चाणेति चतुर्दशाऽधः चाणाः ५ यद्वा षट् पचशा इति सावण्यात् एतद्विस्तर प्रागुक्त एव पांडव शब्देन पच प्रसिद्धाः वक्तवः पद् कर्णस्य पाडवत्वात् तथा पचमिः काम्पते कुंता तद्वधुः पंच-काम्यनीत्यत्र धर्म १ वायु २ इंद्राः ३ अश्विनीकुमार २ द्वयं एव ५ पष्ठ-पांडुरिति पंच कथने पडपि ग्राह्याः—एवं चाणाः ५ कामस्य प्रसिद्धाः पष्टोवसरः 'रहोनास्तिक्षणोनास्ति' इति वचनात् एव मिंद्रिय रसादि संख्यायामपि पंच पत्वं भाव्य तेन ॥

अर्थः—उपर कहेला भु विश्व क्षण इत्यादि पदवाला काव्यनो [पद्मावती काव्यनो] भावार्थ आप्रमाणे भू एटले १ विश्व अेटले ३, क्षण अेशब्द छना अकने दर्शावनारो होवाथी क्षण अेटले ३, अे त्रणे अंक साथे चंद्र शब्द चारवार कहेवाथी चंद्र एटले १ नो अंक सर्वत्र जोडतां तथां पृथ्वी अेटले १ नो अंक पण जोडता, (अर्थात् १, ३, ६ नी पञ्चात् १, १, १ जोडता ११-२३-१६ थाय) अे प्रमाणे १ नो अक सर्वत्र (सर्वस्थाने) स्थापवो, जेथी १३-१६-११ अे त्रण स्थान [अकस्थान] सिध्ध थाय छे, अहिं क्रमपूर्वक अथवा क्रम, रहित पण अंक स्थापना थाय छे, तेथी यत्रे प्रकारता अंकोवडे पण योजना जणावेली छे

तथा चंद्राभोनिधि इत्यादि पदोनी व्याख्या आ प्रमाणें—अंभोनिधि अेटले समुद्र शब्दथी ४ अथवा ७ नो अंक गणाय छे, तेथी ७ अने ४, अने उपर कक्षाप्रमाणें १ नो अक अहिंपण जोडतां १७ अने १४ अेप्रमाणें वे अंकस्थान सिध्ध थाय छे. तथा चाण अेटले ५ नो खंड ते चौदनी

નીચે સ્થાપવો, અથવા છ અને પાચ એવે અકને સદશપણુ છે, તે સવિસ્તર પ્રથમજ કહેવાઈ ગયુ છે, જેમકે “ પાહવ ” એશબ્દ વહે પાચનો અક પ્રસિદ્ધ છે, અને વસ્તુતઃ. કર્ણને પળ પાહવ પણુ રોવાથી “ પાહવ ” શબ્દ થી છનો અક પળ ગણાય તથા પાચ વહે જે કામ્પતે ઇચ્છાયતે પચકામી એટલે છુતા માતા તેમની વધૂ [પુત્રવધૂ દ્રૌપદી], એમા ધર્મ-વાયુ-इन्द्र-આશ્વિનીકુમાર યે, એપ્રમાણે પાંચ અને છટ્ટા પાહુ એપ્રમાણે પાચ કહેવાથી છનુ પળ ગ્રહણ થાય છે એરીતે ઘાળ શબ્દથી પળ કામદેવના ૫ ઘાળ પ્રસિદ્ધ છે, અને છટ્ટો અકસર (એ પળ કામનુ છટ્ટુ ઘાળ તુલ્ય છે], કહ્યુ છે કે રહો નાસ્તિ=એકાન્ત નથી, ક્ષણો નાસ્તિ=અવસર નથી ઇતિવચનાત્ એપ્રમાણે ઇદ્રિય અને રસ પાચ પાચ મહ્યાવાહા છે તો પળ ૬ ની ગણત્રી કરાય છે, એમ જાણયુ જેથી ઘાળ એ શબ્દથી ૫ અથવા ૬ નો પળ અક જાણવો, તે કારણથી

પ્રાચ્યાદગિદૂ ૧૨ નૈઋત્યા-ગુણેન્દૂ ૧૩ ઉત્તરાશ્રિતૌ ॥

કૃતેન્દૂ ૧૪ તદધોવાણેન્દૂ ૧૫ કલા ૧૬ વૈકટ્યદિત ॥ ૧૦ ॥

અર્થ.-પૂર્વદિશમા દર્ગિદૂ=૧૨, નૈઋત્યકોણમા ગુણેન્દૂ=૧૩, ઉત્તરાદિ શામા કૃતેન્દૂ=૧૪, તેની નીચે ઘાણેન્દૂ=૧૫ અથવા એમા એક અધિક કરવાથી ચદ્રની કલા=૧૬પળ ગણાય [તે ઘાયવ્ય કોણમા સ્થાપાય છે] ॥૧૦॥

પચાધિકત્વાદત્રૈવ । સ્થાપનીયા નવેન્દવઃ ૧૯ ॥

તતો દશાતો ઐરુદ્રા ૧૧-અથ પચાધિકાનૃપા ૧૬ ॥ ૧૧ ॥

અર્થ-અથવા ઉત્તરદિશિમા જે ૧૪ સ્થાપ્યા છે, તેમા પાચ અધિક કરવાથી ૧૯ થાય તે પળ ત્યાજ ૧૫ ના સ્થાને સ્થપાય છે ત્યારબાદ અત=મધ્યમા ૧૧ તેની અગ્રે [એટલે અગ્નિકોણમા] ૧૧ નો છે અને તેની [૧૧ ની] નીચે પાચ ૧૬ નો અક સ્થાપવો ॥ ૧૧ ॥

	૧૨			૧૩
	૧૦	૧૨	૧૧	
	૧૪	૧૦	૧૬	૧૧
	૧૫	૧૮	૧૩	
૧૬				

પા પશ્ચિમ ન

ऐशान्यात्यष्टि १९ रष्टेदू १८ । वारुण्या मघवादिशि ॥

क्रमप्राप्तोष्टादशांक-स्तत्रभाव्या नवापिते ॥ १२ ॥

१-१०-९ इतियोजनायां नवक गणनात् यद्वा वाणोति सूत्रे चतुर्दशेभ्यो
वाणाधिकत्वे १९ गौ ९ ध्रुवेत्वन्यथा रुचिरित्युपदेशात् यद्वा वाणोन्त्वे ९
यद्वा क्रम प्राप्त १५ मध्ये पङ्क्तये ९ अग्रे विवृत्यनवकथनात् दशशर
कला इति सौंदर्यलहरी तेन १० वाणा एकोना ९ इत्यपि यद्वा वाणाः ३
रामस्य १ अर्जुनस्य २ कामस्य ३ तत्र ६ मेलने ९ वाण तद्वतो रभेदोप

वारात् अत्र १-७-१ वाण पद् इति ११ एव २०
आयतत्वेपि १-८-११ इति २० तथा १७-१-१-१ एवं
२० कोणगणने दशस्थाने शून्यवात् एकोन्त्वे ९-११
एव स्थानद्वयादपि २० योजना भावात् वाण ५ पद् ६
वचनेन एकादशाक इति केचित् तत्रपूर्वं एकादशांक

1	11	३
11	1-	८
५	३	९

भावेन पुनस्तदोपात् तेन वाण कथनात् पंच ५ त्रयोवा चतुर्दश स्थाने
अक पार्थस्ये १-४-१५ एव २० तथा १-७-१-४-१-६ एवं २० तथा
१७ पुनर्वाण ३ एव २० तथा १४-१-५ एवं २० ततो यथा योगं वाणेत्यादि
सूत्र विचरणीयं एव मन्यत्रापि १-७-१२ अथवा १७-१-२ तथा १-३-१६
अथवा १३-१-४ तथा १७ एकोन ४ तदा ३ एवं २० कोणे एकोन ९-१-११
द्वितीय कोणे एकोन ७ तदा ६-१-१३ एवं २० तथा ११ एकोन ६ तथा ५
अथः १-३ एवं २० अनयारित्या कोष्टाक भेदे अभेदे वा ऊन करणे अधिक
करणेवा ज्ञापक वाणपाडिति सूत्र मंतव्यं ततः एकोन ८ तदा ७ अग्रे १३
एवं २० तथा एकोन २ तदा १-१० एकोन एकाधिक ८ तदा ९ इत्यादिना
सर्वत्र समाधिः एवं यद्वा यत्र भावना सर्व कार्य सिद्धि करत्वात् षोडश
कोष्ट चतुस्त्रिंशत् यंत्रवत् एवं १५-१८ इतिस्थानद्वय सिद्धिः तत एव वाण
रूप वसु दिक् दिक् खेच राश्यादियु इति कचित्पाठः तेन नववस्तु
नित्यमपि व्याख्यातं ततोमध्ये दिक् दश देयाः ततोप्युचैः खे आकाशे
दशांकस्थानादुपरि राश्यादियु द्वादश प्रभूतियु अकेपु घृतेपु यंत्रात्
अस्मात् ऐश्वर्यात् लक्ष्मी भवति रिपु प्रमुखा निष्टेभ्यो रक्षण भवति
रिपवो वैरिणः मारि युगपद्भोकृत्यः विश्वानि मर्त्यानि

दृत्शोभ. चित्तग्रम* उपलक्षणात् सर्वं रोगा ततो द्वद्वः तस्मात् विपात् सर्पादिः अग्राप्युप लक्षणात् सिंह गजादेरिति तथा गुरुमुखात् घृहस्पनि मुखात् भारति घाणी भवति द्वद्राहृक्षमी रक्षण भारती (घाण १० पश्वर्य रक्षाया १६ विघार्य १९ सप्तम स्थाने लेख्याः) प्राप्नोति हे देवते मात. पश्चावति इमान मत्रान रहस्थानि गुरुमुखादित्यावृत्त्या व्यापानात्रिक्षित्य ध्यायामिति अव्याहार इति काव्यार्थ. यद्वापेचरा गृहा यथानवसुस्थानेषु स्थापिता व्यासादिषु पूर्वादि दिशासु एतानकान् तथासस्याप्य ध्यायामि

अर्थ.-इशान कोणमा त्वष्टि=१७, वारुणी दिशामां [पश्चिममां] अष्टेदू=१८, अे प्रमाणे मघवा दिशीथी (पूर्व दिशाथी) दिशाओना क्रम प्रमाणे अहारनो अक आव्यो, ते विंशति यत्रमा नवे गृहोमा अथ नवे अकस्थानो विचारवा ते आ प्रमाणे—

अर्थ-१-१०-९ अे * योजनामां ९ नी गणत्री करवाथी, (२० थाय छे) अथवा काव्यमा घाण शब्द कथो छे ते घाण अेटले ५ ना अकोनो चौदमां अधिक करवाथी १९ थाय छे तेमा [अे १९ मा] गौ अेटले ९ नो अक ध्रुव होवाथी यथा रुचि प्रमाणे गणितमा जोडवो, अेम कहेलु होवाथी (१-१०-९ मा ९ नो अक गणाय छे,) अथवा बीजी रीते विचारता घाण अेटले ५ नो अंरु न्यून करवाथी [अेटले चौदा माथी ५ बाद करवाथी] पण ९ आवे, अथवा पांच अने छ सहश होवाथी १५ माथी ६ न्यून करीअे तो पण ९ आवे, अने ते नथनो अरु पूर्वे विचरीने कहेवाई गयो छे, अथवा दश सर कला (अेटले १०-१-३-१६ अेमा सर=घाण अेटले १ ने १० मा थी बाद करता पण ९ आवे, अथवा घाण अेटले ३ नो अंक

* विंशतियत्रमां पूर्वे दर्शव्या प्रमाणे त्रीज पाचमा अने सातमा कोठामाना ११-१०-१९ माथी ययारुचि अको लईने २० गणवानी पद्वति अहिं दर्शावाय छे त्यां ११ मानो १, १० माना १० अने १९ माथी ९ नो अक लई १-१०-९ अे त्रणे मेळवीने २० गण्या. वडी अहिं सातमा कोठामा १५ ना स्थाने अेटले रीते ५ ना स्थानमा १९ अेटले ९ नो अक कवी रीते गणवो १ वेनी जूदी रीत दर्शवी. अे कोणपक्तिथी २० गण्या छे.

पण गणाय, कारण के रामनुं अर्जुननु अने कामदेवनुं अे व्रण वाण प्रसिद्ध ठे, माटे अे ३ मां (१६ माना) ६ ने मेळवतां पण ९ थाय अथवा वाण अने वाणधारी अे वेमां अभेदोपचारथी ६ गणता ५ मा मेळवी ११ करी १-७-१-११=२० थाय

अर्थ:-हवे १७-१२-११ अे व्रण अंरुनी पंक्तिमां १, [७+१ =] ८, ११ अे व्रण मळीने २० थाय छे, अथवा १७-१-१-१ मळीने २० थाय छे, अथवा खूणाथी खूणे गणतां १० मा शून्य होवाथी १ न्यून करवाथी ९ थाय, जेथी ११-९ अेटले २० थाय अे रीते वे स्थानथी [त्रीजा पांचमा कोठाना ११-१० थी पण २० नी गणत्री थई. वळी योजना भावथी सयुक्त भावथी सातमा कोठाना ५-६ नी सादशतावाळा वे अकोने मेळवी ११ करी मध्य कोठामां रहेला १० ने अेक न्यून पणाथी ९ गणीने ११-९ अेटले २० केटलाक आचार्यो गणे छे, ते योग्य नथी, कारणके प्रथम ११ ना अरु साथे ९ मेळवी अेरुवार २० गणाई गया छे, तेथी अहिं पुनरुक्त दोष [पुनर्गणना दोष] प्राप्त थाय छे, ते माटे अहिं वाण कहेवाथी ५ अथवा ३ गणीने १४ ना अरुने छुटो पाडता १-४-१५ अेटले २० थाय छे, तथा [१७-१४-१५ ने बदले १६ नी पंक्तिमांथी अक छुटा पाडी] १-७-१-४-१-६ अेटले २० गणाय छे तथा सत्तर अने सातमा कोष्टकमा वाणने ५ गण्या छे, तेने बदले ३ गणता १७-३ अेटले २० थाय छे. तथा [१४-१५ मा] १४-१-५ अेटले २० थाय छे, माटे आ काव्यमा वाण शब्दनो अर्थ ५-६-३ इत्यादिरीते यथा योग्य विचारवो, अने ते प्रमाणे अन्यस्थाने पण वाण शब्दना अे अर्थोधीज यथायोग्य २० नो अंक प्राप्त करवो तथा १-७-१२ अेटले पण २० थाय छे अथवा १७-१-२ थी पण २० थाय छे

तथा [११-१६-१३ नी पंक्तिमां अंकोने यथा रुचि छुटा पाडतां] १-३-१६ थी २० थाय छे, अथवा १३-१-६ थी २० थाय छे तथा [१७-१४-१५ नी पंक्तिमा] १७ मा १४ ना अरुने (१ न्यून ४ अेटले) ३ गणीने उमेरता २० थाय छे, अे रीते खूणामा रहेला १९ अेटले १ न्यून ९ अर्थात् ८ गणीने ८-१-११ २० थाय छे [अे १९-१०-११ नी १ अे गणित १७-१४-१५

પંક્તિમાથી ૨૦ ગણ્યા] તથા વીજે સૂત્રે ૧૭-૧૦-૧૩ ની પંક્તિમાથી ૧૭ એટલે ૧ ન્યૂન ૭ અર્થાત્ ૬ ગણીને ૬-૧-૧૩ મેલવતા ૨૦ થાય છે એ પ્રમાણે [૧૧-૧૬-૧૩ ની પંક્તિમા] ૧૧- [૧ ન્યૂન ૬ અર્થાત્] ૫-૧-૩ થી પણ ૨૦ થાય છે.

અર્થ-એ રીતે કોઠામાં રહેલા અકોને છૂટા પાટ્યા વિના અથવા છૂટા પાટીને તથા એકાદિ અંક ન્યૂન કરીને અથવા અધિક કરીને પણ એ યત્ર ૨૦ સરયા નો જણાવનાર છે, તથા યાણ એટલે ૬ નો અક એલુ પણ સૂત્ર જાણલુ અથવા ત્યારવાદ [૧૯-૧૩ ની પંક્તિમા એક ન્યૂન આઠ કરવાથી અઢાર એટલે સાત ગણીને તે ૭ ની આગલનો ૧૩ અક ઉમેરતાં ૭-૧૩ થી ૨૦ થાય છે તથા [૧૨-૧૦-૧૮ ની પંક્તિમા] ૧ ન્યૂન ૨ એટલે ૧ ગણી તેમજ અઢારમા ૧ અધિક ૮ એટલે ૯ ગણીને ૧-૧૦-૯ સ્થાપવાથી પણ ૨૦ થાય. હત્યાદિરીતે સર્વ સ્થાને ૨૦ ની ગણત્રી સમ્યક્રીતે વિચારથી અને એ રીતે ઘણી ઘણી રીતે કરેલી યત્રના ગણિતની ભાવના સર્વ કાર્યની સિદ્ધિ કરનારી હોવાથી સોલ કોઠામાં કરેલા ચોટ્રીસના યત્રની પેટે વિંશતિયત્રની ભાવના પણ જાણવી. એ પ્રમાણે આ વિંશતિયત્રમા ૫ ના સ્થાને ૧૫ અને ૧૯ ની ભાવના અક સ્થાનની સિદ્ધિ સાતમા કોઠામા ગણેલી છે

અર્થ-તે કારણથીજ યાણ રૂપ વસ્તુ દિક્ષુ દિક્ષુ ચ્વે ચ્વ રાહ્યાદિયુ એ ઘો પણ પાઠ કોઈ કોઈ ગ્રથમા છે તેથી નવ વસ્તુઓ એમ પણ [નવ ગૃહોમાં નવ અકસ્થાનરૂપે ૯ એમ પણ] કહ્યુ છે, માટે તે નવ કોઠાઓમા મધ્ય કોઠાના વિષે દિક્ષુ એટલે ૧૦ નો અક સ્થાપવો, તે અકથી પણ ઉચ્ચે ચ્વે=આકાશમા અર્થાત્ ૧૦ ની અકની ઉપર રાહ્યાદિયુ એટલે ૧૨ વિગેરે અકો સ્થાપ્યે છતે એ યત્રરૂપ તે-વર્ષથી લક્ષ્મી પ્રાપ્ત થાય છે, અને શુદ્ધ વિગેરે અનિષ્ટ પદાર્થોથી રક્ષણ થાય છે, અર્હિં રિપુ એટલે ઘાત્રુઓ, મારિ એટલે સમકાલે ઘણા લોકરુ મૃત્યુ, તથા વિશ્વ=સર્વે જાણના ભય એટલે મય અને હૃદયોમ એટલે ચિત્તનો ભ્રમ, તથા

રોગ, એ સર્વનો દ્વન્દ્વમમાસ કરતા

પ્રકારના

સ્થાપવાદ

૧ પ્રકારના વિષથી એટલે સર્પ

૦ મિંહુ જ્ઞસ્તિ વિગેરેથી (૧૨

तथा गुरुमुखात् अटले बृहस्पतिना मुखधी भारती अटले वाणी थाय छे
 अंत्रणेनो द्वन्द्वसमास करता लक्ष्मीरक्षणभारती अत्रुं वाक्य थाय छे
 [अहि सातमा गृहमां वाण अटले अश्वर्यार्थे १५, रक्षार्थे १६, अने
 विद्यार्थे १९ नो अंक स्थापवो,] ते लक्ष्मीरक्षण अने वाणी प्राप्त थाय छे
 तथा हे देवते अटले हे पद्मावती माता ! आ मंत्रोने रहस्योने गुरुमुखधी
 जाणीने यावत् व्याख्याथी निश्चय करीने ध्यायामि अटले हुं ध्यान करुं
 हुं अे ध्यायामि ५६ श्लोकमां कथुं नथी तो पण अध्याहारथी ग्रहण
 करयुं ॥ इति काव्यार्थः ॥

॥ विंशतियंत्रे नवग्रहादि स्थापना ॥

अथवा खेचराः अटले नव ग्रहोने जेम यंत्रना नव कोठामां पूर्वादि
 दिशाओमां स्थापेला होय छे, तेवी रीते अे अंकस्थानोने पण स्थापीने हे
 पद्मावती देवी ! हुं ध्यान करुं हुं ते ग्रहोनी स्थापना आ प्रमाणेः—

मध्ये रवि शशी प्राच्यां । प्रतीच्यां मंगल स्थितः ॥

गुरुरीशे कविर्याम्ये । कौवेर्यां निश्रितो बुधः ॥ १ ॥

अर्थ-मध्यमा सूर्य, पूर्वमा चंद्र, पश्चिममां मंगल, ईशानमां गुरु,
 दक्षिणमां शुक्र, अने उत्तर दिशामां [विंशति यंत्रने विपे] बुध
 रहेलो छे ॥ १ ॥

मंदोवायौतेमोवन्हौ । नेरुत्याकेतुराश्रितः ॥

ग्रहाणामितिदिग् भागा । न्यस्यंतेमुद्रिकादिषु ॥ २ ॥

अर्थ-वायुकोणमां शनि, अग्निकोणमां राहु, अने नैऋत्यमां केतु रह्यो
 छे. अे प्रमाणे मुद्रिका विगेरमा ग्रहोने ते ते दिशाभागमां स्थापय छे ॥२॥

अथ स्थलात् उपर्युपरि अंकधरणं कुंडलिन्यागत्यानागाधिष्ठितत्वात्

नीचेना स्थानधी उपरं
 वर्तकमधी] अंकस्थापन

लिनी गति प्रमाणे [प्रदक्षिणा
 धरणके अे यंत्र नागा

तत्र त्रयोदशस्थान गतः १ मेलने २० एतान् गण्यन्ते विंशति वार विंशते
 रूपरि प्रयोजनाभावात् एवं आयनत्वे ८ योजना अप उद्दटरीत्या प्रथम
 पंक्तौ योजना ७-४ पद्म १५ शेष ९ एवं २० प्रथमा १-१४-५ द्वितीया
 १-४-१५ तृतीया एवं ३ तनः १२-०-८ चतुर्थी २-१०-८ पचमी १-१-१८
 षष्ठी एवं ३ मध्यपंक्तौ ११-६-३ सप्तमी १-१६-३ अष्टमी १-६-१३ नवमी
 एता ८ नवउर्द्धरीत्या सर्वा १८ कोणे ३-१०-७ द्वितीय कोणे १-१० पद्म
 पचदशशेष ९ एवं विंशतिवार विंशतिकाः ॥ अत्र १२-८ तथा ४-१६ तथा
 १७-३ तथा ९-२१ यद्वा १९-१ तथा ७-१३ दशस्थानेषु शून्यत्वात् एको-
 न्त्ये ९-११ तथा पचसु एकोनत्वे ४ पदसु एकोनत्वे ९-१०-१ यद्वा १-६
 दशस्थाने ९ एवं स्थानद्वयजा अन्यापि विंशतिका ज्ञेया गंभीरार्थविषयात्
 पंचस्य सुवमेव गगाप्रवाह ग्रंथ कथिते

नागकुलनी संग्या नव प्रसिद्ध ऐ. अधवा
 ३ पद्मावती देवि ! ते नव गृहमां [विंशति
 यत्रमां] नव अंक स्थाना गोप्यानि=रक्षण
 करवा योग्य अर्थात् स्थापवा योग्य ऐ. ते
 गंधनी स्थापना आ प्रमाणे—
 गणप्रीनी योजना आ प्रमाणे—

१०	११	११
१४	१०	११
११	१-	११

अदि २० नी

अर्ध-अर्ध २० नी गणप्री वसि रीतिअे धाय ऐ ते आ प्रमाणे—
 [१७-१२-११ नी पंक्तिमाथी] १७-०-१ अट्टे २०, ७-१२-१ अट्टे
 २०, अने ७-२-११ अट्टे २० अे प्रमाणे पंढरी धीजी अने धीजी अे ध्रण
 रीति धई. तथा [१४-१०-१६ नी पंक्तिमा] १४-०-६ अे घोषी रीतिअे
 २०, ४-१०-६ अट्टे २० अे पांचमी रीति, ४-०-१६ अट्टे २० अे छ्ठी
 रीति, अे प्रमाणे ध्रण रीति मध्य पंक्तिनां धई. तथा [१५-१८-१३ नी
 पंक्तिमां] १५-१-१-३ अट्टे २० अे सानमी रीति, १-१८-१ अट्टे २०
 अे आठमी रीति. १-०-१-१३ अट्टे २० अे नचमी रीति, अे प्रमाणे ध्रण
 रीति मीदिनी पंक्तिमा जाणरी । अधवा सानमा गृहमां १६ ना स्थाने
 १६ पण विचारी अे कारणा के ५-६ नी सरजना होवारी ६ विचारी अे
 सो] ६-८-३-१-१-१ अट्टे २० अे पढेरी रीति अने १५-१० विचारी
 अे तो ५-९-२-१-१-१ अे धीजी रीति. मेमज १९-१ अट्टे

२० अे त्रीजी रीति अे प्रमाणे बीजी रीति ५
 त्रण रीति जाणवी अहिं छेष्टी रीतिमा वे ८
 जाणवी तथा अहिं छे न्यून अेटले छे नो ५
 पद उन कहेवाथी १ नो अंक स्थापवो मिद्व
 १५ माथी छे न्यून करता ९ नो अंक आवे ते
 अक स्थापता १९ धाय छे त्यारवाद १३
 धाय छे ते बीस अहिं न गणवा, कारणके
 २० नी गणत्री करवानी होवाथी ते उपरान्त
 अे प्रमाणे दीर्घ पक्तिथी नव रीतिअे २० नी ॥

[ह्ये १७-१४-१३ नी पक्तिमा] उर्ध्व पक्ति
 पक्तिमा छे न्यून १५ अेटले ९ गणीने ७-४-९
 रीति, १-१४-५ अेटले २० अे बीजी रीति, १-४-९
 रीति अे त्रण रीति जाणवी

त्यारवाद बीजी मध्य उर्ध्व पक्तिमा [अेटले
 १२-०-८ अेटले २० अे चोथी रीति, २-१०-८ अेटले
 रीति, १-१-१८ अेटले २० अे छट्टी रीति, अे
 पक्तिमा पण त्रण रीति थई

[त्यारवाद ११-१६-१३ अे त्रीजी उर्ध्व पक्तिमा] १
 २० अे सातमी रीति, १-१६-३ अेटले २० अे
 १-६-१३ अेटले २० अे नवमी रीति, अे नव रीति उर्ध्व पक्ति
 जाणवी अने अे प्रमाणे नव आयत रीति अने नव
 मळीने १८ रीति थई।

तथा अेक न्यूणाथी बीजा न्यूणानी पक्तिमा [विदिशि
 १३-१०-१७ नी पक्तिमा] ३-१०-७ अेटले २० अे
 तथा [१३-१०-११ नी पक्तिमा] छे न्यून पदर अेटले ९
 १-१०-९ अेटले २० अे बीसमी रीति अे प्रमाणे २०
 जाणवी

अपूर्व चमत्कार ? पूर्वगत गुप्त महाविद्याओं का भंडार ? ?

विपारन महानिधि [दशपूर्ववर भगवान श्री भद्रगुप्ताचार्यवृत्त भाषांतर ई.स. १०११
 संहिता] इस ग्रंथकी तारीफके विषयमें क्या शिक्षा पाय, जबकि इसका मूल्य २५
 नामसेही प्रकट हो रहा है । न्योछावर २५ रुपये

इसमें अनेक प्रकारकी पूर्वगत गुप्त विद्याएँ हैं जो थोटासा थम करनेपरही आने लगे हैं।
 यताती है किन्तु निका एसा है जो पढनेसे सिद्ध होजाताहै में पाठक महानुभावोंका नाम
 निश्चय करताहू कि इस ग्रंथकी एक एक प्रति अवश्य खरीयें और इसके चमत्कारका ल
 यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि यह इसजगती तत्पर अपनी शक्ति तों ग्य ॥
 वदों संभोग्याकी बात है की शासन देखनी ट्टपाम तू आहृती भी खलाम होने आई ६

ज्योतिष शास्त्रका अद्भुत नमुना !

जिस ग्रंथके विषयमें जनता विचार करती थी वही ज्योतिषशास्त्रका सगता अर्द्ध बुद्धामणी
 मारमटीक आज निम्न आगता उपके तयार है मूळ कीमत रु. ३१ भेटकी कीमत रु. १॥
 इस ग्रंथम आपको क्या मिलेगा उर्धोत्तर मार । पुटे हुये प्रश्नोंक उत्तर ।।
 गुप्त गवित्य वर्तमान की बाते जाननेकी चाहा ।।। यह ग्रंथ सप्त वरनेसे आपको मर
 कुछ जाननेका मिलेगा आप स्वयं इस ग्रंथक द्वारा तयार उर्धोत्तर मार जाय गे

उपमर्गहरस्तोत्र ग्रंथ

इस ग्रंथको आप अनेक उर्धोत्तर पाते गये है की पत्रका पाय ग्यमे सब प्रकटकी सिद्धी
 गेट, कथेसो गीत धर्मप्राप्ति कीर लकार मे लाम, दुःखाकर पराध्य उस्तानि मनुष्योंकी
 प्राप्ति होती है इस ग्रंथको सप्तम दम्भुने में उपदिष्टात म्पकाचर्य श्रीदेवी उपपाने
 कथा श्री विधाक सप्त भेदा

मूळ कीमत रु. ११ भेट कीमत

वळी अहिं बीजी रीते पण १२-८ अटले २०, ४-१६ अटले २०, १७-३ अटले २०, ९-११ अटले २०, अथवा १९-१ अटले २०, तथा ७-१३ अटले २०, तथा दशमां शून्य होवाथी अंक न्यून करतां ९ थाय ते ९-११ अटले २०, तथा पांचमाथी अंक वाद कर्ये ४, अने छ मांथी अंक वाद कर्ये ५ आवे, जेथी [५+४=९] गणी ९-१०-१ अटले २०, तथा दशना स्थाने [शून्य होवाथी अंक वाद करतां नव गणीने] ५-६-९ अटले २०, अे प्रमाणे ये थे अंकन्यान मेळणीने गणाती धीजा प्रकारनी २० नी गणत्रीओ पण थाय छे ते यथा योग्य जाणवी. गंभीर अर्थना विषयवाळी होवाथी गंगाप्रवाह ग्रथमां कहेला आ बीसना यत्रमां अे प्रमाणेज गणत्री गणवी.

राजन्महैभै ८ निधिभि ९ खिलोक्यां ३ ।

राज्यंभुजाभ्यां २ लभतेश्च ७ चक्रैः ॥

शिवं ११ दिशा १० मन्वि ४ जयारसद्व्यां ।

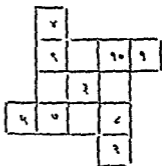
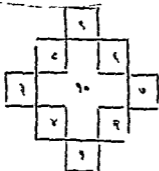
६-५ नरोत्रयंत्राद्विहरजिनानां ॥

अर्थः-चिराजता अेषा महान् हस्ति ओ वडे [अहिं हस्ति अटले यंत्रपक्षे ८ वडे] तथा निधि वडे (९ वडे) ग्रण=३ लोकाने विषे भुजाओ वडे [२ वडे] अने अम्ब [अटले ७ ना] समूहवडे शिव=११ दिशा=१० अने अन्वि=४ ना विजयवाळुं रस=३ सहित अथवा रस=५ सहित अेषा राज्यने रीसविहरमान् जिनेश्वरोना आ विंशति यंत्रथी अहिं-आ लोकमां मनुष्य प्राप्त करे छे [अर्थात् ८-९-३ । २-७-११ । अने १०-४-६ अथवा ५ अे ग्रण पंक्तिगत अंकस्थानो रूप रीस विहरमानना विंशति यत्र वटे मनुष्य आ लोकमां राज्य प्राप्त करे छे.]

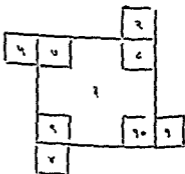
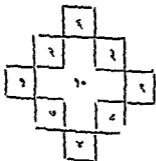
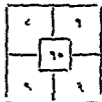
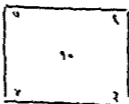
उति यत्रे सर्वत्र एकक लेखने योजना ज्ञेया ॥

अे प्रमाणे यंत्रमां सर्वत्र १ नो अंक म्पापवाथी अे विंशति यंत्रनी योजना जाणवी.

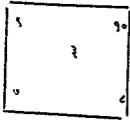
आप्रमे खुम्मा मरजीदके प्रवेश बरत जमना हाथके दर्गापर



३	३	४
१	१०	९
९	७	८



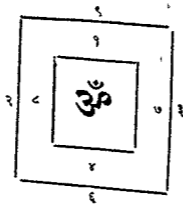
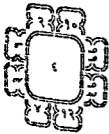
श्रीशैलम्नाथजीका मंदिर सुरत



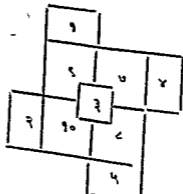
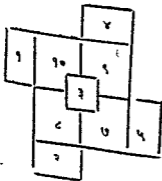
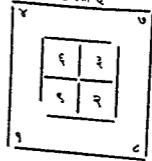
२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	४	४	७

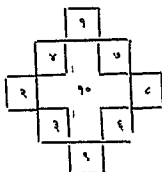
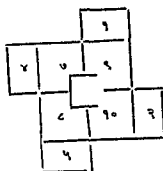
सिध्दचक्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८



बगदाद शरीफ महबुबमियाके राजेका है





क्वचितस्थानद्वेतात् क्वचिदपिच कोष्टत्रितयतः ।
 समस्ताद्ब्यस्ताद्वा क्वचिदधिकतो वोन करणात् ॥
 अभूत सरया विशत्यत्पनुगममयी विशतिमिता ।
 ततस्तस्या पद्मोदितमपिचयत्र विजयतात् ॥ १ ॥

अर्थ-अे प्रमाणे कोई वखत वे स्थानथी (वे गृहोमा रहेला वे अरु-
 स्थानोथी,) कोई वखत चण गृहमा रहेला चण अरुस्थानोथी, कोई
 वखत सपूर्ण अरुस्थानोथी, कोई वखत व्यस्त (अपूर्ण) अरुस्थानोथी
 कोई वखत अे आदि अधिक करीने, अने कोई वखत छ आदि न्यून करी
 पण मेळवता विशति यत्रने अनुसरनारी २० नी संख्या प्राप्त थाय छे,
 ते कारणथी ते विशति संख्याने पद्मावती देवीअे कहेलो यत्र पण
 विजयवत वर्ते छे ॥ १ ॥

वाचकैर्भेद्यत्रियै- विशत्यत्रसुत्रितम् ॥

श्री वीरपार्श्वयत्पद्मानुभावादस्क सिद्धिदम् ॥ २ ॥

अर्थ -अे प्रमाणे श्री वीरप्रभु अने पार्श्वप्रभुना तथा पद्मावती देवीना
 प्रभावथी श्रीमद्यत्रियजी उपाध्याये जे आ विशति यत्रनी सूत्रणा
 [रचना] रची ते विशति यत्र सर्व सिद्धिने आपनारो थाओ ॥ २ ॥

इतिश्री पद्मावती स्तवन कथित विशति यत्र प्रतिष्ठा ॥ श्रीरस्क

॥ विंशतियंत्र प्रतिष्ठा ॥

जे प्रमाणे पद्मावती देवी ना स्तोत्रमां कहेला विंशति यंत्रनी प्रतिष्ठा
[अक स्थापना अथवा अंक गणत्री] समाप्त घई.

॥ अथ शुद्रोत्तमा अष्टमी गतिः ॥ विंशतियंत्रस्य ॥

अब्धि४त्रि ३, सिद्धि ८ नव ९ वाण५कु१हृग् २नगां ७गे६ ।

प्यंक क्रमेण विलिखेत्खलु शुद्रः लक्ष्म्यै ॥

एषैव यावनिक यंत्रकृताप्रतिष्ठा ।

स्यादष्टमी विजययंत्रवरेविशिष्टा ॥ १ ॥

अर्थः-अब्धि=४, त्रि=३, सिद्धि=८, नव=९, वाण=५, कु=१, हृग्=२,
नगा=७, अंग=६, अे [४-३-८-९-५-१-२-७-६ नंबरवाळा] कोटाओना
क्रमधी २ आदि अक निश्चय शुद्रनी लक्ष्मीने अर्थे लंघवा, अने अेज
क्रमघाळी यत्रनना विंशति यत्रनी स्थापना पण करीअे तो ते आ
आठमी गति आ श्रेष्ठ विजय यंत्रमां अति उत्तम कहेली छे. (शुद्रोने
माटे अति उत्तम छे) ॥ १ ॥

अत्रापि विंशतिमिता ननु योजनाःस्यु-

स्तामुग्धमोघविधये परिशीलनीया ॥

रुद्रा ११ रसा ६ खय ३ इति प्रथमाकु १ भूपा १६ ।

रामा ३ पराकु १ रस ६ विश्व १३ पदेःस्तृतीया ॥ २ ॥

८	२	३
२	०	११
१०	४	९

१ आ शुद्रोत्तम विंशति यंत्रमां पण यथास्थाने १-१ ना अक

स्थापतां ५ अविद्यत्र वने छे.

અર્થ:-એ આઠમી ગતિવાલા યત્રના પળ વીમની યોજના [ગણત્રી]
 જે રીતે થાય છે, તે રીતિ મુગ્ધ જનના યોગને અર્થ કહેવા યોગ્ય છે, ત્યા
 પ્રથમ ૧૧-૬-૩ એ પ્રથમ રીતિ, ત્યારવાદ કુ=૧, મૂપ=૧૬, અને રામ=૧
 એ રીતે ૧-૧૬-૩ ની ઘીજી રીતિ, ત્યારવાદ કુ=૧, રસ=૬ અને વિશ્વ=૧૩
 એ રીતે ૧-૬-૧૩ એ ઘીજી રીતિ જાણવી (એ ઘણે રીતે ૨૦ થાય છે) ॥૨॥

અર્કા ૧૨ મૂ ૦ વસુમિ ૮ પક્ષ ૨-

દશે ૧૦ મૈ ૮ મૂ ૧ કુ ૧ ધૃત્યૈ: ૧૮ ॥

મૂ ૧ શૈલ ૭ મૂ ૧ કૃતે ૪ દ્વ ૧ ગૌ ૬-

રિદુ ૧ શક્ર ૧૪ રસૈ ૬ પુન: ॥ ૩ ॥

અર્થ:-તથા ૧૨૦૮ એટલે ૨૦ એ ચોથી રીતિ, ૨-૧૦-૮ એટલે ૨૦ એ
 પાચમી રીતિ, ૧-૧-૧૮* એટલે ૨૦ એ છઠી રીતિ, [એ ઘણ રીતિ,
 ૧૨-૧૦-૧૮ ની ઘીજી પક્તિમા થાય છે] તથા [૧૭-૧૪-૧૬ ની ઘીજી
 પક્તિમા] ૧-૭-૧-૪-૧-૧ એટલે ૨૦ એ સાતમી રીતિ, ૧૪-૬ એટલે ૨૦
 એ આઠમી રીતિ, ॥ ૩ ॥

મૂ ૧ સિંધુ ૪ દિવસૈ ૧૫ પંક્તા-વાયતલ્વેનવાપ્યમૂ: ॥

ઉદ્ભલ્વેશિવ૧૧૬કૃ ૨ શૈલે ૭-રેકા ૧૬૧૨મુનિ ૭મિસ્તથા ॥૪॥

અર્થ:-તથા ૧-૪-૧૬ એટલે ૨૦ એ નવમી રીતિ, એ પ્રમાણે આપત
 [આઢી-દીર્ઘ] પક્તિઓમા એ નવ રીતિએ ૨૦ થાય છે, હવે ઉર્ધ્વ
 પક્તિની રીતે (૧૧-૧૨-૧૭ ની પહિલી પક્તિમા) ૧૧-૨૭ એટલે ૨૦ એ
 પહેલી રીતિ, અને ૧-૧૨-૭ એટલે ૨૦ એ ઘીજી રીતિ, ॥ ૪ ॥

૧૧	૧૬	૧૩
૧૪	૧૦	૧૬
૧૫	૧૦	૧૩

એ ચાલુ ગણાતી રીતિઓ આ યત્રમાથી ગણવી.

* કુધૃત્યૈ. એ પદમાં કુ=૧ તે ધૃતિ=૧૮ ઉતૈ=સહિત એવો
 અર્થ છે જેથી મૂ કુ ધૃત્યૈ એટલે ૧-૧-૧૮.

૨ અર્ધિ ૬ અને ૫ ની સદ્ગતા ગણીને ૨૦ નો અકુ ગણવો.

भृमीं १ दु १ धृति १९ मिश्रात्र-सावण्यात्तनके ॥
यद्वैककत्रयेभेद त्यष्टासौ १७ परिपूर्यते ॥ ५ ॥

अर्थ:-तथा १-१-१८ अटले २० अे वीजी रीति अटि १३ अे अटि १८
गण्या ते ७ अने ८ नी सडशता विचारीने गण्या छे. अत्र २० अे
पंक्तिमां १ अकना त्रण भेद [अटले त्रण अेकना ने सडशता मने
करवा, अटले १-१-१-१७ अटले २० अेम पण गणवा. ॥ ५ ॥

कला १६ भू ० वार्धि ४ मिश्रांग ६-

दश १० सिधु ४ निर्मीलनैः ॥

पद् ६ व्योम ० मनुभि १४ विश्व १३

भू १ म्यंगै ६ भू १ धृती १८ दु १ तिः ॥ ६ ॥

अर्थ-तथा (१६-१०-१४ अे वीजी उर्ध्व पंक्तिमां) १३ अे अटि २०
अे चोधी रीति, ६-१०-४ अटले २० अे पाचमी रीति, अटि १३ अे
छद्दी रीतिअे २० गणवा. [पुनः १३-१८ अे अटि उर्ध्व पंक्तिमां]
१३-१-६ अटले २० अे सातमी रीति, तथा १-१-१ अटले २० अे
आठमी रीति ॥ ६ ॥

भू १ राम ३ भू १ दिने १५ छे ३ क १-कला निर्धार्य कोणके ॥
त्रि ३ दशां १० गै ७ रेक १ दश १०-नवमि १ अटले नव ॥ ७ ॥

पद्म पंचदशत-शेषे नवयतोमता ॥

यद्वैकोनाःपद् ६ च पंचै-कोनाः पंच ५ चतुर्मिनाः ४ ॥ ८ ॥

करता ९ आवे ते गणवा अथवा अेक न्यून छ अेटले ५ अने अेक न्यून पाच अेटले ४ प्रमाणनो अंक आवो, ॥ ७ ॥ ८ ॥

योगे चतुर्णां पंचाना—नववागो ९ वज १ धारणात् ॥

एव विशतयोविंश—प्रमाणाइह जज्ञिरे ॥ ९ ॥

अर्थ— अे रीते पण ४ अने ५ ना योगे ९ नो अंक जाणवो ते साथे अेकनो अक स्थापवाधी १९ याय, अे रीते वीस प्रकारनी वीसनी गणत्री अहि थई ॥ ९ ॥

देव्या पद्मावत्या भगवत्या स्वप्रकथित यंत्रस्य ॥

संवादाथं विवृत वाचक मेघादिविजयेन ॥ १० ॥

अर्थ.—भगवती पद्मावती देवीअे स्वानमा कहेला आ विंशति यत्रना संवादाने अर्थ [गणिती रीति प्रगट करवाने अर्थ] श्रीमेघविजयजी उपाध्याये जा यत्रनु विवरण कर्युं ॥ १० ॥

भवति नानायत्राणा गतय स्तेन प्रिशते ॥

यत्रे शठकृताक्षेप विक्षेपायोद्यमोप्यसौ ॥ ११ ॥

अर्थ—बळी विंशति यत्रधी वीजा पण अनेक प्रकारना यंत्रांनी गतिओ [रीतिओ] प्राप्त थाय छे ते कारणधी, तेमज आ विंशति यत्रमा मूर्खज नोवडे करता आक्षेपोने दूर करवा माटे पण मारो आ उद्यम छे अेम जाणवु ॥ ११ ॥

इति विजययत्राष्टम गत्यायवनमत विशति यत्रप्रतिष्ठा ॥

अे प्रमाणे विजययत्रनी आठमी गतिवडे यवनना मते विंशति यत्रनी स्थापना दर्शाधी ॥ इति ॥

॥ अथ ग्रहोपरिशकुनम् ॥

आइच्चेनस्थिलाहो । सोमे रिद्धीय मंगलेमरणम् ॥

बुध गुरु सुके लाहो । सनिराहूरोरवं मरणम् ॥ १ ॥

अर्थः-विंशति यंत्रमां सूर्य होय तो लाभ न थाय, चंद्र होय तो ऋद्धि प्राप्त थाय, मंगल होय तो मरण प्राप्त थाय, बुध गुरु शुक्र अं चरण होय तो लाभ थाय, अने शनि तथा राहु होय तो रौरव [भयंकर] मरण थाय ॥ १ ॥

बुधे चंद्रोतरे मार्गे-समीपे गुरुशुक्रयोः ॥

भौमे रवौ तथा दूरे । आपद्राहु शनैश्चरे ॥ २ ॥

अर्थः-बुध अने चंद्र होय तो अतरे समुद्रमां प्रयाण थाय, गुरु अने शुक्र समीप होय तो मार्गमां प्रयाण थाय, मंगळ अने सूर्य होय तो दूर देशमां गमन थाय, अने राहु तथा शनि होय तो आपदा प्राप्त थाय ॥ २ ॥

आदित्ये दृष्टि दोषः स्यात् । सौमे शरीरसंभवः ॥

भौमेच डाकिनीदोषः । गोत्रदेव्याबुधेपुनः ॥ ३ ॥

अर्थः-पुनः सूर्य होयतो दृष्टि दोष थाय, चंद्रहोत्र तो शरीरसंबधि दोष प्राप्त थाय, मंगळ होयतो डाकिनी दोषथाय, अने बुध होयतो गोत्र देवीनो दोष प्राप्त थाय ॥ ३ ॥

गुरौचक्षेत्रपालस्य । शुक्रेचजलमातरः ॥

शनैश्चरे भूतदोषः । पितृदोषेश्वराहुजः ॥ ४ ॥

अर्थः-गुरु होयतो क्षेत्रपालनो दोष प्राप्त थाय, शुक्र होय तो जलदेवी नो दोष गणाय, शनिहोयतो भूतदोष, अने राहुथी पितृदोष प्राप्त थाय ॥ ४ ॥

२०		
१७	१२	११
१४	१०	१६
१५	१८	१३

प्राङ्गणे उत्तम

२०		
१५	१४	१७
१८	१०	१२
१३	१६	११

दक्षिणे उत्तम

२०		
१३	१८	१५
१६	१०	१४
११	१२	१७

वैश्वे उत्तम

२०		
११	१६	१३
१२	१	१८
१७	१४	१५
		१९

शुद्धे उत्तम

२०		
११	१९	१७
१६	१०	१४
१३	१८	१५
		१९

प्राङ्गणे मध्यम

२०		
१३	१६	११
१८	१०	१२
१५	१४	१७
१९	१४	१७

दक्षिणे मध्यम

२०		
१५	१८	१३
१४	१०	१६
१७	१२	११

वैश्वे मध्यम

२०		
१७	१४	१५
१२	१०	१८
११	१६	१३

शुद्धे मध्यम

अथकेचिदिदं यंत्र । विंशतेर्गतिभेदतः ॥

प्राहुः श्रीबाहुवल्याद्या-मुनयोनयकोविदा ॥ १ ॥

अर्थ--हवे नय ना ज्ञानीओ अेवा बाहुवली आदि केटलारु मुनीओ आ
विंशति यत्रने गतिभेदधी (धीजी कोई जूदीज गणत्रीधी) करे छे ॥१॥

युक्त तदुक्तमास्थाप्य । तदत्रैवप्रपच्यते ॥

यत स्यात्सुदशालक्ष्मी-जैनानामपिनश्वरा ॥ २ ॥

अर्थः-ते पण तेमनुं कहेयुं युक्त छे, माटे तेमना करेवा प्रमाणे ते गतिभेदधी पण विंशति यत्रने हुं विस्तारपूर्वक कहुं छुं के जेथी साम्यगृ-हष्टी अवा जैनोने अविनश्वर अवी मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥

वांछात्रिभक्त फलपचम् ५ बन्धि ३ षट्क ६-

आद्या १ ष्ट ८ कोशगतिरत्रसुधांशुवृध्या ॥

रूपोनितंगुण ३ फल मुनि ७ वेद ४ नद ९-

नेत्रे २ पुतल्लिखिततो नवकोष्टयंत्रम् ॥ ३ ॥

अर्थः-इष्ट राशिने घणो भागतां जे जवाय आवे ते अंकने पंचम अटले पंचमा गृहमा [मध्यगृहमा] स्थापवो, अने त्यारवाद त्रीजा छट्टा पहेला अने आठमा गृहमा अनुक्रमे अंकेक वृद्धिधी अंरु स्थापतां जवुं, अने अने सातमा चौथा नवमा अने बीजा अे चार गृहोमां अनुक्रमे [मध्य-स्थापित अंकधी] अंकेक न्यून करवाधी जे त्रण जवाय अंरुधी आवे ते अनुक्रमे स्थापवा अने चौथो जवाय अकधी न आवे तो ० शून्य स्थापवी अे प्रमाणे नव कोठानो यत्र लखवो ॥ ३ ॥

षोडशादिके विशेषः

परन्तु १६ आदिना यंत्रमां जे विशेषता छे ते दर्शावाय छे —

इष्टराशेस्त्वृतीयोशः । पंचोनः ५ स्याद्वितीयके ॥

रूपा १ धिकोऽश्वे ७ षष्टे ६ च । क्रमात्तादेकवर्धनम् ॥ ४ ॥

अर्थः-इष्ट राशिना त्रीजा भागमांथी पाच बाद करता जे आवे ते बीजा कोठामां स्थापवो त्यारवाद सातमा कोठामां [बीजा कोठाना अकधी] १ अधिक स्थापवो, तेमज छट्टा कोठामां पण अनुक्रमे प्राप्त धयेला अकधी [सातमा कोठाना अंकधी] १ अधिक अंक स्थापवो ॥ ४ ॥

त्रिभागेचैकवृद्धौस्या-द्वयेऽधिके त्रयाधिकः ॥

क्रमान्मध्येतथेशाने । कौवेर्यासद्रयाधिकः ॥ ५ ॥

अर्थ-एक वृद्धिवालो त्रिभाग होय अथवा तो वे वृद्धिवालो त्रिभाग होय तो ते अनुक्रमधी मध्यमा तथा इशान कोणमां वे अधिक सहित एक स्थापयो ॥ ५ ॥

क्रमेणप्रौचवारुण्या-मकवृद्धिर्विधीयते ॥

एवयथेष्टयत्राणि । जायंतेनवकोशके ॥ ६ ॥

अर्थ-स्यारवाद अनुक्रमे अग्निकोणमा अने पश्चिम दिशामां अंकवृद्धि करवी, अे प्रमाणे नव कोठाओमा इष्टराशिवालो कोट्टेपण यत्र बने छे ॥६॥

अत्राप्येकाधिकोमत्वे । स्वत्वात्पंचपडकयोः ॥

समाधानं नशंकात्र । सारूप्याद्यावनेमते ॥ ७ ॥

अर्थ-अहि पण एक अधिक अथवा एक न्यून अकधी यंत्र घेसतो होय तो पाच अने छ ना अकमा सरखापणु गगनि समाधान करखु [अेटले गणित परानर मेळवखु] अने अे घावतमा शका न करवी, कारणके घवनोना मतमा [पण] पाच अने छ नु सरखापणु स्पष्ट रीते करेल्लज छे ॥ ७ ॥

७	०	५
२	४	६
३	८	९

१२

८	०	५
२	४	७
३	९	९

१३

८	०	६
२	५	७
४	९	९

१४

६	०	९
८	५	२
९	९	४

१

९	०	५
३	५	८
८	११	९

१६

६	९	९
८	९	३
२	१०	४

१६

७	१	९
८	६	३
२	१०	५

१७

७	१	१०
९	६	३
२	११	५

१८

८	१	१०
९	७	३
२	११	५

१९

७	१	११
१०	६	३
९	१२	५

१९

११	१	८
३	७	१०
५	१२	७

२०

८	१	११
१०	७	३
२	१२	५

२०

१०	३	१३
१२	९	५
४	१४	८

२६

१२	५	१५
१४	११	७
६	१६	१०

२२

१२	६	१५
१४	११	८
७	१६	१०

२३

१३	६	१५
१४	१२	८
७	१६	११

२४

१२	६	१६
१५	११	८
७	१७	१०

२४

१३	६	१६
१५	१२	८
७	१७	११

२५

१४	१९	१२
१३	१५	१७
१८	११	१६

४५

१८	११	०१
२०	१७	१३
१२	२२	१६

२३	१६	२१
१८	२०	२२
१९	२४	१७

६०

अथाष्टं ८ दु १ पद् ६ षन्दि ३ वाणा ५ द्वि ७ वार्धि ४-
 गृह ९ द्वी २ तिरीतिर्विशामुत्तमासौ ॥
 तथास्थाप्पते विंशतेर्यत्रमत्र ।
 यथादेविपद्मावती संस्तवादौ ॥ १ ॥

अर्थः-एवे आठमु परेल्ल छट्टु श्रीजु पाचमु सातमु चौथु नवमु अने धीजु
 जे अनुक्रमधी नव गृहमा [कौठाओमा] अकेस्थापना करवाधी जे
 विंशति यत्र वैश्योने माटे अति उत्तम कथो छे, अने ते जेवी रीते
 पद्मावती देवीना स्तोत्रादिकुमा विंशतिनो यंत्र [वैश्योमाटे] दर्शाव्यो
 छे तेवी रीते अहिं पण ते यत्र स्थापचो ॥ १ ॥ ते आ प्रमाणे—

९	९	४
७	५	३
१	१	८
१५		

३	११	५
९	७	४
८	९	१०
२०		

वारुणी ८ श १ यमा ६ ग्न्या ३ शा-
 मध्य ५ वायु ७ त्तरा ४ दिशि ॥
 पलाद ९ शक्र दिक्कोशैः ।
 स्यात्पचदशयत्रकं ॥ २ ॥

१ जे कौठाओमा अनुक्रमे १-२-३-४-५-६-७-८-९ अको स्थापन करवाधी १५ नो
 यत्र बने छे, अने २ ३ ४-५-७-८-९-१०-११ स्थापवाधी २० नो यंत्र बने छे.

२ जे पदरना यत्रमां विचारीजे तो श्लोकमां जे गृहोनो क्रम ८ १-६-३-५-७-४ ९-२
 कौठाओना नवर प्रमाणेनाज अक पश्चालु पूर्वाजे उलटा क्रमे आवेला छे

अर्थः-अहिं आठमा पहेला छटा त्रीजा पांचमा सातमा चौथा नवमा अने षीजा अे गृहोमां अनुक्रमे [१-२-३-४ ५-६-७ ८-९] अंको स्थापवाधी १५ ना अंकवाळो यंत्र बने छे ॥ २ ॥

यंत्रे पंचदशानांत न्मध्ये पंचकलेखनं ॥

अष्टादशानांयंत्रांतः । ततः षट्कः प्रतिष्ठित ॥ ३ ॥

अर्थः-ते कारणधी १५ ना यत्रमां मध्यकोठामा ५ नो अंक लखवो, अने तेधी [अथवा त्यारवाद] १८ ना यत्रमां मध्यकोठामां ६ नो अंक लखाय छे ॥ ३ ॥

एक विशतियंत्रस्य । मध्यसप्तक एवतत् ॥

अंकास्तत्रैकादशात् । द्वादशान्तः मृपाततः ॥ ४ ॥

अर्थः-अने ते कारणधी २१ ना यंत्रमां मध्यकोठामां ७ नोज अक स्थापय छे, अने त्यारवाद अंकस्थापना [त्रणधी] ११ ना अक सुधीनीज स्थापय छे, परन्तु जेओ १२ ना अंक सुधीनी स्थापना कहेछे ते मृपा-मिध्या छे ॥४॥

विंशतेर्नत्रिभिर्भाग-स्तेनाष्टदशयत्रवत् ॥

सिद्धिकोशेद्विकंदत्वा-यंत्रमार्गसमाश्रयेत् ॥ ५ ॥

अर्थः-वळी २० ना अकनो त्रीजो भाग थतो नथी [कारणके शोप वधे छे,] माटे १८ ना यंत्रवत् आठमा कोठामा २ नो अक स्थापीने त्यारवाद यत्रना मार्गनो (यंत्र गतिनो) आश्रय करी अक स्थापता जवुं ॥ ५ ॥

चंद्रकोशेत्रिकः षष्टे । कोशेपि चतुरोधरेत् ॥

षट्कं पंचवाग्निकोशस्था । ऐक्यान्मध्येतुसप्तकः ॥ ६ ॥

अर्थ-[ते यत्र मार्गनो आ प्रमाणे—] पहेला स्थापवा, छटा वा, अग्निकोणमां रहेला

अथवा ६ अक्षरे एक सहस्र गणनि स्थापना, अने मध्य कोठामा ७ स्थापना ॥ ६ ॥

वायावष्टनवोदीच्य । निधौदशद्वितीयके ॥

कोशेषकादशस्थाप्या । एतद्यत्रहि विंशते ॥ ७ ॥

अर्थ - वायुकोणमा ८, उत्तरमा ९, नम्रमा कोठामा १०, अने बीजा कोठामा ११ स्थापना, अे प्रमाणे विंशति यत्र [वैश्योमाटे] यथो ॥ ७ ॥

यद्येक विंशयत्रेपि । आदिरेकादशातक ॥

अकन्यासो विंशतेस्तत् । यत्रेके द्वादशातता ॥ ८ ॥

अर्थ - जो २१ यत्रमा पण प्रणयी अग्निआर सुधीनाज नम्र अंक स्थापना आवेछे, ते तो विंशति यत्रमा तो पारसुधीना अके आवेज केरी रीति ? [कारणके २१ धी तो २० नो यत्र १ न्यून अरुवाछो छे] ॥ ८ ॥

ततः पचदशादियत्राणि

४	१०	१
२	५	८
९	७	६

१५

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

१	१०	४
८	५	३
६	१	९

१६

३	१०	५
८	६	३
७	१	८

१०

३	१०	५
८	६	४
७	९	९

१८

३	११	५
९	६	४
७	९	१०

१९

३	११	५
९	७	४
८	२	१०

२० वक्ष्योत्तमा

३	८	९
९	१०	४
११	२	७

मार्गगोत्तम २०

१७	२	१
४	१०	६
९	८	१३

२०

* ३-११-५ इत्यादि विंशति यत्र वैश्वमा उत्तम छे

१	६	१३
२	१०	८
१७	४	९

१०

शुद्धोत्तम

४	११	६
९	७	५
८	२	१०

२१

४८	१८	१९
१३	१०	१४
११	१२	१७

४०

आ पद्मावती यत्र छे

सप्तको विंशतेयत्रे । मध्यभागे प्रतिष्ठित ॥

तत्पोडशनवस्थाने । दशस्थानेश्चयुग् ७ दश ॥ ९ ॥

एकादशककोशस्था । अष्टादशततोद्धृताः ॥

सप्तवृद्धैतिकोशानां । त्रययत्रेऽत्र सूत्रितम् ॥ १० ॥

अर्थः-विंशति यंत्रमां ७ नो अंक मध्यभागमा रहेलो छे, तेरी नवना स्थाने १६ अने दशना स्थाने १७, अने कोठामा आगिआर आबंला होय तो तेने स्थाने १८ स्थापवा, अे प्रमाणे आ यंत्रमां त्रण कोठा सान सातनी वृद्धिअे स्थापवा कछ्या छे ॥ ९ ॥ १० ॥

१ पूर्वे कद्देवायला विंशति यत्रमां जे ७ आदि अंकी स्थाप्या छे, ते अकने मने अटले ते अकने बदले स्थापवा, परंतु "ते अक वे कोठामा" जेव नहीं.

सप्तार्धेनत्रिकेणापि । योजने स्थानकत्रयी ॥

सप्तस्थानेदशन्यासाद्देकादशतदष्टके ॥ ११ ॥

अर्थः—तथा सातनुं अर्धं त्रण [साडा त्रण तो पण पूर्ण अंकनी आपेक्षाअे त्रण] छे, ते त्रणनी योजना पण त्रण स्थानोमा—त्रण कोठामां करवी. जेथी सातना स्थाने १० स्थापवा, अने आठना स्थाने ११ स्थापवा ॥११॥

वाणपट्टपदेन्यस्ते । नवकेशेपमप्यत. ॥

द्वित्रिचारुचतुष्काना । स्थानेप्यकास्ताएवहि ॥ १२ ॥

अर्थ—तथा पाच अथवा छ ना स्थाने ९ स्थापवा, अने घे त्रण तथा मनोहर अक जे चार अे त्रण अक ना स्थाने तो अेना अेज अक रहेवा देवा ॥ १२ ॥

सर्वत्रप्येककोधार्यः । परमेश्वरवाचकः ॥

इतिपद्मावती यत्रे । नवकोशाइमेऽभवन् ॥ १३ ॥

अर्थ.—बळी अे सर्व कोठाओमां परमेश्वरना अर्थवाळो १ नो अक स्थापन करवो, अे प्रमाणे पद्मावती यत्रमा [पद्मावती देवीना वीसवा चालीसना यत्रमा] नव कोठा थया ॥ १३ ॥

मध्यात्सप्ताष्टचद्रागे-प्लेकाधिक्यंचतुष्टये ॥

कोणाष्टकंभुजशरामे ३ पु । पुनरेकाधिकःक्रम ॥ १४ ॥

२ अे पद्मावती यत्रनी स्थापना आ प्रमाण

१३	१८	१९
१९	१०	१४
११	१२	१०

अर्थ:-[अे उपर कहेली अंकस्थापना आ प्रमाणे-] सातमो आठमो पहेलो अने छट्टो अे क्रमवाळा चार कोठाआमा मध्य अंकथी अनुक्रमे अेकेकनी वृद्धिअे अक स्थापना करयी (१०-११-१२-१३ अको स्थापवा,) अने स्यारवाद चोधा नवमा बीजा अने त्रीजा अे चार कोठाओमां पण स्यांथी आगळ [१३ थी आगळ] अेकेक अधिक वृद्धिअे अको स्थापवा [अर्थात् १४-१५-१६-१७ अे अंकी स्थापवा. ॥ १४ ॥

आद्यात्रयेऽधिकेतुर्यः । षष्टात्रयेधिकेनिधिः ॥

मध्यात्रयेधिकेप्याद्य. । इत्थंकोशात्रयाधिकाः ॥ १५ ॥

अर्थ:-अे प्रमाणे अंक स्थापना करवाथी पहिला कोठामां जे अंक आव्यो छे, तेथी त्रण अधिक वृद्धिवाळो अक चोथा कोठामा आवे छे, अने छट्टा कोठाना अंकथी त्रण अधिक नवमा कोठानो अक आवे छे, मध्य कोठाना अंकथी त्रण अधिक पहिला कोठानो अंक आवे छे, अे प्रमाणे त्रण कोठा त्रण त्रण अधिक अकवाळा छे ॥ १५ ॥

आद्यात्पंचाधिकाःद्विष्टा-मुने ७ पंचाधिकाःकृते ४ ॥

।सिद्धे ८ पंचाधिकानदे ९ इतिपंचाधिकात्रयी ॥ १६ ॥

अर्थ:-तया पहेला कोठाना अंकथी पांच अधिक अंक बीजा कोठामां रह्यो छे, अने सातमा कोठाना अंकथी पांच अधिक अंक चोथा कोठामा आवे छे, अने आठमांथी पाच अधिक अक नवमा कोठामा आवे छे, अे प्रमाणे त्रण कोठाअे पांच पांच अधिक अंकवाळा छे ॥ १६ ॥

भूविश्वाकाआद्यकोशे । तदधःक्षणचंद्रभाक् ॥

तदधश्चंद्रपृथिवी-त्यकै कोशत्रयीभृता ॥ १७ ॥

अर्थ:-त्यां पहेला कोठामां भू=१ अने विश्व=३ अेटले १३ नो अक स्थपाय

१ पचदशवात् २० तत्रे पचाधिकत्वात्.

* आद्यत् अेटले पदरना यरथी-हंतटिप्पनिकाया.

छे, अने तेनी नीचे क्षण=६ अने चंद्र=१ अटले १६ नो स्थपाय छे, तेनी नीचे चंद्र=१ पृथ्वी=१ अटले ११ नो अंरु स्थपाय छे, अे प्रमाणे च्रण जातना अंरु स्थानो बडे [१३-१६-१७ बडे] च्रण कोठा (पहेली अघ पक्तिअे च्रण कोठा) भरायला—स्थपायला छे ॥ १७ ॥

युगैकधरणसिद्धौ । व्यस्ताःसख्याक्रमात्परे ॥

एकादशेभ्यःपरतो । यथायुगैकमाहितम् ॥ १८ ॥

अर्थः—तथा [सिद्धमा=] आठमा कोठामा युगैक अटले १२ नो अक स्थापयो, त्यारयाद आगळ आगळना [वांमावर्तना] क्रमधी अकेक वृद्धिवाळा अको स्थापया जेम ११ पछी अेक अधिक १२ नो अक स्थाप्यो [सवघ अग्रगाथामा] ॥ १८ ॥

तथा षोडशतोद्भ्वौ । निधौसप्तदशस्थिताः ॥

पूर्वेषोडशतोभूमी-विश्व्वाकस्यात्तदुत्तराः ॥ १९ ॥

अर्थः—तेम १६ यी अेक अधिक १७ नो अक निधिमा अटले नवमा कोठामा स्थापयो तथा १६ यी पूर्वे १३ नो अक छे, तेथी ते तेरना अक थी अेक अधिक अक [सवघ अग्र गाथामा] ॥ १९ ॥

चद्राभोनिधय १४पष्ट-स्थानस्था रवे निधे ९ पदात् ॥

पूर्व पूर्वाकृद्धत्वाद्दधोपिचद्रवार्धयः ॥ २० ॥

अर्थ—चद्राभोनिधि=१४ थाय ते नवमा कोठाथी उपरना छटा कोठामा स्थापयो चळीं पूर्व पूर्वना [१६ आदि] अकोथी अकेक अधिक वृद्धिवाळा [१७ आदि] अको होवाथी जेम छटा कोठामा चद्रवाधि अटले १४ नो अरु आव्यो छे, तेम छटाथी नीचेना नवमा कोठामा पण १७ नो अक छे ते पण चद्रवर्धिसज्ञा वाळोज आवेलो छे ॥ २० ॥ [तेनु कारण कहेवाय छे]

तत्राभोनिधिशर्द्धेन । सप्तसरयाक्रमान्मताः ॥

निवघ्नतियत प्राच्याश्चतुरः सप्तवावुधीन् ॥ २१ ॥

अर्थः-अंभोनिधि अथवा वार्धि आदि जे समुद्रवाचक शब्दो छे, ते समुद्र वाचक शब्दोनी संज्ञा बडे सातनो अक पण क्रमथी कहेला छे, जे कारणथी प्राचीन विद्वानो समुद्र शब्दथी ४ अथवा७नो अक कहे छे. ॥२१॥

सूत्रमेक यथाकार्य-द्वये प्राहुः प्रसाधनम् ॥

तथांभोनिधिशब्दोय । कोशद्वितयसाधकः ॥ २२ ॥

अर्थः-जेम अेरुज सूत्र बे कार्यमां साधन रूप कछुं छे, तेम जा समुद्र-वाचक शब्द पण अहिं बे कोठाओना बे अंकनो १४-१७ नो साधक छे. ॥ २२ ॥

पष्ठात्खेवाणवृध्या । स्यादंकं एकोनविंशते ॥

चतुर्दशाकेवाणोने । यद्वानवकलेखनम् ॥ २३ ॥

अर्थः-छट्टा कोठाथी उपर [छट्टा कोठाना १४ थी] पांच अधिक अंरुवाळो १९ नो अक आवे छे, अथवा जेज १४ मांथी पाच * न्यून करतां जे ९ नो अक आवे छे छट्टा कोठा उपर त्रीजा कोठामा लखवो. ॥ २३ ॥

चतुर्दशांकदग्रेपि । यद्वापंचदशांककः ॥

प्राप्तस्तमात् पडूनत्वे । लेख्याआग्नि पदेऽनव ॥ २४ ॥

अर्थः-अथवा चौदनी आगळ पंदरनो अंक आवे छे, ते पंदरमांथी छ वाद करतां [कोठानो छ नो अंक वाद करतां] ९ प्राप्त थाय छे, माटे पण पण त्रीजा कोठामां ९ अक लखवो ॥ २४ ॥

पडूनत्वेमनोऽष्टरंके । वसव ८ स्तिथिसंमिते १५ ॥

पंचोनत्वेदिशोमध्ये१० । पडूनसूनदिक्चसूत्रितं ॥ २५ ॥

२ वाणोनत्वे पदसु एक शे।।त् अग्रे नवाकात्

* वाणोनत्वे पदसु एक शपात् अग्रे नवाकान्=कोठानो ६ नो अक तेमाथी ५ बाद करता १ आवे तेनी अग्रे, छट्टा कोठामा रहेला १४ अकमाथी ५ बाद करता ९ आवे ते स्यापता १९ नो अक बीजी कोठामा स्यपाय.—इति टिप्पनिका भावार्थ.

अर्थः-मनु=१४ ना अकमाथी [छद्दा कोठाना १४ माथी] छ न्यून करता
 घसु=८ आवे, अने [१४ ने घदले अग्राक] १५ माथी पाच बाद करतां
 दिर्घी=१० आवे, ते मध्यमा स्थापयो अे प्रमाणे ६-८-१० अे अण अकनी
 सूत्रणा रचना दर्शावी छे ॥ २५ ॥

यद्वाद्यतुर्यकोशस्थ-त्रिकपण्मेलनान्नव ॥

सिध्यत्कश्कोशयोर्द्वैश्च७-योगादपियथानव ॥ २६ ॥

अर्थः-अथवा पहिला अने चौथा कोठामा रहेला ३ अने ६ ने मेळवता ९
 थाय, अथवा आठमा अने नवमा कोठामाना २ तथा ७ अे [१२ माना
 २ तथा १७ माना ७ अे ये ने मेळवता पण जेम ९ थाय छे ॥ २६ ॥

तथापष्टपदस्थायि । चतुःकेणक्रमगत ॥

पचकोयोज्यतेजात । निश्चयान्नवधारणम् ॥ २७ ॥

अर्थः-अथवा छद्दा कोठामा रहेला [१४ माना] ४ अकनी पछी अनुक्रमे
 आवतो [अकगणितना अनुक्रममा आवतो] ५ नो अक, ते ये ने मेळवता
 पण निश्चययी ९ नु अरुस्थापन बीजा कोठामा थाय छे ॥ २७ ॥

नवकेपिचपचारया । तस्यस्थानेतदासनात् ॥

यद्वामध्यस्थपचाके । पूर्वाकमेलनान्नव ॥ २८ ॥

अर्थः-[अे चार अने पाचनो अक मेळववानु कारण के] नव कमा पण
 पाचनु नाम छे, (अर्थात् 'नव' करेवाथी पांच नो अर्थ थाय छे,)
 कारण के पाचना स्थाने नवनो अरु पण [विंशति यत्रमां जेम १५ वा
 १६ वा १९ अेकज कोठामा आवे छे तेम] आवे छे माटे अथवा नवनी

१ पचावती स्तोत्रना आ ग्रथमांज दर्शवैला पहिला मूळ काव्यमां बीजा चरणामा
 छे.

संख्यामा पांचनो अंक सर्वथी मर्व्यमां आच्यो छे. माटे ते पांचना अंकमां
पूर्वनो चारनो अंक भेळवता पण ९ थाय छे ॥ २८ ॥

पट्पंचकयोरत-र्भावात्सर्वाकसंग्रहः ॥

व्याख्यायांनवतत्साक्षात् । वाणपण्णवसूत्रतः ॥ २९ ॥

अर्थः—अथवा सर्व अंकनो अटले नव अंकनो अंतर्भाव पाच अने छ अ
थे अंकमां छे, ते कारणथी व्याख्यामां [आ विंशति यत्रनी वृत्तिमां]
जे नवनो अंक छे ते ने साक्षात् ५-६-९ अे त्रणे अकनी सूत्रणाथी [त्रणे
अंक रचनामां, सहशपणाथी] कछ्यो छे ॥ २९ ॥

वसवोऽष्टौ भुजस्थाने । तेऽष्टदशसचंद्रतः ॥

चंद्रामोनिधिसूत्रस्य । चंद्र शद्वस्यसंग्रहात् ॥ ३० ॥

अर्थः—त्यां वसु अटले ८ नो अंक ते [भुजस्थाने=] पीजा कोठामां लगवो
अने तेने चंद्र=१ सहित करता १८ नो अंक थाय, कारणके चंद्रामोनिधि
अे सूत्रथी अर्हि चंद्र=१ तुं ग्रहण [अनुवृत्तिथी] ग्रहण करवानु छे ॥३०॥

वाणवृद्धा जवेत्यर्थात् । पड्वृद्धा सवोथवा ॥

चतुर्दशपदे पष्टे । तेससदशतोहिखे ॥ ३१ ॥

अर्थः—प्राचनी वृद्धिथी [आठमा कोठानो १२ मांनो २ नो अंक जेम]
जव=७ थाय छे, अने छ नी वृद्धिथी ८ थाय छें, तेथी छटा कोठामा १४ ते
सत्तरनी उपर रहेला छे (६+८=१४ तथा ९+८=१७ अे प्रमाणे वने अंक
१४ अवे १७ ते पोताना कोठाथी आठ आठ अधिक छे) ॥ ३१ ॥

१ संख्यायां पांचको मध्यस्थ तस्मिन् सर्वाका मिथेति सर्व मुखस्थानमवर्णभित्यादिवत्=
जेम सर्व अक्षरोमा अ वर्ण मुख्य छे, कारणके तेंमां सर्व अक्षरोनो समावेश थाय
छे, तेम सर्व (नव) अक्षोमा ५ नो अंक मध्यस्थ छे, तेमा सर्व अंक मळे छे
२ पचकात् पूर्वाकः ४ तेन मेटने नव=संख्यायाः—

वाणपुण्ड्र योगतेश्चेका-दशतत्समुत्सेनव ॥

मध्य१०नवधिकं चाप्तौ । प्राच्यावस्त्राधिकततः ॥ ३२ ॥

अर्थः-तथा पाच अन छ मळीने ११ नो अंक जेम (१६ माना ६ वा ५ नी नीचे) सन्मुख रघो छे, तेम [१४ ना] ४ अने ५ मळीने घनेलो ९ नो अक पण १४ नी उपर १९ ना रूपमा सन्मुख रघो छे, अने विदिशिमाथी ११ नी पण सन्मुख रघो छे ॥ तथा मध्यगत १० थी ९ अधिक अचो १९ नो अक अग्निकोणमा आन्यो छे, त्यारे अज १० थी ८ अधिक १८ नो अक पूर्व दिशामा आन्यो छे ते योग्यज छे ॥ ३२ ॥

पाठान्तरे वाणरूप । वसुदिग्दिगीतीरणात् ॥

स्यु'पचदशतद्वाण-रूपाभ्यामिह रामशगा ॥ ३३ ॥

अर्थ-पाठान्तरथी (अन्य ग्रंथना पाठमा) वाण रूपा वसु दिग् दिग् अे प्रमाणे कहेवाथी ते वाण=५ रूप=१ मळीने १५ थाय छे ते त्रीजा कोठामा स्थपाय छे ॥ ३३ ॥ (अहिं १९ वाञ्छा त्रीजा कोठामाज १५-१९ अे ये लग्नाय छे)

वसुयुक्तादिशस्तेष्टा-दशद्वितीय कोशगाः ॥

दिशोमध्यगताएव । सिद्ध विशातियत्रक ॥ ३४ ॥

अर्थ-अने वसु ८ सहित दिशा=१० अेटले १८ नो अक बीजा कोठामा स्थपाय छे अने दिशा=१० नो अक तो मध्यमा होय छेज, अे रीते पण विशातियत्र सिद्ध थाय छे ॥ ३४ ॥

खेचराभास्कराद्याये । ईशदिपुदिशास्वमी ॥

भूविश्वाद्यास्तथैत्राकान्यसनीयायथागम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-तथा इशान कोण विगेरे दिशाओमा अनुक्रमे सूर्य विगेरे ग्रहो स्थापवा, अने अनुक्रमे [भू विश्व=] १३ विगेरे अको पण आगमने स्थापवा ॥ ३५ ॥

अत्रैवमका एकाद्या । यावदेकोनविंशतिः ॥

एक वेगमनि सावर्ण्यात् । चितायां पंचपट्टयो ॥ ३६ ॥

अर्थः—जे प्रमाणे अे विशति यंत्रमां १ थी मांडीने १९ सुधीना अंक यथा योग्य । १०-११-१२ इत्यादि रीते आवे, परन्तु १-२-३ इत्यादि रीते नहिं अे रीते] आवे कारणके अेक कोठामां ५ अने ६ नो अंक सहश होवाथी अेरु अेरुठा आवे छे (अर्थात् १५-१६ अे वे अंक अेकज कोठामां आवे छे) ॥ ३६ ॥

पुनःपुनश्चंद्रपदा-दमृतांशो-प्रधानता ॥

पद्मावत्या-साधनेषु । चक्रेश्वर्यारवेरिव ॥ ३७ ॥

अर्थः—पुनः पुनः चंद्र=१ नो शब्द [पद्मावती काव्यमां] आववाथी पद्मावतीना विशति यत्रमा चद्रनी प्रधानता छे, जेम चक्रेश्वरी देवीना यत्रमा सूर्यनी प्रधानता छे तेनी पेठे. ॥ ३७ ॥

ततःपंचदशांकस्यां-तर्भावः क्रियतेषुधैः ॥

कलावाचि षोडशाके । सर्वत्र पंचकाश्रयात् ॥ ३८ ॥

अर्थः—ते कारणथी विद्वाना कलावाचक ('कला' शब्दथी) १६ ना अंकमां सर्वत्र ५ ना अंकनो आश्रय होवाथी १५ ना अंकनो अंतर्भाव करे छे [अर्थात् १६ अने १५ अे वे चद्रनी कळा अने तियिवाचक होवाथी सहश गणीने गणितमा तुल्य गणे छे] ॥ ३८ ॥

यथैकादशतः पंच-धिकत्वे षोडशोपरि ॥

चतुर्दशोपरितथा । युक्तैवैकोन विशतिः ॥ ३९ ॥

अर्थः—जेम सातमा कोठाना ११ ना अंकथी चोथा कोठानो १६ नो अंक
 ॐ एकादशादिषु १-२-३-४-५ पच पट्टकयोरैकत्वात् ७-८-९-१० इति तत ११-१२-
 १३-१४-१५-१६-१७-१८-१९ २ ० ५ ११ थी १९ सुधीनानव अंक
 वे १ महित सवे अरु गण. ५.

पांच अधिक छे, अने उपर आवेलो छे, तेम श्रीजा कोठानो १९ नो अकपण छटा कोठाना १४ ना अरुथी पाच अधिक होई ने उपर जागो छे ते युक्तज छे ॥ ३९ ॥

यत्रेस्याद्विंशतेः सैके । चत्वारिंशत्सु सग्रहात् ॥

एकोनविंशतौतत्र । केवल नवक ग्रहः ॥ ४० ॥

अर्थः—बळी सर्व कोठामा १ सहित होवाधी अे विंशति यत्रमां ४० ने सग्रह [सर्व धाजुधी ४० नी गणत्री] धवाधी अेज विंशति य ४० नो यंत्रपण गणाय परतु तफावत अेज के अेमा १९ ना स्थाने केव ९ नो अंक गणत्रीमा लेवो परतु १ नो अक न गणवो ॥ ४० ॥

एकोनविंशति.पूर्णा । सख्येयाकोण योजने ॥

नान्यथासगतियत्रे । वैपम्यात्त्रिविभाजने ॥ ४१ ॥

अर्थ—परन्तु रूणाधी रूणानी [विदिशिनी] पक्ति गणता अे १९ नो अक सपूर्ण गणवो नहतर घण विभागमा विपमता आववाधी यत्रने विपे यत्र पद्वति—गणितरीति मळती आवे नहिं ॥ ४१ ॥

सैक त्रिंशत्सु खेटा ९कै—श्चत्वारिंशच्च विंशतेः ॥

यत्रे तदस्य द्विगुण । फलदानस्य सूचनम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—१ ना अक सहित ३, अटले १३ अेक सहित वसु=८ अटले १८ अने अंक सहित खेट ९=अटले १९ माधी ९ अे घण मळीने अे विंशति यत्रमा ४० धाय छे. तेथी अे यत्र द्विगुण फळ आपे अेवी सूचना वाळो छे कारणके ४० ते वीसथी द्विगुण छे, माटे फळ द्विगुण छे ॥ ४२ ॥

१ यणे मळीने ४० नी गणत्री न धवाधी अहिं यण विभागनी विपमता जाणवी.

अत्रकेचिदूर्ध्वं भुविश्वेत्यादिकाव्ये यंत्रन्यासः किन्तु भु इत्येकाक्षरोमंत्रः
 विश्वेति त्रयोदशाक्षरः ईक्षण इति ह्यक्षर इत्यादि अक्षरगणनया मंत्र
 भेदान् व्याख्याति तदल्पं यत्राधिकारात् तथा १-१३-२-११-१२-१- इति
 पुनरेकाक्षर मंत्र गणनापत्तेश्च यदि विश्व शब्देन त्रयतदापि
 १-३-२ ११-१०-१ तथैव यदि सत्या शब्देन एक संख्या पदेन १९ तदा
 तावत्सत्याक्षर मंत्रस्य दोषः प्रनीतः एव पण् नव वसू नित्यत्र नवाक्षरे
 प्रोक्ते पुनः खेचर पदेन तदुक्तिर्जया आशा पदेन दिक् पदे नच पौनरुक्त्य ।
 तथा भू विश्व १३ ईक्षण चंद्र १२ चंद्र पृथिवी ११ युग्मैक १ इत्यत्रापि तद्
 भावनीयमीति अत्रापि विंशति २० योजना तत्र प्रथम निरेकत्वे योजना
 ३-८-९ ॥ ६-१०-४ ॥ ११-२-७ ॥ ३-८-११ ॥ ८-१०-२ । ९-४-७ । ३-१०-७ ।
 ९-१०-१ । इत्यष्टधा योजना

अत्र एकादशस्थाने कौणगत्यां एक गणनं ' एक एङ्ग एक ' इति लोके
 एकैव गुणने तदेव इति शास्त्रे सरूपाया अविबक्षतः अविबक्षापि एकस्य
 वस्तुस्वरूपात् स्वात्मलाभे परानपेक्षणात् ' लहु मखिज्ज दुचिय ' इति
 सिद्धान्त वचनात् चैके

भू विश्वेत्यादि यंत्रे । विशतिर्गति मेलने ॥

गतीनां विशति ज्ञेया । गुरुणामुपदेशतः ॥ ४३ ॥

३-८-९ । १-१८-१ । ३ एकोना अष्ट ७-१-९ यद्वा कोशद्वयेन विंशतिः
 १३-७ एवं २० ततः १-१९ एकोन करण ज्ञापक वाण् पण् नव सूत्र
 वाणोनाः पट् तदा एक एव । एव भेदाधिकृत्येपि सैक निरेक विधे
 ज्योतिःशास्त्रादौ प्रसिद्धेः नवस्थाने पचक भावने १३-१-१-५ । १-१८-१ ।
 १-३-१-१५ अत्रां क व्यस्त करणे ज्ञापक ' वाणरूप वसुदिक् दिगितिपाठः
 अथ वाण पण् नव इति पाठात् पचक स्थाने पट् भावने १३-१-६ । १-३-१
 ८-१-६ । ३-१-१६ एव सुपरितनं पंक्तौ विंशति योजना एकादशधा तेनैव
 तृतीये कोशे १० रक्षायां १६ विद्यार्थे १९ अग्निकोणे लेखन १६-०-४ ।
 ६-१०-४ । ६-०-१४ । इति मध्यपरतौ तिस्रो योजना ११-२-७ । १-१२-७ ।
 १-२-१७ । इत्यथ पंक्तौ योजना एवमापतरीत्या ९ योजना शंष
 माधिक तत्रां क वै १०-५ ॥ ३-१६-१ । ३-६-११ । इति

विंशतित्रय १८-०-२ । ८-१०-२ । ८-०-१२ । इति मध्य पक्तौ विंशतित्रयं
 ९-४-७ एकाधिक ४ तदा ५ तदध, एकोन ७ तदा ६ एव ९-५-६ । ततः
 एकोन ४ तदा ३ एकाधिका सप्त ७ तदा ८ एव ९-३-८ अथ नव ९ स्थाने
 पचभावेने १०-४-१ । ५-१४-१ । १-१-१-१७ । अत्रैक कोप्याधिक १५ १९
 इति द्वेषा एकास्मिन् कोशे स्थापनात् पचकस्थाने पङ्क्त्यभावेने १६-३-१ एकोन
 ६ तदा ५-१४-१ एकाधिकाः ६ तदा ७ पुनः एकाधिकथ ४ तदा ५ पुनः
 एकाधिकाः सप्त ७ तदा ८ एव ७-८ । इति तृतीय पंक्तौ उद्भूत्वे
 विंशतित्रय ३ १०-७ । कोणे ९-१०-१ द्वितीय कोणे अत्रापि ११ स्थाने
 एरुगणने समाधि प्राग्वत् मूलमेक एव तत्र मध्यस्थ दशानुरोधा-
 देकादश भावात् एव ९ योजना आयतत्वे ९ योजना उद्भूत्वे गतिद्वय
 कोणयो. एव सर्वा विंशतिवार विंशतय अत्र १३-७ एव २० इय योजना
 अदोलन सिंहासन यत्रादिषु मध्य पक्तौ कोशद्वय मीलनात्तावदक
 साधनात् तदनुसारेण तथा १३-१-१५ इत्यादि योजना कोश चतुरक
 मीलनात् जायते सा कमलाकार विंशति यत्रे कोशचतुष्टय मेलनानुसारा
 द्वेषा शेषा योजना अपि सूत्रस्य गभिरार्थत्वात् यत्रेपु गतीना वैचिन्त्या-
 चावगम्या ' भू विश्व १३ क्षण चद्र १६ चद्र पृथिवी ११ युग्मे क १२
 सख्याक्रमात् चन्द्राभोनिधि १७-१४ चाण् पण् नव १५-१६-१९ वसू न ८
 १८ दिक् १० गेचरादिषु ॥

अर्थ - अर्हि केटलाक अेम करे छे के—भू विश्व इत्यादि पदोवाळा प्रथम
 ऋत्वेवापला विंशति यत्र सवर्धी पद्मावती काव्यमा यन्त्रन्यास अेटले
 अरु सूचना वा अकस्थापना करी नथी, परतु भू अे अेकाक्षरी मन्त्र छे,
 अने विश्व अे पदथी १३ अक्षरवाळो मन्त्र, अने ईक्षण* अे पदथी अे
 अक्षरवाळो मत्र [ईक्षण अेटले नेत्र अर्थ होयाथी अे अक्षरवाळो मत्र]
 छे, इत्यादि रीते अक्षरोनी गणत्री वडे भत्रना भेदोनी व्याख्या करी छे,
 पण ते अर्हि अल्प अेटले गौण छे, कारणके अर्हि तो यत्रनो अधिकार
 घाले छे

ॐ काव्यमा क्षण अेटले ६ ना अर्थ वाळो शब्द कस्यो छे. अने अर्हि ईक्षण शब्द वेना
 अर्थवाळो कस्यो ते पथात्तनो शब्द विश्व छे तेनो वटले विश्वे होय तो तेम थाय.

तथा १'-१३-२ । ११-१२-१ अे प्रमाणे पुनः अेकाक्षर मत्र गणनानी प्राप्ति होवाथी जो विश्व शब्दथी ३ विचारथी तो पण १-३-२ । ११-१२-१ धाय अने ते प्रमाणे ' संख्या ' अे शब्द वडे अेक शब्द सहित १९^१ धाय, ल्यारे तो तेदली संख्यावाळा अक्षरानो अेटले १९ अक्षरानो मन्त्र [विंशति मंत्र] दोप वाळोज समजाय छे, अने अे प्रमाणे तो पण नव घसुनी=६-९-८ अे पदोमां नव अक्षर कख्या छे, अने पुनः खेचराशादिषु अे पदोमा खेचर अे पदवडे पण ९ अक्षर कख्या छे, तेथी द्विरुक्ति कथन दोप जाणवो, अने आशा अेटले १० तेमज दिक् अेटले पण १० अे पण द्विरुक्ति-पुनरुक्ति दोप प्राप्त थाय छे.

तथा भू विश्व=१३ इक्षण चंद्र=१२ चंद्र पृथिवी=११ अने युग्मैक=१२ अे पदोथी अेमा पण विंशतिनी अेज भावना विचारवी (अेटले सदोप छे-विचारवी) इति तर्क विचार समाप्तः

हवे द्विगुण गणत्रीवाळा विंशति यंत्रना गतिभेद कहेवाय छे.

अत्रापि विंशति २० योजना—तत्र प्रथमं निरेकत्वे योजना

अर्थः-अहिं [४० नी गणत्रीवाळा] विंशति यंत्रमां २० नी योजना आप्रमाणे—त्यां प्रथम १ ना अंक रहित ३ आदि अंकोथी २० नी गणत्री थाय छे ते आ प्रमाणे—

पहेली तीर्छीं पंक्तिमां [१३-१८-१९ मां] ३-८-९ अेटले २० ॥

थीजी तीर्छीं पंक्तिमां [१६-१०-१४ मां] ६-१०-४ अेटले २० ॥

त्रीजी तीर्छीं पंक्तिमां [११-१२-१७ मां] ११-२-७ अेटले २० ॥

१ भू=१ विश्व=१३ इक्षण=२ चन्द्रचन्द्र=११ पृथ्वीयुग्म=१२ एक=१ [अथवा एक=१

अने संख्या=९=१९)

१ एक=१ संख्या-९ अेटले १९

४०	४०	४०	४०	४०
४०	१३	१८	१९	४०
४०	१६	१०	१४	४०
४०	११	१२	१७	४०
४०	४०	४०	४०	४०

० इति द्विगुणांक

विंशतियत्रे ४०

પુનઃ એ પ્રમાણે અઘઃપંક્તિમાં [એટલે ૧૧-૧૬-૧૧ ઇત્યાદિરીતે]
૩-૬-૧૧ એટલે ૨૦ ॥ ૮-૧૦-૨ એટલે ૨૦ ॥ ૯-૪-૭ એટલે ૨૦ ॥ પુનઃ ઘેવિદિશિ
પંક્તિઓમાં ૩-૧૦-૭ એટલે ૨૦ ॥ ૯-૧૦-૧=૨૦ ॥ એ પ્રમાણે આઠ
પ્રકારે એકના અંક રહિત * ગણત્રી કરી

અહિં વિદિશાની પંક્તિમાં ૧૧ ના સ્થાને જે ઘે એકઢા છે તેનો ગુણાકાર
કરતા ' એક એકે એક ' એ પ્રમાણે લોકમાં એક વઢે [કોઈપણ રકમને]
ગુણવાથી જવાય તેનો તેજ આવે છે, માટે ઘાસ્ટ્રમાં ૧ ના અકને સઢ્યાની
વિવઢા નથી એટલે ૧ ને સઢ્યામાં ગણ્યો નથી, કારણકે એક છે તે પોતે
ઘસ્તુ સ્વરૂપ એટલે સ્વાભાવિક છે, કારણ કે સ્વાત્મલાભમાં (એટલે
એકના જ્ઞાનમાં) પરની [ઘીજી] ઘસ્તુની અપેઢા નથી હોતી તે કારણથી
સિદ્ધાન્તનુ પળ વચન છે કે ' લઢુ સાઢિજ્ઞ ઢુઢિય ' લઢુ સંઢ્યાત [એટલે
ઓઢામાં ઓઢી સઢ્યા] નિઢ્ય ઘેજ છે

॥ ઢૂ વિશ્વાદિ વિંશતિ યત્રની ૨૦ ગતિ. ॥

અઢેઃ-હઢે ઢૂ વિશ્વ ઇત્યાદિ પઢોવાઢા પઢ્ઢાવતી યત્રની ઘીશની ગણત્રી
૨૦ રીતે ઢાય છે, તે ઘસ ગતિઓ ઢ્રીગુરુના ઉપઢેશથી આ
પ્રમાણે જાળઢી ॥ ૪૩ ॥

અર્થઃ- અહિં ૧૩ ૧૮-૧૯ એ પરેલી પંક્તિમાં ૧૧ રીતિ આ પ્રમાણે—
૩-૮-૯ એટલે ૨૦—એ ત્રણ અંકથી
૧-૧૮-૧ " ૨૦— " "
૩-૭-૧-૯ " ૨૦—એ ઘાર અંકથી (અહિં ૧ ન્યૂન ૮ એટલે ૭ છે)
૧૩-૧૭ " ૨૦—એમાં ૧ ન્યૂન કરવાની રીતિ ઘાળ પૂળ નઢ એ
૧-૧૯ " ૨૦—સૂત્રથી ઘાળ=૫ ન્યૂન ૬ એટલે

એકાધિકપણામાં પળ એજ સૂત્ર જાળઢુ અને
કરવાની ઘિધી જ્યોતિષ શાસ્ત્રાધિકમાં

* અહિં ૧૦ અને ૧૧ ના અકનો એ
ગણત્રીમાં ઢીધો છે અને ૧૨-૧૩ ઇત્યા
ઢીધો નથી, કારણકે ૨ થી ૧૧ સુધીના

हवे नवपा स्थाने [१९ ने बदले] ५ नो [१५ नो] अक विचारतां
 १३ १-१-५ अटले २० ॥ १-१८-१ अटले २० ॥ १-३-१-१५ अटले २० धाय
 छे. अहिं अकोने छटा पाडवानी रीतिने जणावनार वाणरूप वस्तु दिग्
 दिग् अज पाठ [पद्मावती काव्यमां कखो छे ते] जाणवो. हवे पाण
 षण नव अे पाठयी पांचना स्थाने ६ विचारीअे तो १३-१-६ अटले २०
 तथा १-३-१-८-१-६ अटले २० तथा ३-१-१६ अटले २० अे प्रमाणे उपरनी
 पहेली २० नी योजना अगिआर प्रकारे थई अने काव्यमां करेला अैश्वर्य
 रक्षण लक्ष्मी अने भारती अे चार मांयी अग्निखूणामां त्रीजा कोठामां
 १५ नो अक अैश्वर्य माटे १६ नो अंक रक्षा माटे अने १९ नो अंक
 विद्यानो माटे स्थापवो.

अर्थ:-मध्य पंक्ति १६-१०-१४ मां २० नी गतिओ आ प्रमाणे—१६-०-४
 अटले २० ॥ ६-१०-४ अटले २० ॥ ६-०-१४ अटले २० अे अण रीति
 मध्य पंक्तिमां थई.

तथा ११-१२-१७ अे निचेनी पंक्तिमां ११-२-७ अटले २० ॥ १-१२-७
 अटले २० ॥ १-२-१७ अटले २० ॥ अे प्रमाणे नीचेनी अे पंक्तिमां षण
 अण योजना दर्शावी. अे प्रमाणे आयत गति [तीर्छा दीर्घ पंक्तिनी
 पदतिअे] नव गति अे २० नी योजना दर्शावी, अने शेष [आठ]
 रीतिओ अंकना विषमपणायी अधिक जाणवी.

(हवे उर्ध्व गनिअे २० नी योजना विचारतां) पहेली १३-१६-११ नी
 पंक्तिमां १३-६-१ अटले २० ॥ ३-१६-१ अटले २० ॥ ३-६-११ अटले २० ॥
 अे प्रमाणे पहेली उर्ध्व पंक्तिमां अण गतिअे २० धाय छे

बीजी १८-१०-१२ नी उर्ध्व पंक्तिमां १८-०-२ अटले २० ॥ ८-१०-२
 अटले २० ॥ ८-०-१२ अटले २० ॥ अे रीते मध्य पंक्तिमा अण रीति थई

त्रीजी १९-१४-१७ नी उर्ध्व पंक्तिमां ९-४-७ अटले २० ॥ तथा १४
 मांना ४ ने अेक अधिक गणतां ५ गणीअे अने तेनी नीचे १७ ना ७ ने
 १ न्यून करी ६ गणीअे तो ९-५-६ अटले २० धाय. त्यारमाय अे पारने
 अेक न्यून करी ३ गणीअे अने अे सातने अेक अधिक करी ८ गणीअे
 त्यारे ९-३-८ अटले २०

૫ વિચારી એ તો ૧૫-૪-૧ એટલે ૨૦ ધાય ॥ ૭-૧૪ ૧ એટલે ૨૦ ॥ ધાય અને ૧-૧-૧-૧૭ એટલે પળ ૨૦ ધાય, એમા ઘ્રણ એકઠાને ઘડલે ધાર એકઠા ગણવાથી એક એકઠો અધિક ગણ્યો તેનુ કારણકે ઓગળીસના કોઠામા ૧૯ અને ૧૫ એ યન્ને અરુ સ્થાપના ધાય છે તે કારણથી એ એકઠા કોઠાના ઘે એકઠા ગણ્યા ઘઠી ઓગળીસના કોઠામા ૧૯ અને ૧૫ની અકસ્થાપના કરાય છે તે પદરમા ૫ ને અકને ૬ સદ્દય ગળીએ ત્યારે ૧૬ નો પળ અક આવે તેથી ૧૬-૩-૧ એટલે ૨૦ [અર્હિ ચૌદમાના ચાર ને એક ન્યૂન કરી ઘ્રણ ગણેલા છે] પુન. એ ૬ ને એક ન્યૂન કરી ૫ ગળીએ તો ૫-૪-૧ એટલે ૨૦ ધાય તથા એ છ ને એક અધિક કરી ૭ ગળીએ [સત્તરમાના] સાતને એક અધિક કરી ૮ ગળીએ ત્યારે ૭-૫-૮ એટલે ૨૦ ધાય એ પ્રમાણે ઘ્રીજી ઉર્ધ્વ પક્તિમા ઘ્રણ રીતે [અને ન્યૂનાધિક પદ્ધતિ સહિત ૯ રીતે] ઘ્રીસની યોજના દર્શાવી

વિદિશિપક્તિમા ૩-૧૦-૭ એટલે ૨૦, અને ઘ્રીજી વિદિશિમાં ૯-૧૦-૧ એટલે ૨૦ ધાય છે અર્હિ પળ ૧૧ ના સ્થાને ૧ ગળાના કારણનુ સમ્પ્રધાન પૂર્વે કહેલી રીતે વિચારયુ એમા મૃઠ અંક ૧ જ છે તે ૧ મા મધ્ય કોઠામા રહેલા ૧૦ ના અનુરોધથી [અનુસરણથી] ૧૧ ધયેલા છે.

એ પ્રમાણે એ વિંશતિ યત્રમા નવ યોજના (નવગતિ) આયત્તગતિ-વાઢી, નવ યાજના ઉર્ધ્વગતિવાઢી અને ઘે યોજના વિદિશિગતિવાઢી ધવાથી ઘ્રીસ રીતે ૨૦-૨૦ ધાય છે ॥ ઇતિ વિંશતિ ગતિ ભેદાઃ ॥

એમા ૧૩-૭ એટલે ૨૦ એ યોજના ગતિ અદોલાંન ઠિ મધ્ય પંક્તિમા ઘે કોઠાના અક મેઢઢવાથી તેટલો અક સિદ્ધ ધાય છે, અને તે અનુમારે તેવી રીતે ૧-૩-૧-૧૫ ઇત્ત કોઠાના [ઘ્રણ કોઠાના] ચાર અંક કમઢાહતિવાઢા વિંશતિ યત્રમા ચાર અનુસ્વારે શેષ યોજનાઓ પળ જાળવી ઇત્યાદિ પદવાઢુ કાઢ્ય] ગઢીર અર્થવાઢુ

૧ અદોલન અને સિંહામન એ યત્રના ભેદ વિશેષ સ

विचित्र होवाची अे प्रमाणे शेष योजनाओ (२० योजनाओथी उपरान्तनी योजनाओ) जाणवी [परन्तु गणत्रीमां २० योजनाओनुंज ग्रहण कराय छे.]

एतत्काव्यनिवद्ध शुद्धचरणा-यंत्रं स्फुटं विंशतेः ।

संसूत्र्यार्जितपुण्यतो विजयतां श्रीतीर्थकृच्छाशनं ॥ ४४ ॥

अर्थः-भूविश्व=१३, सणचंद्र=१६, चंद्रपृथ्वी=११ युग्मैक=१२ अे संख्यानां क्रमथी तथा चंद्रांमोनिधि=१७ अथवा १४ घाण=१५ पणू=१६ नव=१९ वसु=१८ अे चार अंकमा चंद्र पदनी अनुवृत्ति होवाथी १ नो अंकयुक्त कराय छे.] दिक्=१० तथा 'खेचराशादिपु' अे पद अनेक अर्थवाळुं पूर्वे कहेवाई गयुं छे तेथी अहिं अेनो अर्थ कस्यो नथी] अे पदोवाळा पूर्वे कहेवाई गयेला काव्यमां रचायेला शुद्ध चार चरणोथी २० नो यंत्र जे रीते प्रगट थाय छे ते रीते २० नो यंत्र प्रगट दर्शावीने उपार्जन करेला पुण्यथी श्री तीर्थकर भगवंतनुं शासन विजयवत वतों ॥ ४४ ॥

तद्वाणरूप वसुदिक् । दिक् पाठोपिसमार्थित. ॥

वाण पणू मुनि वस्वाशे-त्येव पाठो विसाध्यतां ॥ ४५ ॥

वळी ते पाठमांथी घाण=५ रूप=१ वसु=८ अने दिक्=१० अे पाठ पण समर्थित कर्यो [प्रगट कर्यो] तथा वाण पणू=६ मुनि=७ वसु=८ अने आशा'४ अे पाठ पण सिद्ध कर्यो ते जाणवो. ॥ ४५ ॥

वाण-द्वक् श्रुतयो दिग् दिग् । एवं पाठोपि चिंत्यताम् ॥

दृग्-दर्शनानि पद् धातुः । श्रुतयोप्येतिभावनात् ॥ ४६ ॥

तथा घाण=५ द्वक्=६
विचारयो. अेमां द्वक्
अतिओ ८ छे अे ५

दिग् दिग्=१०-१० अे पाठ पण
छे, अथवा छ धातु छे,
अने श्रुति शब्द जाणवा.

ગતિ વૈચિત્ર્યમન્યત્ર । યત્રે પચદશાત્મકે ॥

દૃશ્યતે લોક વોધાય । તદિહાપિ નિદર્શ્યત ॥ ૪૭ ॥

અર્થ:-ચઢી ઘીજા પ્રકારના પદરીયા યંત્રમાં ગતિને જે વિચિત્રતા દેખાય છે તે વિચિત્રગતિ અર્હિ પળ લોકમાં જ્ઞાન થવાને અર્થે દર્શાવાય છે ॥૪૭॥

‘ અત્રપદ્ દ્વિસપ્તયત્રે કોણગતિઃ ૭-૩-૬ દ્વિતીય કોણગતૌ ૬-૩ મેલને નવ ગ્યાયૃત્ય પુન. પદ્ ગણને ૧૬ ભવંતિ દ્વિતીયે ૪-૧૦-૧ અસ્મિન્ યંત્રે સિંહાસનાદિ યત્રવત્ મધ્ય પક્તિકોશ દ્વયાદપિ પંચદશ પૂરણાત્ યંત્રાણાં ગતિ વૈચિત્ર્યદર્શનાદેવ વિંશતિયત્રં શ્રદ્ધેય મિતિ ભાવઃ એકત્ર કોણ ગતૌ ન્યુનાધિકત્વે પ્યદોપાત્

અર્થ:-અર્હિ ૬-૨-૭ એ અક સ્થાપનાવાઢા પંદરીયા યંત્રમાં વિદિશાગતિ ૭-૩ ૫ એટલે ૧૬ અને ઘીજી વિદિશાગતિમાં ૬-૩ એટલે ૯, અને પુનઃ પાઢાવાઢીને ૬ ગણતા [૬-૩-૬ એટલે] ૧૬ થાય છે ઘઢી ઘીજા

પ્રકારના પંદરીયા યત્રમા ૪-૧૦-૧
એટલે ૧૬ એ પદરીયા યત્રમા
સિંહાસનાદિ યત્રની પેઠે મધ્ય-
પક્તિમા [એટલે ઘીજી ઉર્ધ્વ

૬	૨	૭
૪	૩	૮
૫	૧૦	

૧૬

૪	૧૦	૧
૨	૬	૮
૬	૩	૬

૧૬

પંક્તિમાં] યે કોઠાના અંકયી [૧૦-૬ ધી] પળ
૧૬ નો અક પૂર્ણ થાય છે, તેથી એપ્રમાણે યત્રોની
ગતિ વિચિત્ર દેખીને ૨૦ નો યત્ર પળ વિચિત્ર
ગતિવાઢો હોય એવી શ્રદ્ધા કરવી એ તાત્પર્ય

૮	૧	૬
૩	૬	૩

૪	૩	૮
૬	૫	૧
		૬

૪	૬	૨
૩	૫	૭
૮	૧	૬

૧૬

छे [अर्थात् जेम १५ ना यंत्रो विचित्रगति वाळा दर्शाव्या तेम २० ना यंत्रो पण विचित्र गतिवाळा होय अेम जाणवु] जेथी अेक विदिशिग-
तिमां अक न्यून होय (१९ वा १६ ना बदले जेम १५ होय) अथवा
अधिक होय [१५ ना बदला १६ होय अथवा १९ होय] तो पण तेमां
कोई प्रकारे दोष नहीं अेम जाणवुं.

चंद्रांभोनिधिवाणाः पण्-मुनयो वसवो दिशः ॥

एवं पाठेपिसूत्रार्थः । साधनीयोनया दिशा ॥ ४८ ॥

अर्थः-तथा चंद्र=१ अंभोनिधि=४ [वा ७] घाण ५ पण्=६ मुनि=७
वसु=८ दिक्=९ अेवा पाठधी पण सूत्रनो अर्थ [पद्मा काव्यनो अर्थ]
आ रीतिअे सिद्ध करवो [ते कहेवाय छे] ॥ ४८ ॥

भू विश्व १३ क्षण चद्र १६ चंद्र पृथिवी ११ गुग्मैरु १२ इति इश १ उदग्
२ वायु ३ वरुण ४ स्थान चतुष्टये अकैः पुरिते सख्या क्रमादिति ११-१२-
१३ १६ इत्यकरुमात् शेषाः १४-१७-१८-१९ एतेका यथायोगं स्थानेषु
घार्याः तत्रापि घाणपण् इति सज्या ११ तत्संमुखे १९ पुनः १२ संमुख
कोशे १८ पुनः १३ संमुखकोशे १७ पुनः १६ समुग्वा १४ इत्युत्क्रमादक
न्यासः अत्रपचदशांकः पंचरूपङ्कयोः सावर्ण्यात्पोडशांकैर्भाव्यः एवं
अष्टपुस्थानेषु पूरितेषु मध्य दिशोदशइत्यतोयसूत्रार्थः संपन्नः चद्रेनयुक्ता
अमः जलरूप १ नदी २ तटारु ३ आकाश ४ स्थानभेदाचतुर्धा यद्वा
अंमः शद्रेन जलं तस्यस्थानं समुद्राश्चत्वारः निघयो नव घाण ५ पद्मुनय
सप्त वसवोष्ट तान्मध्ये दशखेचरा गृहास्तेषां इशानादिविधु इमान्मंत्रान्
रहस्यानि ध्यायामीति ' मंत्ररहस्य चार्तायामित्यमरः ' नतु मंत्रान् पाठ-
रूपाक्षर मंत्रान् इतिअत्रध्यानाधिकारेण यत्र लक्षणरूपध्यानाव लवनात्
पदस्यध्यानात् रूपध्यानस्याधिक्यात् एतेन ' चद्रांभोनिधि घाणपण्मुनि
वसु' इतिपाठसिद्धिः एवंअन्यत्रापि भावनीयं

अर्थः-भू वि-व=१३,
अरुस्थानोने अ-
अे चार

१६, चद्रपृथ्वी ११, गुग्मैरु=१२ अे चार
ग-उत्तरदिशा-वायव्यकोण-
घाणपण्-मुनि-वसु

गति वैचित्र्यमन्यत्र । यत्रे पचदशात्मके ॥

दृश्यते लोक बोधाय । तदिहापि निदर्श्यत ॥ ४७ ॥

अर्थः—बळी बीजा प्रकारना पदरीया यत्रमां गतिने जे विचित्रता देखाय छे ते विचित्रगति अहिं पण लोकमा ज्ञान धवाने अर्थे दर्शावाय छे ॥४७॥

‘अत्रपद् द्विसप्तयत्रे कोणगतिः ७-३-५ द्वितीय कोणगतौ ६-३ मेलने नव व्याघृष्य पुनः पद गणने १५ भवति द्वितीये ४-१०-१ अस्मिन् यत्रे सिंहासनादि यत्रवत् मध्य पक्तिकोश द्वयादपि पचदश पूरणात् यंत्राणां गति वैचित्र्यदर्शनादेव विंशतियत्र श्रद्धेय मिति भायः एकत्र कोण गतौ न्युनाधिकत्वे प्यदोपात्

अर्थः—अहिं ६-२-७ अे अक स्थापनावाळा पदरीया यत्रमां विदिशागति ७-३ ५ अेटले १५ अने बीजी विदिशागतिमा ६-३ अेटले ९, अने पुनः पाळावाळीने ६ गणतां [६-३ ६ अेटले] १५ थाय छे. बळी बीजा

प्रकारना पदरीया यत्रमा ४-१०-१
अेटले १५ अे पदरीया यंत्रमा
सिंहासनादि यत्रनी पेटे मध्य-
पक्तिमा [अेटले बीजी उर्ध्व

६	२	७
४	३	८
५	१०	

१५

४	१०	१
२	५	८
६	३	६

१५

पक्तिमा] ये कोठाना अकयी [१०-५ धी] पण
१५ नो अक पूर्ण थाय छे, तेथी अेप्रमाणे यत्रोनी
गति विचित्र देखीने २० नो यत्र पण विचित्र
गतिवाळो होय अेयी श्रद्धा फरवी अे तात्पर्य

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५

४	३	८
९	५	१
६	७	६

१५

४	९	२
३	५	७
८	१	६

१५

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५

८	३	६
१	५	९
६	७	२

१५

छे. [अर्थात् जेम १५ ना यंत्रो विचित्रगति वाळा दर्शाव्या तेम २० ना पंत्रो पण विचित्र गतिवाळा होय अेम जाणवुं] जेथी अेक विदिशिग-
निमां अक न्यून होय (१९ वा १६ ना बदले जेम १५ होय) अथवा
अधिक होय [१५ ना बदला १६ होय अथवा १९ होय] तो पण तेमां
कोई प्रकारे दोष नयां अेम जाणवुं.

चंद्राभोनिधिवाणाः षण्-मुनयो वसवो दिशः ॥

एवं पाठोपिसूत्रार्थः । साधनीयोनयां दिशा ॥ ४८ ॥

अर्धः-तथा चंद्र=१ अंभोनिधि=४ [वा ७] याण ५ षण्=६ मुनि=७
वसु=८ दिशु=९ अेवा पाठधी पण सूत्रनो अर्थ [पद्मा काव्यनो अर्थ]
वा रीनिधे सिद्ध करवो [ते कहेवाय छे] ॥ ४८ ॥

मू रिश्व १३ क्षण चंद्र १६ चंद्र पृथिवी ११ युगमैक १२ इति इश १ उदग्
२ वायु ३ वरुग ४ स्वान चतुष्टये अंकैः पुरिते संख्या क्रमादिति ११-१२-
१३ १५ इत्यंकरमात् शेषाः १४-१७-१८-१९ एतेका यथायोगं स्थानेषु
पाराः मन्त्राणि षाणषण् इति संज्ञया ११ तत्संमुखे १९ पुनः १२ संमुख
कोशे १८ पुनः १३ संमुखकोशे १७ पुनः १६ संमुखा १४ इत्युत्क्रमादंकर
न्यामः अथपचदशांकः पंचकपर्कयोः सावर्ण्यात्पोदशांकैर्भाव्यः एवं
अष्टपुण्यानेषु परितेषु मध्य दिशोदशइत्यनोपसूत्रार्थः संपन्नः चंद्रेनयुक्ताः
जमः जलरूप १ नदी २ तटाक ३ आकाश ४ स्थानभेदाच्चतुर्धा यद्वा
जमः शब्देन जन्म तस्यस्थानं ममुद्राश्चत्वारः निघयो नव षाण ५ षड्मुनय
सत यमयोष्ट तान्मध्ये दशव्येचरा गृह्यास्तेषां इशानादिदिक्षु इमान्मंत्रान्
इत्यनानि ध्यायामीति ' मन्त्रगृहस्य धार्यापामित्यमरः ' नतु मंत्रान् पाठ-
न्याक्षर मंत्रान् इतिअथध्यानाधिकारेण मंत्र लक्षणरूपध्यानाव लवनात्
पत्रध्यायानात् रूपध्यानस्याधिक्यात् एतेन ' चंद्राभोनिधि षाणषण्मुनि
वक्षुर् ' इतिपाठसिद्धिः एवअन्यत्रापि भावनीयं

स्थानो ११-१२-१३-१६ धाय छे, जेयी अे क्रमयी रोप रहेला अकस्थानो १४-१७-१८-१९ अे अकस्थानोने यथायोग्य कोठाओमां स्थापवा "घाणपण्" अे सज्ञायडे [५+६=] ११ स्थापवा, अने तेनी सन्मुख

१९ नो अंक स्थापवो, [अर्थात् विविदिशिपंक्तिमां सन्मुख स्थापवो] पुनः ज्यां १२ स्थाप्या छे तेनी सन्मुख १८ स्थापवा, ज्या १३ स्थाप्या छे, तेनी सन्मुख कोठामा १७ स्थापवा पुनः ज्या १६ स्थाप्या छे, तेनी सन्मुख कोठामा १४ स्थापवा, अे प्रमाणे

११	१८	१९
		१५
१६	१०	१४
११	१९	१०

२०

अनुक्रमे अक स्थापना जाणवी अेमा १५ नो अंक ते पांच अने छनी, सहशता गणवाधी १६ ना अकमा अंतर्गत जाणवो अे प्रमाणे आठ कोठा पूर्ण थयावाद मध्यकोठामा दिशः=१० स्थापवा, ते कारणयी सूत्रार्थ अे प्राप्त थयो के चद्राभोनिधि=चन्द्र अेटले १ सहित अभ=जळ ते कृवा-नदी-तलाव-अने आकाशना भेदयी ४५ कारनुं छे अथवा अभ अेटले जळ, तेनु स्थान जे समुद्र ते ४ छे (अर्थात् समुद्र सज्ञायधी ४ नो अक गणाय छे,), त्यारवाद निधि अेटले ९, घाण अेटले ५, अथवा ६, मुनि अेटले ७, वसु अेटले ८ ते सर्व अकोनी मध्ये दश [१०] तथा पेचर अेटले गृहो ते ओने ईशानादि दिशाओमां स्थापवा अेप्रमाणे अे मन्त्रान्=रहस्योने ध्यायामि=हु ध्यान करु छु " मन्त्र " अे शब्दनो अर्थ रहस्यवार्तामा [गोप्यवार्तामा] प्रवर्ते छे अेम अमरकोशमा कह्यु छे. परतु अहिं मन्त्र अेटले पाठरूप अक्षरवाळा मन्त्र, नहिं, अे प्रमाणे, अहिं ध्याननो अधिकार होयाधी मन्त्रणा लक्षणवाळा रुपध्याननुं आलघन छे, कारणके पदस्थध्यानधी पण रुपध्यान [रुपस्थध्यान] अधिक छे, अे यथायधी " चद्राभोनिधि घाणपण् मुनिवसून् " अे पाठनी सिद्धि थई जे प्रमाणे अन्यत्र [रोप सर्व प्रकारना विंशतियत्रोमा] पण अे पाठना मन्त्र अेटले रहस्यो यथायोग्य विचारवा

तपागच्छेशसूरीश । विजयप्रभसेवक । ॥

कृपाविजयधीराणां । शिष्योर्हच्छासनश्रिये ॥ ४९ ॥

आत्मज्ञानका खजाना.

प्रियविज्ञ पाठकवृन्द—

आपको वह जानकर हर्ष होगा की, आपने जैन समाजमें आज तक गीता जैसे प्रथका अत्रयही अभाय या सौभाग्यकी बात है की निम्नकी पूर्ति आप महानुभावोंके सम्य यह “अर्हद्गीता” प्रथका चतुर्थ आवृत्ति के साथ प्रकाशित हो रही है

त्रैण्य धर्ममें भगवद्गीताको किंतना मान है अर्हद्गीता भी मान्य समुदायके लिख गण्य भगवद्गीतासे कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है यदि विज्ञ पाठकोंने इसे आपनाया तो। क्योंकि यह अर्हद्गीता जिस अध्यात्मज्ञानरूपी सुग रसमे ओतप्रोत है वह अद्वितीय है

श्रीगोतमस्वामी प्रथमही प्रश्न कहते हैं कि भगवान योगियोंका और गृहस्थोंका मन वशमे हो जाता है तो क्या कोई वस्त्री विधि है उत्तमे त्रिध्व रत्ननीय प्रभु महानौर भगवान त्रिध्व वनजने हुये क्या कहते हैं यह प्रथकी आदिमे आपके टिणीगोचर होगा.

विशेषमें आपको इस प्रथकी प्रशस्ता लेखणीद्वारा क्या करू पाठक आप इसको खर्द कर एक रुक इसका जम्बर मनन करें मुल कीमत रु. ७ भेट कीमत रु २

प्यारें भाईयों ? क्या ? आपका आकाशकी सैर करनी है ?

तो फिर आप क्यों विचार करते हैं, श्रीमहानौर प्रथमात्रसे आकाशगमनी औपची कल्प मगाने ताको आपकी मनकी मुराद पुरी हागी अगर आपको वशाकरण चाहिये तो इसी कल्पके साथ गोपीचक्र नामका कल्प दिया है इस कल्पके द्वारा पत्यरहृदयमीमाम हो जाताह औरईमीमे लिखी हुई औपचीसे जलस्थभन अग्नि स्थभन आदि कार्य सिद्ध होते हैं, यह प्रथ सुश्रावक नागार्जुन का बनाया हुआ है तत्र इसके बारेमे विज्ञेय क्या लिखे

मुल कीमत रुपीया १५ व भेट कीमत रुपीया ७।।

मिडनेका प्रिन्टिंग-एन्ड कं. कार्टेचा, धुलीया.

जैन सायन्स जगतसुदरी पयोगमाला.

जस महत्तर कानधे ? जैनाम उनका कितनी प्रतिष्ठा थी ? वह कितने उठ काटाके पुरपधे ?

उम भाग्यशाला पुरुषका जो नह पहिचानताथा ? आज उस महा मा की कार्तीका जन समाजके वालगोपा सब रिचित ह अर उनके रिपवमे मे क्या डिगु

अगर जो उनका आधक्याक जाने दखनी होतो उनका बनाया हुआ जगतसुदरी पयोगमाला नामके ग्रथका प्रयोगचर करे

वसी ग्रथमे प्रथम नस्तुआका अणन दाया है वउठ अनुकसयागसे अनेक चमकारो देख मन्न हो आप इस ग्रथको पत्रकत करर पते जोर पत्रके पसा आपसे नम प्रार्थना ह

तीमरीआवृत्ति मुल किमत र्पीया १० व भेट किमत ५ रु० एक शेठकी तर्फमे

मणिओंका उत्पत्तिस्थान

मानतुग जारत्र [कर्ताः--मानतुग सूरि]

आजतक जनताका मणिओं उ पति आर उमका उपयोगिताकी बिल्कुल खबर नहीं परनु हमार इस ग्रथने साराही भेद बना दिया आर जनताको होशियार करा दिया आपको र्त प्रथम मणिभा उत्पत्ति जोर उमकी उपयोगिताका ज्ञान होगा मणाद्वारा अदस्य नाहो मर धाति म्याने पदुचगा, उतिकरण, मशरिपधरका विष क्षण भरमें हटा देना वंगेरे बहोतसे काय सिद्ध हो सन्न न भतारे मणी महागुरु तीय के एक गुप्त स्थानपर मिलने ह तिसका वान गयकारर स्वय प्रथमे दिया ह दुर्भाग्यनी बात ह का उसका उपयोगिता न मादुम जाल उमका जो उपयोग लिया जाय न लेते हुये, उसको एतेहा फेंक देनेमे आते है परनु आप आप इस ग्रथको अपने पास रखेगे तो आपको इस ग्रथ द्वारा बहुतही फायदा होगा न ग्रथके द्वारा बहुताने मणि प्राप्त करके फायदा उठाया है आपभी लाभ उठाये

मुल कीमत र्पीया ३ भेट कीमत र्पीया १॥

नोट—मणिओंके नाम ' हनुमान मणी, तिलकट मणा, हम्मनयी इत्यादि बहुत मणी ओके जात और नाम आपको इसी ग्रथसे मादुम ज्ञान

अर्थः-श्रीतपागच्छना अधिपति आचार्य श्री विजयप्रभसूरिना सेवक श्री कृपाविजय धैर्यगुणवाळा तेमनो हु शिष्य ते श्री अहंत् शासननी शोभा अथवा लक्ष्मी माटे थाओ ॥ ४९ ॥

श्रीमेघविजयप्राप्तो-पाध्यायपदविश्रुतः ॥

भू विश्वेत्यादि काव्यस्य । व्याख्यानं चकृवानिदम् ॥५०॥

अर्थः-प्राप्त धयेला उपाध्याय पदवडे विश्रुत-प्रसिद्ध अेवो हुं श्रीमेघ-विजय उपाध्याय तेणे आ " भू विश्व " इत्यादि पदवाळा पद्मावती विंशतियंत्रना काव्यनी विशेषव्याख्या करी ॥ ५० ॥

इति श्री पद्मावतीस्तवन मध्यस्थ भू विश्वेत्यादिकाव्यस्य
विवरणं समाप्तम्.



परिशिष्ट न. १

४	०	९
१०	५	०
१	८	६

१५

६	०	९
८	५	२
१	१०	४

१५

२	१०	३
६	८	४
७	०	८

१५

३	१०	२
४	८	६
८	०	७

१५

१	१०	४
८	५	२
६	०	९

१५

१	८	६
१	५	०
४	२	९

१५

८	०	७
३	५	६
४	१०	२

१५

७	०	८
६	५	४
५	१०	३

१५

६	८	१
०	५	१०
९	२	४

१५

४	१०	१
२	५	८
९	०	६

१५

२	६	७
१०	५	०
३	४	८

१५

७	६	२
०	५	१०
८	४	३

१५

१	५	८
०	५	१०
६	८	१

१५

९	०	६
२	५	८
४	१०	१

१५

८	४	३
०	५	१०
७	६	२

१५

३	४	८
१०	५	०
२	६	७

१५

६	७	२
१	५	९
८	३	४

१५

९	१	८
७	५	३
२	९	४

१५

२	७	६
९	५	१
४	३	८

१५

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

१०	१	७
३	६	९
५	११	०

११

११	२	८
४	७	१०
६	१२	३

१२

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	८

१०

१४	७	१२
९	११	१३
१०	१५	८

१३

१	६	३	८
७	४	५	२
८	३	६	१
९	५	४	७

१८

१	७	३	८
७	४	६	२
९	३	६	१
३	५	४	८

१५

१	७	४	८
७	५	६	२
९	३	६	२
३	५	४	८

१०

१	८	४	८
७	५	७	२
१०	३	९	९
३	५	४	०

०१

१	८	५	८
७	९	७	२
१०	३	९	३
४	५	४	९

२०

१	९	५	८
७	९	८	२
११	३	९	३
४	५	४	१०

१३

१	९	६	८
७	७	८	२
११	३	९	४
५	८	४	१०

१४

१	१०	६	८
७	७	९	२
११	३	९	४
५	८	४	११

१५

१	१०	७	८
७	८	९	२
११	३	९	५
५	८	४	११

१	११	७	८
७	८	१०	२
१३	३	६	५
६	५	४	१२

२७

१	११	८	८
७	९	१०	२
१३	३	६	६
७	९	४	१२

६८

१	१९	८	८
७	९	११	२
१४	३	६	६
७	५	४	१३

२९

१	१३	९	८
७	१०	११	२
१४	३	६	७
८	५	४	१३

३

१	१३	९	८
७	१०	११	२
१	३	६	७
८	५	४	१३

३१

१	१३	१०	८
७	११	१३	२
१७	३	६	८
९	५	४	१४

३९

१	१४	१०	८
७	११	१३	२
१६	३	६	८
९	५	४	१५

११

१५	८	१३
१०	१३	१४
११	१६	९

३६

१९	५	१५
९	१३	१७
११	२१	७

३५

१५	३	९
५	८	११
७	१३	८

२४

१३	४	१०
९	९	१३
८	१४	५

५७

१३	४	१६
८	१४	९
१३	२४	६

४२

२८	१	१६
३	१५	२७
११	२०	२

४५

१५	४	१९
१०	१६	२१
१३	२०	७

४८

२६	५	२३
११	१७	२०
१४	२९	८

५१

३०	२	१२
१०	१८	२६
१४	३४	६

५४

३६	१	२०
३	१९	३५
१८	३७	२

५७

३३	४	२४
१२	२०	३८
१६	३६	८

६०

१	१०	१६	७
१५	८	२	९
६	१३	११	१४
१२	३	५	१४

३४

१	१४	११	८
७	१९	१३	२
१६	३	६	९
१०	५	४	१५

३४

१	८	११	१४
१०	१५	४	५
१६	९	६	३
७	२	१३	१२

३४

१	१०	८	१५
१६	७	९	२
११	४	१४	५
६	१३	३	१९

३४

१	८	१४	११
११	१५	५	४
७	२	१२	१३
१६	९	३	६

३४

१	१०	१५	८
१६	७	२	९
६	१३	१२	३
११	४	५	१४

३४

१	१०	१६	७
१५	८	२	९
४	११	१३	६
१४	५	३	१२

३४

१	१२	१३	८
७	१४	११	२
१६	५	४	९
१०	३		१५

१	८	१०	१५
११	१४	४	५
१६	९	७	२
६	३	१३	१२

३४

१	१०	८	१५
१६	७	९	२
१३	६	१२	३
४	११	५	१४

३४

१	८	१५	१०
११	१४	५	४
६	३	१२	१३
१६	९	२	७

३४

१	१०	१५	८
१६	७	२	९
४	११	१४	५
१३	६	३	१२

३४

१	११	१६	६
१४	८	३	९
७	१३	१०	४
१२	२	५	१५

३४

१	१२	१३	८
६	१५	१०	३
१६	५	४	९
११	२	७	१४

३४

१	८	११	१४
१३	१२	७	२
१६	९	६	३
४	५	१०	१५

३४

१	११	८	१४
१६	६	९	३
१०	४	१५	५
७	१३	२	१२

३४

१	८	१२	१३
१०	१५	३	६
७	३	१४	११
१६	९	५	४

३४

१	११	१४	८
१६	६	३	९
७	१३	१२	५
१०	४	५	१५

३४

१	११	१६	६
१४	८	३	९
४	१०	१३	७
१५	५	२	१२

३४

१	१५	१०	८
६	१२	१३	३
१६	९	७	५
११	४	५	१४

३४

१	८	१३	१०
११	१४	७	२
१६	९	४	५
६	३	१०	१

३४

१	११	८	१४
१६	९	९	३
१३	७	१२	२
४	१०	५	१५

३४

१	६	१४	१०
१३	१०	३	६
४	५	१२	११
१६	९	३	७

३४

१	११	१४	८
१६	६	३	९
४	१०	१५	५
१३	७	२	१०

३४

१	१३	१६	४
१२	८	५	९
६	१०	११	७
१५	३	२	१४

३४

१	१२	१३	८
७	१४	११	०
१६	५	४	९
१०	३	६	१५

३४

१	८	१०	११
१३	१०	९	३
१६	९	७	२
४	५	११	१४

३४

१	१३	८	१२
१६	४	९	५
११	७	१८	२
६	१०	३	१५

३४

१	८	१२	१३
११	१४	२	७
६	३	१५	१०
१६	९	५	४

३४

१	१३	१०	८
११	४	५	९
७	११	१८	०
१०	६	३	१५

३४

१	१३	१६	४
१२	८	५	९
७	११	१०	६
१४	३	२	१५

३४

१	१४	११	८
७	१२	१८	०
१६	३	६	९
१०	५	४	१५

३४

१	१३	८	१०
१५	४	९	५
१०	६	१५	३
७	११	२	१४

३४

०	८	१३	१०
१०	१५	१५	३
१६	९	४	५
५	३	११	१४

३४

१	८	१३	१०
१३	१३	२	५
४	५	१३	१०
१६	९	३	६

३४

१	०३	१३	८
१५	४	५	९
६	१०	१५	३
११	७	२	१४

३४

०	१५	६	१३
१०	८	१३	३
१६	२	११	५
७	९	४	१४

३४

१	७	१३	१०
१४	१३	३	५
११	१३	६	४
८	३	९	१०

३४

१	१०	१६	७
८	१५	९	३
११	४	६	१३
१४	५	३	१६

३४

१	१६	११	६
१०	७	४	१३
८	९	१४	३
१५	२	५	१६

३४

१	१०	७	१६
८	१५	३	९
१४	५	१६	३
११	४	१३	६

३४

१	१६	६	११
१०	७	१३	४
१५	३	१३	९
८	९	३	१६

३४

१	१५	४	१४
१०	८	११	५
१६	९	१३	३
७	९	६	१६

३४

१	७	१६	१०
१३	१४	५	३
१३	११	४	६
५	९	९	१५

३४

१	११	१६	६
८	१४	६	३
१०	४	७	१३
१५	५	३	१३

३४

१	१६	१३	४
१०	७	६	११
८	६	१२	५
१५	३	३	१४

३४

१	११	६	१६
८	१४	३	९
१५	५	११	३
१०	४	१३	७

३४

१	१६	४	१३
१०	७	११	६
१५	३	१४	३
८	९	५	११

३४

१	१४	७	१०
११	८	१३	३
१६	३	१०	५
३	९	४	१५

३४

१	६	१६	११
१२	१५	५	३
१३	१०	४	७
८	३	९	१४

३४

१	१३	१६	४
८	१२	९	५
११	७	६	१०
१४	३	३	१५

३४

१	१६	१०	७
११	६	४	१३
८	९	१५	३
१४	३	५	१२

३४

१	१०	७	१६
८	१५	३	९
११	३	१४	५
१३	६	११	४

३४

१	१६	७	१०
११	६	१३	४
१४	३	१३	५
८	९	३	१५

३४

१	१४	४	१५
११	८	१०	५
१६	३	१३	६
६	९	७	१३

३४

१	६	१६	११
१५	१०	३	५
१०	१३	७	४
८	३	९	१४

३४

१	११	१६	६
८	१४	९	३
१३	७	४	१०
१२	२	५	१५

३४

१	१६	१३	४
११	६	७	१०
८	९	१२	५
१४	३	२	१५

३४

१	१३	८	१६
८	१२	५	९
१५	३	१४	२
१०	६	११	७

३४

१	१६	४	१३
११	६	१०	७
१४	३	१५	२
८	९	५	१२

३४

१	१२	६	१५
१३	८	१०	३
१६	५	११	२
४	९	७	१४

३४

१	७	१६	१०
१२	१४	५	३
१३	११	८	६
८	२	९	१५

३४

१	१३	१६	४
८	१२	९	५
१०	६	७	११
१५	३	२	१४

३४

१	१६	११	६
१३	४	७	१०
८	९	१४	५
१२	३	२	१५

१	११	६	१६
८	१२	५	९
१५	३	१४	२
१०	६	११	७

१	१६	७	१०
११	६	११	९
४	१४	३	१५
९	२	१५	१४

३४

१	१०	१६	७
८	१५	९	२
१३	६	४	११
१२	३	५	१४

३४

१	१६	१०	७
१३	४	६	११
८	९	१५	२
१२	५	३	१४

३४

१	१३	४	१६
८	१२	५	९
१४	२	१५	३
११	७	१०	६

३४

१	१६	६	११
१३	४	१०	७
१२	५	१५	२
८	९	३	१४

३४

१	१४	१२	७
११	८	२	१३
६	९	१५	४
१६	३	५	१०

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१२	३	६	१३
१४	५	४	११

३८

१	८	१५	१०
१४	११	४	५
१२	१३	६	३
७	२	९	१६

३४

१	८	१०	१५
१४	११	५	४
७	२	१६	९
१२	१३	३	६

३४

१	१४	११	८
१२	७	३	१३
६	९	१६	२
१५	५	४	१०

३४

१	१२	१४	७
१३	८	२	११
८	९	१५	६
१६	५	३	१०

३८

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१४	५	४	११
१२	३	६	१३

३४

१	८	१४	११
१५	१०	४	५
१२	१३	७	२
६	२	९	१६

३४

१	१२	८	१३
१४	७	११	३
१५	६	१०	३
४	९	५	१६

३४

१	८	११	१४
१५	१०	५	४
६	३	१६	९
१२	१३	२	७

३४

१	१२	१३	८
१४	७	९	११
४	६	१६	५
१५	६	३	१०

३४

१	१५	१२	६
१०	८	३	१३
७	९	१४	४
१६	२	५	११

३४

१	११	१४	८
६	१६	९	३
१५	५	४	१०
१२	३	७	१३

३४

१	८	१२	१३
१४	११	७	३
१५	१०	६	३
४	५	९	१६

३४

१	१५	८	१
१२	६	१३	३
१४	४	११	५
७	९	३	१६

३४

१	८	१०	१५
१२	१३	३	६
७	२	१६	९
१४	११	५	४

३४

१	१५	१०	८
१२	६	३	१३
७	९	१६	३
१४	४	५	११

३४

१	१२	१५	६
१३	८	३	१
४	९	१४	७
१६	५	२	११

३४

१	११	१४	८
६	१६	९	३
१२	३	७	१३
१५	५	४	१०

३४

१	८	१४	११
१२	१३	७	३
१५	१०	४	५
६	३	९	१६

३४

१	१२	८	१३
१५	६	१०	३
१४	७	११	२
४	९	५	१६

३४

१	८	१३	१२
१५	१०	३	६
४	५	१६	९
१४	११	२	७

३४

१	१२	१३	८
१५	६	३	१०
४	९	१६	५
१४	७	२	११

३४

१	१४	१५	४
११	८	५	१०
६	९	१२	७
१०	३	२	१३

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	३
१४	५	४	११
१०	३	६	१३

३४

१	८	१२	१३
१५	१०	६	३
१४	११	७	०
४	५	९	१६

३४

१	१४	८	११
११	४	१०	५
१५	७	१३	२
६	९	३	१६

३४

१	८	११	१४
१२	१३	२	७
६	३	१६	९
१५	१०	५	४

३४

१	१०	१०	८
१४	४	५	१३
७	९	१६	०
१२	६	३	१३

३४

१	११	१४	४
१	८	५	११
७	९	१०	६
१६	३	३	१३

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	३
१२	३	६	१३
१४	५	४	११

३४

१	८	१५	१०
१२	१३	६	३
१४	११	४	५
७	२	९	१६

३४

१	१५	८	१०
१४	४	११	५
१२	६	१३	३
७	९	२	१६

३४

१	८	१३	१२
१४	११	२	७
४	५	१६	९
१५	१०	३	६

३४

१	१४	११	८
१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३

३४

१	११	६	१६
१४	८	९	३
१२	३	१५	५
७	१३	४	१

३४

१	७	१२	१४
१०	१६	३	५
१५	९	६	४
८	२	१३	११

३४

१	१४	१२	७
८	११	१३	३
१५	४	६	९
१०	५	३	१६

३४

१	१२	१५	६
१४	७	४	९
८	१३	१	३
११	२	५	१६

३४

१	१४	७	११
८	११	३	१३
१०	५	१६	३
१५	४	९	६

३४

१	१२	६	१५
१४	७	९	४
११	३	१६	५
८	१३	३	१०

३४

१	१३	४	१६
१२	८	९	५
१४	३	१५	३
७	११	६	१०

३४

१	७	१४	१२
१०	१६	५	३
१५	९	४	६
८	२	११	१३

३४

१	१५	१०	६
८	१०	१३	३
१४	४	७	९
११	७	३	१६

३४

१	१४	१५	४
१२	७	६	९
८	११	१०	५
१३	२	३	१६

३४

१	१५	६	१२
८	१०	३	१३
११	५	१६	२
१४	४	९	७

३४

१	१४	४	१५
१२	७	९	६
१३	२	१६	३
८	११	५	१०

३४

१	१०	७	१६
१५	८	९	२
१२	३	१४	५
६	१३	४	११

३४

१	६	१५	१२
११	१६	५	२
१४	९	४	७
८	३	१०	१३

३४

१	१४	१५	४
८	११	१०	५
१२	७	६	९
१३	२	३	१६

३४

१	१२	१४	७
१५	६	४	९
८	१३	११	२
१०	३	५	१६

३४

१	१२	७	१४
८	१३	२	११
१०	३	१६	५
१५	६	९	४

३४

१	१२	७	१४
११	६	९	४
१०	३	१६	५
८	१३	२	११

३४

१	१३	४	१६
१२	८	९	५
१५	३	१४	२
६	१०	७	११

३४

१	६	१२	१५
११	१६	२	५
१४	९	७	४
८	३	१३	१०

३४

१	१५	१६	६
११	१३	१०	८
१२	७	२	११
१३	४	३	१४
१४	९	५	१
१५	८	१	१०
१६	७	२	१३
१७	६	३	१२
१८	५	४	११
१९	४	५	१०
२०	३	६	९
२१	२	७	८
२२	१	८	७
२३	०	९	६
२४	९	०	५
२५	८	१	४
२६	७	२	३
२७	६	३	२
२८	५	४	१
२९	४	५	०
३०	३	६	९
३१	२	७	८
३२	१	८	७
३३	०	९	६
३४	९	०	५
३५	८	१	४
३६	७	२	३
३७	६	३	२
३८	५	४	१
३९	४	५	०
४०	३	६	९
४१	२	७	८
४२	१	८	७
४३	०	९	६
४४	९	०	५
४५	८	१	४
४६	७	२	३
४७	६	३	२
४८	५	४	१
४९	४	५	०
५०	३	६	९
५१	२	७	८
५२	१	८	७
५३	०	९	६
५४	९	०	५
५५	८	१	४
५६	७	२	३
५७	६	३	२
५८	५	४	१
५९	४	५	०
६०	३	६	९
६१	२	७	८
६२	१	८	७
६३	०	९	६
६४	९	०	५
६५	८	१	४
६६	७	२	३
६७	६	३	२
६८	५	४	१
६९	४	५	०
७०	३	६	९
७१	२	७	८
७२	१	८	७
७३	०	९	६
७४	९	०	५
७५	८	१	४
७६	७	२	३
७७	६	३	२
७८	५	४	१
७९	४	५	०
८०	३	६	९
८१	२	७	८
८२	१	८	७
८३	०	९	६
८४	९	०	५
८५	८	१	४
८६	७	२	३
८७	६	३	२
८८	५	४	१
८९	४	५	०
९०	३	६	९
९१	२	७	८
९२	१	८	७
९३	०	९	६
९४	९	०	५
९५	८	१	४
९६	७	२	३
९७	६	३	२
९८	५	४	१
९९	४	५	०
१००	३	६	९

१	१५	१४	४
१२	६	७	९
८	१०	११	५
१३	३	२	१६

३४

१	१५	४	१४
८	१०	५	११
१३	३	१६	२
१२	६	९	७

३४

१	१५	४	१४
१२	६	९	७
१३	३	१६	२
८	१०	५	११

३४

१	११	६	१६
१४	८	९	३
१५	५	१३	२
४	१०	७	१२

३४

१	७	१४	१२
१०	१६	५	३
१५	९	४	६
८	२	११	१३

३४

१	१५	१४	४
८	१०	११	५
१२	६	७	९
१३	३	९	१६

३४

१	१५	१२	६
१४	४	७	९
८	१०	१३	३
११	५	२	१६

३४

१	१२	६	१५
८	१३	३	१०
११	२	१६	५
१४	७	९	४

३४

१	१४	७	१२
१५	४	९	६
१०	५	१६	३
८	११	२	१३

३४

१	१०	७	१६
१५	८	९	३
१४	५	१३	२
४	११	६	१२

३४

१	७	१२	१४
१०	१६	३	५
१५	९	६	४
८	२	१३	११

३४

१	१२	१४	७
८	१३	११	३
१५	६	४	९
१०	३	५	१६

३४

१	१४	१२	७
११	४	६	९
८	११	१३	२
१०	५	३	१६

३४

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

३४

१	१५	६	१२
१४	४	९	७
११	५	१६	३
८	१०	३	१३

३४

५८	४०	५२
४४	५०	५६
४८	६०	४२

१५०

५२	४०	५८
५६	५०	४४
४२	६०	४८

१५०

४८	६०	४०
४४	५०	५६
५८	४०	५२

१५०

४२	६०	४८
५६	५०	४४
५२	४०	५८

१५०

५२	५६	४२
४०	५०	६०
५८	४४	६८

१५०

४२	५६	५२
६०	५०	४०
४८	४४	५८

१५०

५८	४०	४८
४०	५०	६०
५२	५६	४२

१५०

४८	४४	५८
६०	५०	४०
४२	५६	५२

१५०

६८	३०	५२
३४	५०	६६
४८	७०	३२

१५०

३८	६६	५२
७०	५०	३०
४८	३४	६८

१५०

५२	३०	६८
६६	५०	३४
३२	७०	४८

१५०

५०	६६	३२
३०	५०	७०
६८	३४	४८

१५०

३२	७०	४८
६६	५०	३४
५२	३०	६८

१५०

६८	३४	४८
३०	५०	७०
५२	६६	३२

१५०

४८	७०	३२
३४	५०	६६
६८	३०	५२

१५०

४८	३४	६८
७०	५०	३०
३२	६६	५२

१५०

७८	२०	५२
२४	५०	७६
४८	८०	९२

१५०

७२	२०	७८
७६	५०	२४
२२	८०	४८

१५०

२२	८०	४८
७६	५०	२४
५२	२०	७८

१५०

४८	८०	२२
२४	५०	७६
७८	२०	५२

१५०

२२	७६	५२
८०	५०	२०
४८	९४	७८

१५०

५२	७६	२२
२०	५०	८०
७८	२४	४८

१५०

४८	२४	७८
८०	५०	२०
२२	७६	५२

१५०

७८	२४	४८
२०	५०	८०
५२	७६	२२

१५०

८८	१०	५२
१४	५०	८६
४८	८०	९२

१५०

१२	८६	७२
१०	५०	१०
४८	१४	८८

१५०

५२	१०	८८
८६	५०	१४
१२	१०	४८

१५०

५२	८६	१२
१०	५०	१०
८८	१४	४८

१५०

११	१०	४८
८६	५०	१४
५२	१०	८८

१५

४८	१४	८८
१०	५०	१०
१२	८६	५२

१५०

४८	१	१२
१४	५०	८६
८८	१०	५२

१५०

८८	१४	४८
१०	५०	१०
५२	८६	१२

१५०

१८	०	५२
४	५०	९६
४८	१००	९

१५

१	९६	५२
१०	५०	०
४८	४	१८

१५

५२	०	१८
९६	५०	४
१	१००	४८

१५०

५२	९६	२
०	५०	१००
१८	४	४८

१५

१	१००	४८
१६	५०	४
५२	०	९८

१५०

९८	४	४८
०	५०	१००
५२	९६	२

१५०

४८	१००	२
४	५०	९६
९८	०	५२

१५०

४८	४	९८
१००	५०	०
२	९६	५२

१५०

५०	४०	५३
४६	५०	५४
४०	६०	४३

१५०

४३	५४	५३
६०	५०	४०
४०	४६	५०

१५०

५३	४०	५०
५४	५०	४६
४३	६०	४०

१५०

५३	५४	४३
४०	५०	६०
५०	४६	४०

१५०

४३	६०	४०
५४	५०	४६
५३	४०	५०

१५०

५०	४६	४०
४०	५०	६०
५३	५४	४३

१५०

४०	६०	४३
४६	५०	५४
५०	४०	५३

१५०

४०	४६	५०
६०	५०	४०
४३	५४	५३

१५०

५६	४०	५४
६८	५०	५३
४६	६०	४४

१५०

४४	५३	५४
६०	५०	४०
४६	४८	५६

१५०

५४	४०	५६
५३	५०	४८
४४	६०	४६

१५०

५४	५३	४४
४०	५०	६०
५६	४८	४६

१५०

४४	६०	४६
५९	५०	४८
५४	४०	५६

१५०

५६	४८	४६
४०	५०	६०
५४	५३	४४

१५०

४६	६०	४४
४८	५०	५३
५६	४०	५६

१५०

४६	४८	५६
६०	५०	६०
४४	५३	५४

१५०

६५	३०	५५
४०	५०	६०
४५	७०	३५

१५०

३५	६०	५५
७०	५०	३०
४५	४०	६५

१५०

५५	३०	६५
६०	५०	४०
३५	७०	४५

१५०

५	६०	३५
३०	५	७०
६५	६०	४५

१५०

३५	७०	४५
६०	५	४०
५५	३०	६५

१५०

६५	६०	४५
३०	५०	७०
५५	४०	३५

१५०

४५	७०	३५
४०	७०	६०
६५	३०	५५

१५०

४०	६०	६५
७	५०	३०
३५	४०	५५

१५०

४	९०	९०
१००	५०	०
१०	८०	६०

१५०

६०	०	९०
८०	५०	३०
१०	१००	४०

१५०

१०	१००	६०
८०	५०	३०
६०	०	९०

१५०

१०	८०	६०
१००	५०	०
४०	३०	९०

१५०

६०	८०	१०
०	५०	१०
९०	९०	४०

१५०

४०	१०	१०
३०	५०	८०
१	०	६०

१५०

९०	३०	४०
०	५०	१००
६०	८०	१०

१५०

९०	०	६
३०	५०	८०
४०	१००	१०

१५०

देहसो बरोका भेद दोसो होता है उसका नमूना दाखल ७२ यत्र दिया है,
बानी सब गुरुद्वारासे समज लेना.



परिशिष्ट नं. २

॥ अथ श्रीमहावीरजिनस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

(मूलकर्ता-श्रीपादलिप्तसूरिः टीकाकार-श्रीपुण्यसागरवाचकः)

प्रणतसुरनरालिवातपादाराविट ।

विदितसकललोकालोकसद्ज्ञेयवृंदम् ॥

साविनयमथ नत्वा वधमान जिनेशं ।

किमपि विरचयेऽहं तत्स्तवस्यार्थलेशम् ॥ १ ॥

पूर्वं तावत् श्रीपादलिप्तसूरयोऽनेकयोगसिद्धा महान्तः प्रभावकपुरुषा
 आसन्, तदन्वये सकलज्ञानविज्ञानविज्ञाः श्रीपुण्यतिलकसूरयो विह-
 रतोऽवन्तीपुर्यां समेताः तत्र च श्रीविधिपक्षगच्छाधिराजसरस्वतीलब्ध
 प्रसादश्रीमन्महेंद्रसिंहसूरयः सति, तेषां महिमान सकलनागारिकजन
 निकरवदनकमलालंकारायमान श्रुत्वा विद्यामदध्मातचित्ता श्रीपुण्यतिलक
 सूरयो वादलिप्तया श्रीगुरुसन्धीपमागता तैरुक्तं च भो मया सह वादा
 विधेयः तदा श्रीगुरुभिरुक्तं किं वृथायासेन वादेन? प्रयोजनमनुद्दिश्य
 मदधियोऽपि न प्रवर्तते तदा श्रीपुण्यतिलकसूरिभिरुक्तं किं वृथायासः?
 यो य जयति स तं शिष्यीकरोतीत्यावयो सथा, तदा गुरुभिरंगीकृत,
 प्रारब्धश्च वाद, श्रीगुरुभिर्मुहूर्तादेव ते जिता. ततः श्रीपुण्यतिलक-
 सूरयः स्व धन्य मन्यमाना श्रीगुरुन् प्रणम्य सस्तुप च शिष्या जाता
 श्रीगुरुभिरपि तेषां महत्तरक्षणार्थं दीक्षा दत्त्वा शास्त्राचार्यैवे स्यापिता
 तत्पूर्वजाना च श्रीपादलिप्तसूरिणां विरचितमिदं श्रीपुण्यतिलकसूरिनां सप्रभाव
 षडुयोगमिद्विसपन्न हृष्टा श्रीसप्तस्मरणमहास्तोत्रं गुरीयमहास्तोत्रं
 स्थापित, महत्त्व चास्य स्तोत्रस्यानेकयोगसिद्धिमहास्तोत्रं महाहिमत्वेन
 ज्ञेयं, श्रीउपसर्गहरस्तोत्रवत्, तदन्वये चाद्यापि श्रीपुण्यतिलकसूरि
 दत्त्वा प्रथममिदं स्तोत्रं पाठयतीति अस्य प्रथमस्य

मूलम्—जयई नवनलिणकुवलय-विद्य

वीरोगददमयगल-पु

ध्यारूपा-वीरो जयतीत्यन्वयः विशेषेण ईरयति गच्छति कर्मशत्रुजयाय सन्मुष्यतया, कंपयति वा कर्मशत्रुनिति वीर', ईरगतिकपनयो पचाद्यच् कर्मशत्रुसमूहजेतृत्वाद्दिशितपराकमत्वेन वीरयते इति वा वीर' वीर-विक्रातौ, पचाद्यच् पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् श्रीमहावीरश्चतुर्विंश-तितमा जिनो जयति उत्कर्षं प्राप्नोति, जि जयेऽकर्मकोऽय धातु', पंच-मारकपर्यंतं यावद्विद्यमानशासनत्वेन वर्तमाने लद् भगलार्थं च प्रथम जयतीति पदप्रयोग, नमस्कारश्चाक्षिप्तः, यथा जयतींद्रियरूपायकर्मपरीप-होपसर्गादिशत्रुगणपराजयात्सर्वानप्यतिशेते उत्कर्षं प्राप्नोति, इत्थ सर्वा-तिशायी च भगवान् प्रेक्षावतामेवदय प्रणामाह', ततो जयतीति किमुक्तं भवति ? तंप्रति प्रणतोऽस्मीत्यर्थ', किंविशिष्टो वीरः ? नवनलिनकुवलय विकसितशतपत्रपत्तलदलक्ष', नवं नवीनं, यन्नलिनं सूर्यविक्रासिकमल, पुनः कुवलय चद्रविकासीकमल, पुन विकसित च तत्शतपत्र, शत-शब्दोऽत्र बहुत्वोपलक्षस्तेन सहस्रपत्रादेरपि परिग्रह' अथ समास'- नलिन च कुवलय च नलिनकुवलये, नवे च ते नलिन कुवलये च नवनलिनकुवलये, विकसित तत्शतपत्र च विकसितशतपत्रं, नवनलिन-कुवलये च विकसितशतपत्र च नवनलिनकुवलयविकसितशतपत्राणे, तथा पत्तल तीक्ष्ण यद्दल पत्रं तद्दक्षिणी नेत्रे यस्य स नवनलिनकुवलय-विकसितशतपत्रपत्तलदक्षः बहुवीरौ सन्ध्यक्षणोः स्थागात्पजिती पच्, पत्तलशब्दोऽत्र तीक्ष्णवाचक' यदुक्त देशानाममालाया श्रीहेमसूरिभिः- 'पत्तलपद्भुवइहा तह । पत्तसमिद्ध च तिख्वमि ॥' तथा च तद्वृत्ति'- पत्तल पद्भुवइय पत्तसमिद्ध एते त्रयोऽपि तीक्ष्णार्थाः, पत्तल पत्रयहुलमिति तु पत्रलशब्दभवमिति भगवच्छुपोरहोरात्रविकासित्वाद्भयोः सूर्य-विकासिचद्रविकासिकमलयोरुपमानत्वमुक्त पुन' किंविशिष्टो वीरः ? प्राकृतत्वाद्दिशेषणस्य परनिपातत्वान्मदकलगजेंद्रसुललितात्रिक्रम', मदेन कलो मनोहरो मदकलो मदोत्कट इत्यर्थ', मदोत्कटो मदकल इति श्रीहेमसूरिः एवविधो यो गजेन्द्र. सकलगजलक्षणोपेतत्वेन गजेपु इदति परमैश्वर्यं भजतीति गजेन्द्र. सकलगजश्रेष्ठः, तद्वत् सुअतिशयंन ललिता मनोहरा या गतिस्तया विशिष्ट क्रामति गच्छतीति मदकलगजेंद्रसुललित-त्रिक्रम. पुनः किंविशिष्टो वीरः ? भगवान्, भगो ज्ञानार्थ, स भगवान् भगोऽकेज्ञान माहात्म्य-यशोवैराग्यमुक्तिपु ॥

रूपबुद्धिप्रयत्नेछा—श्रीधर्मैश्वर्ययोनिषु ॥ १ ॥ इति श्रीहेमसूरिः तत्कार्य-
योनिवर्जं द्वादशभगवत्शब्दार्थयुक्त इत्यर्थः ॥१॥ अथ श्रीवीरं कविराशिपति-

मूलम्—अज्जवि वहई सुतीत्थं । अखंडियं जस्स भरहवासंमि ॥

सो बद्धमाणसामी । तेल्लुक्कदिवायरो जयउ ॥ २ ॥

व्याख्या—स वर्धमानस्वामी श्रीवीरजिनो जयतु सर्वोत्कर्षेण प्रवर्ततां.
किंविशिष्टो वर्धमानस्वामी ? त्रैलोक्यदिवाकरः, अथ एव लोकास्त्रैलोक्यं,
चतुर्वर्णानां स्वार्थं प्यञ्ज् वाच्य इति प्यञ्ज् स्वर्गमर्त्यपातालरूपं, तत्र
दिवाकर इव दिवाकरः सूर्यः केवलज्ञानेन तस्य प्रकाशकत्वात्, त्रैलोक्य-
दिवाकरः स क ? यस्य वर्धमानस्वामिनः सुतीर्थं तीर्थते ससारार्णवोऽने-
निति तीर्थं चतुर्विधः सद्यः सरलशुभगुणोपेतत्वेन शोभन तीर्थं सुतीर्थं
अद्यापि दुःपमकालेऽपि अखंडितमविच्छिन्न परतीर्थयोदिखडनाराहितं भरत-
वर्षं भरतक्षेत्रे बहति, धातुनामनेकार्थत्वात्प्रवर्तत इत्यर्थः अथाभिधेय वक्ति-

मूलम्—गाहाजुअलेण जिणं । मयमोहविवज्जियं जियाणंगं ॥

थोसामि तिसघाएण । तिण्णसंगं महावीरं ॥ ३ ॥

व्याख्या—अहं पादलिप्तसूरिर्महावीरं जिनं त्रिसंघातेन, त्रयाणां मनो-
वाक्कायानां सघातः समुदायस्त्रिसंघातस्तेन त्रिकरणशुद्धया स्तोष्यामि
स्तुतिगोचर करिष्यामित्यर्थः केन ? गाथायुगलेन, विपुलाचपलाचार्या-
लक्षणलक्षिता प्राकृते बहुल गाथेत्यभिधीयते, तयोर्पुंगव चुरमं तेन.
किंविशिष्ट जिन ? मदमोहविवर्जित, आनन्दसंमोहयोः संगमोत्था मत्तता
मदः, मदोमुन्मोहसभेद इति श्रीहेमसूरिः स च जात्याद्यष्टप्रकारो
मोहो मौल्यमज्ञानमिति यावत्, मदश्च मोहश्च मदमोहौ, ताभ्यां विवर्जितो
रहितस्त, पुनः किंविशिष्ट जिन ? जितानंग, जितः स्ववशीकृतोऽनंगः
कामो येन 'जियकसाय' मित्याधुनिकः पाठः, तत्र जिताः कपाया
क्रोधाद्या येन त, पुनः किंविशिष्ट जिन ? तीर्णसंगं, तीर्णः पार प्राण
संगः ससारानुबध्यभिष्वगो, बाह्यातरभेदमिश्रो येन तं, तत्र प्राण
पुत्रकलत्रादिरूपः, आतरश्च कर्मपुद्गलरूपः, तीर्णससारसमुद्रमिश्र
तिसङ्गाग त निसगामित्याधुनिकं तत्र तमिती

जिनमिती योज्य प्रसिद्धानुभूतार्थं तच्छब्दो यच्छब्दोपादान नापेक्षाने
 तिस्रह्सागमिति तिस्रः सध्याः समाह्वना इति त्रिसध्य, गोमित्रियोरिति
 ह्रस्वत्व त्रिसध्य तूपवैणवमिति श्रीहेमसूरयः, त्रिसध्यमेव त्रिसध्यक,
 स्वार्थं कन्, क्रियाविशेषणमिदं दीर्घत्व प्राकृतलक्षणात्, निस्संगमिति,
 निर्गतः सगानिस्सगस्तमित्यक्षरार्थः, अथास्या गाथाया रूपासिद्धिसुवर्ण-
 सिद्ध्यादयो भूयस्य सिद्धय उक्ताः सति, पर किञ्चिद्विदर्शनमात्रमुच्यते-
 'गाहाजुअलेणात्ति' गा इति गगन अभ्रक अभ्रक मेघारय स्वच्छपर
 गिरिजामलमिति हेमसूरयः, दीर्घत्व च बहुत्वग्यापकं, यदुत्तर च
 शुभ्रादिगुणोपेतत्वेन प्राधान्यलयापकं, तेन सिताभ्रक न तु कृष्णमित्यर्थः.
 हा इति हरिताल, दीर्घत्व पूर्ववत्, जुअलमिति तार, ण्तैस्त्रिभिर्युक्त
 जिन पारदं, कथंभूत ? 'मयमोहविवञ्जिय जियाणग' मलशित्तिविष-
 दोपत्रयापेत, 'थोसांमिस्ति' स्तभयिष्यामि, केन कृत्या ? त्रिसघातेन
 सिताभ्रकतालतारत्रयाणा योगेन, तथोपधसमवायेन जारणस्यदनविधिं
 करोमि पुन. क्विदृश जिन ? तीर्णसग, मृतसप्तगुणसंगोत्तीर्णं महावीर-
 मिति रूप्य, इत्यक्षरयोजनामात्रमुक्तं, विशेषाग्नापस्तु सद्गुरोरवसेयः॥३॥
 अथ प्रतिज्ञातमेव गाथाद्वयमाह—

मूलम्—सुकुमालधीरसोमा । रत्तफिसणपडुरा सिरिनिकेया ॥

सीय कुसगहभीरू । जलथलनहमडणा तिन्नि ॥ ४ ॥

न चयति वीरलील । हाउ जइसुरहिमत्तपडिपुण्णा ॥

पकयगइदचदा । लोयणचकमियमुहाण ॥ ५ ॥ युग्मं ॥

व्याख्या—तवेत्यध्याहार्यं हे वीर ! पकजगजेंद्रचद्रा 'तिन्नत्ति'
 एते त्रयस्तव लोचनचक्रमितमुग्धाना लीला हातु न चयतीत्यन्वयः.
 पकज कमल, गजेंद्रो द्विपत्रेष्ट, चद्रश्चद्रमा, एषा द्वद्रः, पकजगजेंद्रच
 द्रास्ते तव सबधि लोचने नेत्रे, चक्रमित गगन, मुग्घ च वदन, एषा 'द्वद्र
 लोचनचक्रमितमुग्धानि तेषा ननु द्वद्रश्च प्राणितूर्धसेनागानामित्येकवदेव
 स्यात्तत्कथं बहुत्व ? सत्य, अधिकरणीतावत्त्वे चेति, एते त्रय, एतेषा
 त्रयाणामित्येवरूपे द्रव्यपरिमाणवगमे नैकवद्भाय, यथा दशदतोष्टा इति
 लीलाविलास, हातु जतर्भावितण्यर्थत्यास्याजितु न चयति न शक्नुवति,

प्राकृतसूत्रेण शकृत् शक्तौ इत्यस्य घातोः चय इत्यादेशः, न समर्था भवतीत्यर्थः. ते कीदृशाः ? यदि सुरभिमतप्रतिपूर्णाः, यदीति संभावनाया, सुरभि घ्राणतर्पणं पंकजं मत्तो गर्जितो हस्ती प्रतिपूर्णः षोडशकलावाश्चद्रः, ण्पा द्वंद्वः, अह स भावयामि, यद्येते पंकजादित्रयः सुरभिमतप्रतिपूर्णा भवति, तथापि भवतो लोचनचक्रमितमुखाना लीलां हातुं न शक्नुवतीत्यर्थः, तव लोचन पंकजादप्यधिकसुदर, तव गमन गजेंद्रगमनादप्यधिकतर सुदरं, तव मुख सपूर्णचंद्रादप्यधिकसुंदरमित्यर्थः, एव सर्वत्र विशेष्यविशेषणशब्दा यथासंख्य योज्याः, पुन कीदृशास्त्रयः ? सुकुमारधीरसौम्याः, सुकुमारं कोमल पंकज, धीरो धैर्यवान् गजः, 'धीरो ज्ञे धैर्यसयुते इति श्रीहेमसूरिः, सौम्यः कमनीयश्चद्रः, ततो द्वंद्वः पुन' कीदृशास्त्रयः ? रक्तकृष्णपांडुराः, रक्तं कमल, कृष्णो गजः, पांडुरः श्वेतश्चद्रः, ण्पां द्वंद्वः, पुनः कीदृशाः ! श्रीनिकेताः, श्रियः लक्ष्म्याः शोभाया वा निकेता, निकेतनि वसत्येप्स्यति निकेता गृहाणि, कितानि-वामे, निपूर्ः, अधिकरणे घञ, श्रीनिवासस्थानानीत्यर्थः. पुन कीदृशाः ? शीतांकुशग्रहभीरवः शीत हिम, अकुशः सृणि, ग्रहो राहुरूपरागो वा तनो द्वंद्व' तेभ्यो भीरवो भीताः, पुनः कीदृशा ? जलस्थलनभोमडनाः जल पानीय, स्थल स्वभावोन्नतभूमि, रूढ्या भूमिमात्र वा, नभो व्योम, ततो द्वंद्वः, तेषां मडनाः, अलकरिष्णव स्यादित्यनेकार्थमग्रह. एवविधा अपि परुजगजेंद्रचंद्रास्त्रयस्तव लोचनचक्रमणसुगानां शोभां न प्राप्नुवतीति तात्पर्यार्थ' अस्मिन् गाथाद्वये पादलेपजलज्वलनशस्त्रादिस्तभनगगनगमनाऽदृष्टीकरणदयोऽनेके आम्नाया. संति, ते तु सद्गुरुगम्या इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ अथोपसहारमाह—

मूलम्—एव वीरजिनिद्रो । अच्छरगणसंघसंक्षुड भयव ॥

पालित्तयमयमहिड । दिसउ खय सव्वदुरियाण ॥ ६ ॥

व्याख्या—वीरजिनेंद्र. श्रीवर्धमानस्वामी, ममेत्यध्याहार्यं, मम सर्वदुरिताना सकलपातकाना क्षय नाश दिगतु, घातूनामनेकार्थत्वात्करोत्वित्यर्थः किविशिष्टो वीरजिनेंद्रः ?

सुरवयूना गणः समुदायः, तस्य

सस्तुत.

यद्वा अप्सरोगणः सुरवधूसमूहः, सयश्चतुर्विधस्ताभ्या सस्तुत' २
 अप्सरस उपलक्षणत्यात्समग्रदेवदेव्य, गणः, साधुसमुदाय', सोऽह
 अर्शआदिभ्यञ्च् गणा' गणधरा इद्रभूत्यादय, सध. श्रमणदिश्र-
 विध, तैः सस्तुतः पुन कीदृशो वीरजिनेन्द्रः ? भगवान्, ज्ञाना-
 गुणयुक्तः, प्रथमगाथायामुक्तविशेषणत्वात्पुनरुक्तिदोषो, नाशकनी-
 उक्त च—सज्ञायज्ञाण तवो—सहेसु उवणसधुइपयाणेसु ॥ सतगुणकित्त
 णासु य । न हृति पुणरुत्तदोसाउ ॥ १ ॥ पुनः किंविशिषो वीरजिनेन्द्र ।
 एव पूर्वोक्तप्रकारेण पादलिप्तकमतिमहितः, लिप्तौ पादौ यस्य स पादलिप्त
 घाहिताग्न्यादिष्विति निष्ठातस्य परनिपातः, स्वार्थे कनि, पादलिप्तक
 प्राकृते तु कगचजतदपयवाप्रायोलुगिति सूत्रेण दकारलोपेऽकारस्य सव
 र्णदीर्घे पालित्तय इति भवति, तस्य या मतिर्बुद्धिस्तया महित. स्तुति-
 रूपपूजया पूजितः, अर्थात् कासद्रहगन्धीयपादलिप्तसूरिकृतमेतत्स्तोत्र-
 मित्यर्थ' ॥ ६ ॥ विधिपक्षगणाधीशा. । सूरयो भूरिसद्गुणाः ॥ श्रीअमर-
 सागरारया । विचरति महीतले ॥ १ ॥ तत्पक्षद्योतका. श्रीम-इयासागर-
 वाचका. ॥ सचारित्रगुणोपता । ज्ञानविज्ञानपेशला ॥ २ ॥ तेया प्रसाद-
 मासाद्य । पुण्यसागरवाचकै. ॥ महावीरस्तवस्येय । टीका विरचिता शुभा
 ॥ ३ ॥ नदामिभुनिभूसख्ये । वर्षे मास्याश्विने सिन ॥ दशम्या रविवारे
 च । बुरहानपुरे पुरे ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवस्यावचूरि. सपूर्णा
 ॥ श्रीरस्तु ॥

गाहा जुअल स्तुतिः आम्रायः
 पादलिप्तसूरी विरचित स्वोपज्ञस्तोत्राम्रायः

गाहा जूअलेणजिण । मयमोह विवज्जिअ जिअ कसायं ॥
 थोसासि तिसचाएण । तिण्णसग महानीर ॥ १ ॥

आम्नाय गा० गाऽअक ॥ हाहारितालो ॥ जूअलेणतार मुच्यते ॥ जिने
 पारद कथ भूत मयमोह विवर्जित जिआणगमल शिखिविष दोषत्रय-

जिनं धोसामिति स्तंभयामिकेन कृत्वा त्रिसंघातेन सिताऽभ्रक हरि-
योगेन तथौषध समवायेन जारणा स्वेदन विधिं
विधास्यामि । कथंभूतं जिनं तीर्णसगं मृतसप्तगुणवेगोत्तीर्ण । एतावता-
भेने दग्गिता अधुनापीतविधिमाह महावीरमहे ममक्षाकं हा हारकंवी
कृष्णाऽभ्रकरसमित्यर्थः शेषा औषध्या समाना ॥ १ ॥

सुकुमाल धीरसोम । रक्तकसिपंडुरानिकेयां ॥

सीअंकुस गहभीरु । जलथलमंडणातिणिण ॥ २ ॥

आम्नाय ॥ सुकु. नाइणिघार नाइ सोमासोमवल्ली त्रयं रत्तरक्त
दुग्धिका बहुफलि कचनिका 'पांडुरी देवदाल' सिशृगवेरकं पंचकरि
सधुरिगणी लांगलिका कुसग्रह अहिखरबीजानि भीरुसंकोइणि 'लज्जल
जलमडिका' जलच तद्रशी नभमडपिका थल अंगवती ॥ २ ॥

नचयंतिवीरलीलं । हाउंजे सुरहिमत्त पडिपुर्णणा ॥

पंकयगईगचदा । लोअणंचकम्मिअंसुहाणं ॥ ३ ॥

आम्नाय इदानी रोचनक्रमेण उदघात विधिमाहा पंकयगगनं । गयंद
मत्तनागं चदतार हेम वा त्रयमेपि रोचनमित्यर्थः तथाक्रामण । तथेदू-
घाटनमित्यर्थः ॥ ३ ॥

एवंवीरजिणिंदो । अचलर गणसंघसंथुओभयवं ॥

पालित्तयमइमहिओ । दिसउ खयं सव्वदुरिआणं ॥ ४ ॥

आम्नायः यदुकं तारहितारु सुवर्णदस्स सुवणिस्सुओ रेव नह चज्झई अलि
कामणु पेदुग्गाह एडनाई दवि करणहोई सराइ एव कृत्वा जिणिंदो
अचलरगण इति अम्ल वर्गः वरगणइति क्षारवर्गः गणःसंवइति समुदा-
येन एभिः सधुओ सस्तुत्य स्तमितेत्यर्थः भगवान् सेंद्र पुज्योभवति
कमकूद् भवति । पालियमयमहिओ महितः परिकर्भितः दिशतु क्षय
सर्वं दुरितानामित्यर्थः असणे इअ नतलो ननिम्मलोहो इ सद्दणा रहिओ
सारण रहिओ पसरं अकाभिओ नेअ कमइ लोहेस्तु ॥ ४ ॥ स्तोत्रार्थः

॥ इति श्रीपालित्तयकृत स्तोत्र. हेमकल्प स्वोपज्ञापचूरी समाप्तो ॥

संवत १९३३ परसे नकल किया

यद्वा अप्सरोगणः सुरययूसमूहः, सवध्वतुर्विधस्ताभ्या सस्तुनः यद्वा
 अप्सराम उपलक्षणत्वात्समग्रदेवदेव्य, गणाः, सावसमुदायः, सोऽस्थेर्षां,
 अर्शआदिभ्यञच् गणा' गणधरा इंद्रमूल्यादयः, सव. श्रमणदिध्वतु-
 र्विध', तैः सस्तुतः पुनः कविशो वीरजिनेन्द्रः ? भगवान्, ज्ञानादि-
 गुणयुक्तः, प्रथमगाथायामुक्तविशेषणत्वात्पुनरुक्तिदोषो नाशरुनीय'
 उक्त च—सज्ञायज्ञाण तयो—सहेसु उगणस्युहपयाणेसु ॥ सतगुणकित्त-
 णासु य । न हुति पुणरुक्तदोसाउ ॥ १ ॥ पुनः किंविशिषो वीरजिनेन्द्रः ?
 एव पूर्वोक्तप्रकारेण पादलितकमतिमहितः, लिप्तौ पादौ यम्य स पादलित,
 चाहिताग्न्यादिष्विति निष्ठांतस्य परनिपातः, स्याथे कनि, पादलितकः
 प्राकृते तु कगचजतदपयवाप्रायोलुगिति सूत्रेण दकारलोपेऽकारस्य सव-
 र्णदीर्घे पालित्तय इति भवति, तस्य या मतिर्बुद्धिस्तया मरितः स्तुति
 रूपपूजया पूजित, अर्थात् कासद्रहगच्छीयपादलितसूरिकृतमेतत्स्तोत्र-
 मित्यर्थः ॥ ६ ॥ विधिपक्षगणाधीनाः । सूरयो भूरिसद्गुणाः ॥ श्रीअमर-
 सागराद्या । विचरति महीतले ॥ १ ॥ तत्पक्षधोतका श्रीम-इयासागर-
 वाचका ॥ सघारिभ्रगुणोपता । ज्ञानविज्ञानपेशला ॥ २ ॥ तेषा प्रसाद-
 मासाद्य । पुण्यसागरवाचकै ॥ महावीरस्तयम्येय । टीका विरचिता शुभा
 ॥ ३ ॥ नदाग्निमुनिभूसख्ये । वर्षे मास्याधिने सिन ॥ दशम्या रविशारे
 च । गुरहानपुरे पुरे ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवस्यायचूरिः सपूर्णा
 ॥ श्रीरस्तु ॥

गाहा जुअल रतुतिः आम्रायः

पादलिप्तसूरी विरचित स्तोत्रस्तोत्राम्रायः

गाहा जूअलेणजिण । मयमोह विवज्जिअ जिअ कसायं ॥

थोसामि तिसघाएण । तिण्णसग महावीर ॥ १ ॥

आम्नाय गा० गाऽभ्रकं ॥ एहारिताली ॥ जूअलेणतारं मुध्यते ॥ जिर्न
 २ यथ भूत मयमोह विवर्जित जिआणगमल शिषिविष दोषघ्न-

वर्जितं थोसामिति स्तभयामिकेन कृत्वा त्रिसंघातेन सिताऽभ्रक हरि-
तालंकंनारत्रयाणां योगेन तथौषध समवायेन जारणा स्वेदन विधिं
विधास्यामि । कथभूत जिन तीर्णसगं मृतसप्तगुणवंगोतीर्ण । एतावता-
श्चेते दर्शिता अधुनापीनविधिमाह महाधीरमहे ममक्षाक हा हारकंवी
कृष्णाऽभ्रकंसमित्यर्थः शोषा औषध्या समाना ॥ १ ॥

सुकुमाल धीरसोम । रक्तसिपडुरानिकेया ॥

सीअकुस गहभीरु । जलथलमंडणातिणिण ॥ २ ॥

आम्नाय ॥ सुकु नाइणिघार नाइ सोमासोमवल्ली त्रयं रत्तरत्त
दुग्धिका बहुफल कचनिका ' पाइरी देवदाल ' सिद्धगवेरकं पचकरि
लघुरिगणी लांगलिका कुसग्रह अहिखरयीजानि भीरुसकोइणि ' लज्जल
जलमडिका ' जलच ताद्रशी नभमडपिका थल अगवती ॥ २ ॥

नचयतिवीरलीलं । हाउंजे सुरहिमत्त पडिपुण्णा ॥

पंकयगईगचदा । लोअणंचंकाम्मिअंमुहाणं ॥ ३ ॥

आम्नाय इदानीं रोचनक्रमेण उद्घात विधिमाहा पकयगगनं । गयंद
मत्तनागं चदतार हेमं वा त्रयमपि रोचनमित्यर्थः तथाक्रामण । तथोद्-
घाटनमित्यर्थ ॥ ३ ॥

एवंवीरजिणिंदो । अच्छरं गणसंघसंथुओभयवं ॥

पालित्तयमइमहिओ । दिसउ खय सव्वदुरिआणं ॥ ४ ॥

आम्नायः यदुक्त तारहितारु सुवर्णदस्त सुवणिस्तुओ रेव नहू धज्जाई अर्लि
कामणु बेदुग्घाड एडनाई दवि करणहोई सराइ एव कृत्वा जिणिंदो
अच्छरगण इति अम्ल वगेः वरगणइति क्षारवर्गः गणःसवइति समुदा-
येन एभिः सथुओ सस्तुत्प स्तभितेत्यर्थः भगवान् सेंद्र पुज्योभवति
कमकृद् भवति । पालियमयमहिओ महितः परिकर्भितः दिशतु थयं
सर्वं दुरितानामित्यर्थः असणे इअ नतलोननिम्मलोहो इ सहणा रहिओ
सारण रहिओ पसर अकाभिओ नेअ कमइ लोहेस्तु ॥ ४ ॥ स्तोत्रार्थः

॥ इति श्रीपालित्तयकृत स्तोत्र हेमकल्प स्वोपज्ञावचूरी समाप्तो ॥

सवत १६६३ परसे नकल किया

परिशिष्ट नयर ३

—: उग्रवीर कल्प :—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
 उग्रवीर महाविष्णु । ज्वलतं सर्वतोमुखम् ।
 १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२
 नृसिंह भीषणभद्र । मृत्यु मृत्यु नमाम्यहम् ॥ १ ॥

१ शिर	९ द भुजा	१७ द जंघ	२५ गुदा
२ ललाट	१० वा भुजा	१८ वा जघ	२६ इद्रिय
३ द नेत्र	११ द पार्श्व	१९ द जानु	२७ पृष्ठ
४ वा नेत्र	१२ वा पार्श्व	२० वा जानु	२८ गला
५ द कर्ण	१३ उदर	२१ द टाग	२९ गर्दन
६ वा कर्ण	१४ नाभि	२२ वा टाग	३० दंत
७ द स्कंध	१५ द कटि	२३ द पग	३१ जिह्वा
८ वा स्कंध	१६ वा कटि	२४ वा पग	३२ दाढ

इस मन्त्रका जप १२५००० सवालाव कम अधिक नहीं जपना प्रथम तूपे ग्रहणके दिन जपना जितना जपा जावे उतना जाप करे फिर सवालक्ष पुरा करे बीचमे नागा [अतर] न करे नहि तो मन्त्र चला जायगा पुरा करे सिद्ध हुया जबतक सवालक्ष न होये तबतक लोहकी खीली मन्त्रके अक्षरके उपर ३२ अक्षरका एक नथर निकालकर खीली ठोकदे दरद नाश कार्य काले दरदयालेंको २१ बार पढकर पानी देवे दरद नाश हो जायगा प्रयोगमे सदा जाप करना सवालक्ष पुरा न होय तबतक १००० हजार जाप वशीकरणमें मन्त्रनाम मन्त्र सपूट करना सम्मोहन [सामने] करना नाम-मन्त्रनाम, लक्ष्मीप्राप्ति श्रीमन्त्र श्री,

उच्चाटन	नामनाममन्त्र	राजवश्ये	ह्रीं मंत्र ह्रीं
विद्वेषण	मन्त्र मन्त्रनाम	शत्रुदमन	ह्रीं मन्त्र ह्रीं
आकर्षण	मन्त्रनाम मन्त्रनाममन्त्र	भूतोत्साधन	ॐ मंत्र ॐ
स्तम्भण	नाममन्त्रनाममन्त्र	वाधानिवारण	शौं मंत्र शौं

जब मंत्रका जाप प्रारंभ करने बैठे पहिले ईस मंत्रको पढकर फिर मंत्र सुरु करें इसमें विधि लिखी है वैसे करलेवे आसन बिछाकर हाथमुह धोकर स्नानकर घोंटी सफेद धारणकरे अस्यमंत्रस्य ब्रह्माक्षरी गायत्री छंदः महानृसिंहो देवता क्षौं बीज श्रीशक्तिः ह्रीं कीलकं नृसिंह-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

क्षौं अगुष्ठाभ्यांनमः	क्षौं तर्जनीभ्यांनमः
क्षूं मध्यमाभ्यांनमः	क्षौं अनामिकाभ्यांनमः
क्षौं कनिष्ठभ्यांनमः	क्षः करतलपृष्ठाभ्यांनमः
क्षौं हृदयाय नमः	क्षौं शिरसे स्वाहा ।
क्षू शिखायौपट्	क्षै कवचाय हू
क्षौं नेत्राय यौपट्	क्षः अस्त्रायफट् ध्यान

रक्त वर्णं महाकायं सहस्रादित्यवर्चसम् ।

अष्ट बाहु शस्त्रधर सिंहानन हरिभजे ॥

लं पृथ्वीतत्वंगंधसमर्पयामिनमः ह आकाशतत्त्वपुष्पंः यं वायुतत्त्वंधूप
र अग्नितत्त्वंदीपं चं जलतत्वं नैवेद्यं

फिर मंत्र ३२ अक्षरका उग्रवीरका जपना प्रारंभ करवेना चाहिए ।

मंध (चंदनलाल) पुष्प (लालकनेर) धूप (गूगल) दीप (तिलका-
तेल) नैवेद्य (गुडगेहु)

किसी जगापर मंत्र प्रारंभ करना होवे तब तीन मंत्रपढकर फिर मंत्र पढना दिग्बधन ॐ सहस्रारे हूँफुद् तीनवार पढकर अपने चारोतर्फ अक्षत या सफेद सरसों छाडके, स्थानशुद्धि ॐ पवित्र वज्रमूर्ति ॐ फट् तीन बार पढके चारोतर्फ जल छानना, आसन शुद्धि ॐ आसू रेखे वज्ररेखे हं फट् बायें हातसे पकडकर आसनपर १० बारपडे अनुभुतं.

दादाजी श्री जिनदत्त सूरीश्वर आम्नाय

—वाचन तोला पावरती. हेम कल्प—

हरताल मारण वि. प्रथम हरताल सोधन वि । हरताल बगदादी पत्र
पईसा दो भार आणजे, कली चुनो असिल सेर ८ आणीजे, कोरा कुडा
मारि चुनो राणजे, हरताल कपडा रा तेरा पुड मारि बाधी

गठडी कीजे चुनाका कुडामाहि गठटी हरतालकी मेलीजे उपर दररांज पाणी सिंचीजे चुनो पाणीसु नीलो राखीजे, इम मास २ सिंचीजे आपरी किसीकी छाया उपर पडन न दीजे एकात राखीजे, किनही रो पग फेरो राखीजे नहीं मास दो पीछे काढीजे, पिछे दीन ३ धीकृआर रा रसमें खरल कीजे दिन ३ काला भागरा रा रसमें खरल कीजे, दिन ३ अर्क दुधमें खरल कीजे, दिन ३ धोहर काटाली रा रसमें खरल कीजे सर्व दीन १२ खरल कीजे पछे टिकडी बाधिजे, पछे सेर पाच पिपलरी राख हाडीमे घाल बिचमे टिकडी मेल पचाईजे अग्नी प्रहर ३२ दिजे, आपरी छाया उपर पडन न दीजे अग्नी शीतल होय, तब काढीजे सफेद बर्फ होय असल हरताल निपजे निसदेह वात छे इस्ट देवतारी पुजा कीजे, पछे हरताल परीक्षा -चावन तोलाने पाच रती चावन तोला ताबो गालने पाच रती माह मेलीजे, कचन होवे सही सत्य छई पिछे खानेकी परीक्षा नामदनु दिजे, तीन दिन तीन चावल दिजे सेर ३२ दुध तोलने खीर कर उपर पाईजे अख्नी २१ यरोनर सुवाणीजे पण अख्नी द्वार छुटे, पण आप धाधे नहीं, खलास मोडो हुवई मीसरी पईसा ११ भार उपर खवाडीजे तरा सितल हुवे अनाज सेर ७ पक्षो खाय, नामद होय सो पक्षो मदे हुवई अख्नी विना बालाने दीजे नहीं, दीजे तो इद्री भारी संचीत उठे लोही पडे । निपट मर्दमी हुवे तिनने चावल एक दीजे महाकामी होवे । कोढवालेको चावल तीन दीजे, उपर रोगी चिणारी बिलावे कोढ जावे ग्याटो खारो न खावे । घोला चाठा बालाने चावल तीन दीजे, उपर चावल मुगारी खीचडी चाठा सफेद जाय । पाडुरोग वालेको चावल तीन दीजे चावल साठी जीमाईजे पाडुरोग जाय । पेट भार बालाको चावल तीन दीजे उपर घुली गहुरी दीजे, दुध न दीजे पतासा दीजे पेटभार जाय झोलो लागो होय तिनने चार दिन चार दीजे उपर उडदारी ने चावलारी खीचडी दीजे, सीताग झोलो सर्व समाध हुवे । अख्नी सुहागनको नहीं दीजे, जो रोगरे चांस्ते देवे तो रोग जावे पिण तिनने सतान हुवे नहीं तिनसु अख्नी ने नहीं दीजे । उनने काम घणो न्यापे । जीणने मिरगी बालाने दिजे दीन तीन नागरवेलके पत्रमें दिजे मिरगी जाय प्यारा प्याटो टालीजे गहुरो लपटोने दुध दीजे मिरगी ५५ बालाने दोशरती चार दिन दिजे उपर चिणारी रोटी लुखी खीन्नाईजे